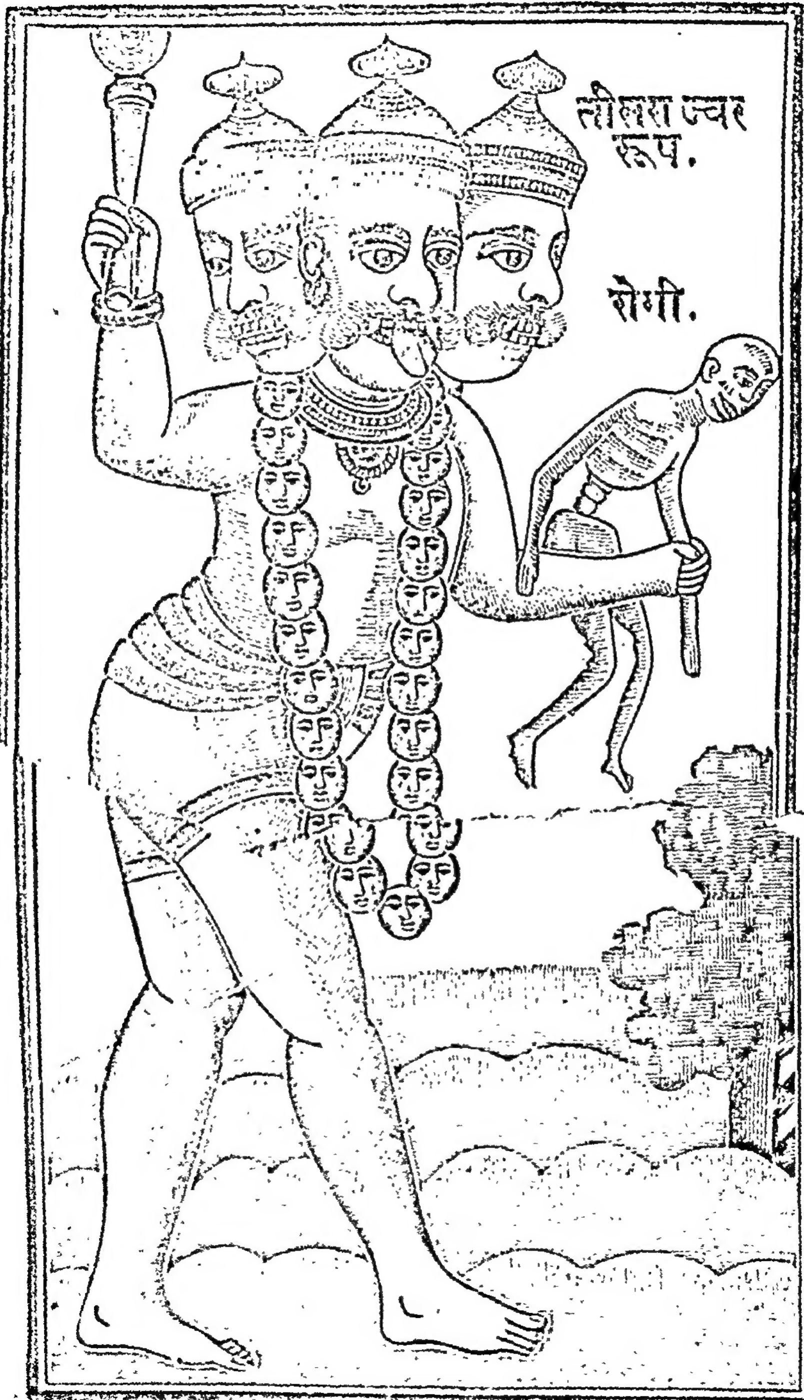

तीसरा ज्वर
रूप.
रोगी.

श्रीः ।

वैद्यक रसराजमहोदधि भाषा ।

प्रथमभाग ।

जिसमें

यूनानी हिकमत यूनानी दवा फकीरोंकी जड़ी-बूटी और सन्तोंकी पुस्तकोंका संग्रह है ।

जिसको

मुन्शीभगवानप्रसादके शिष्य भगतभगवानदास वल्द सुवराज गाँव चकवढवल निवासी जिलअ जौनपुरने विरचित किया ।

वही

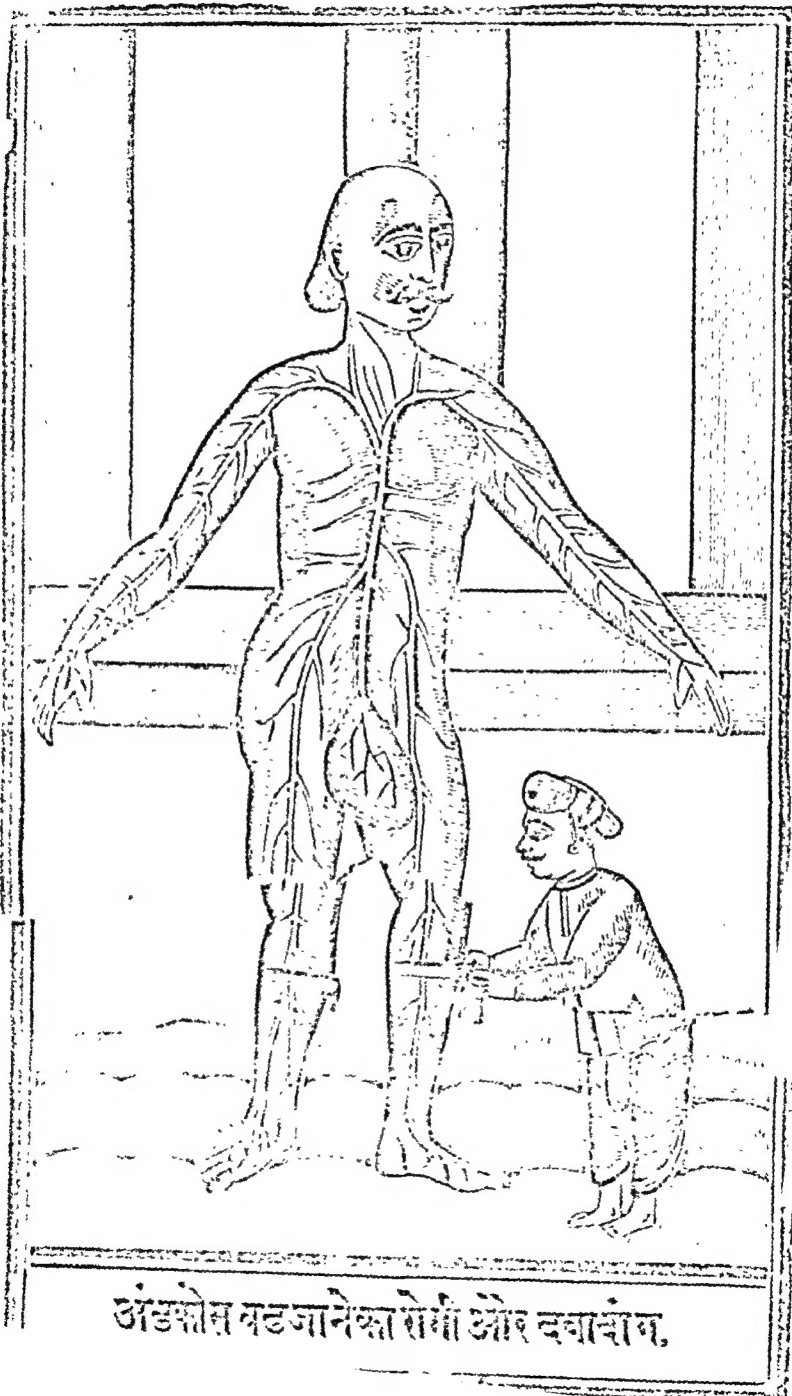
खेमराज श्रीकृष्णदासने

मुंबई

निज "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखानामें

छापकर प्रगट किया ।

संवत् १९७३ शके. १८३८



अंडकोश बढजानेका रोगी और दवासाज,

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन, निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया ।

जो वैद्यकहै निगमके, भाषा वैद्यकभूप ॥
गणपतिको करिदंडवत, वैद्यक रचों अनूप॥

अथ प्रथमरोगविचार.

अनेक प्रकारकी पीड़ाओंको रोग कहतेहैं. रोग दो प्रकारकेहैं. एक कायिक दूसरा मानसिक कायामें रहे सो कायिक, उसका नाम व्याधिहै. मनमें रहै उसका नाम आधिहै सो ये दोनों शरीरमें किसी प्रकारके कुपथ्यसे वात पित्त कफरूप दोष और मिथ्या आहार वा मिथ्या विहारके होनेसे सब रोगोंको उत्पन्न करतेहैं और यह वात, पित्त, कफ कई प्रकारके कुपथ्यसे बिगड़कर देहको बिगाड़तेहैं. और यही अच्छेप्रकार पथ्यके सेवनसे शरीरको पुष्ट करतेहैं.

अथ सर्वरोगोंकी परीक्षा.

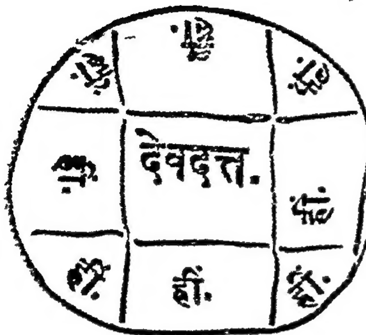
नाडीपरीक्षा, मूत्रपरीक्षा, और मल शरीर या शकल व नेत्र शिरसे पैरतक येरोगीके परीक्षा करै.

अथ नाडीपरीक्षा.

पुरुष रोगी होय तो उसके दहिने हाथकी और स्त्रीरोगिनी होय तो उसके बायें हाथकी नाड़ीदेखै परंतु वैद्यको उचित है कि एकाग्र चित्त औरप्रसन्न-मन होकर विचारपूर्वक रोगीके हाथको हिलने न


भगत
भगवानदास

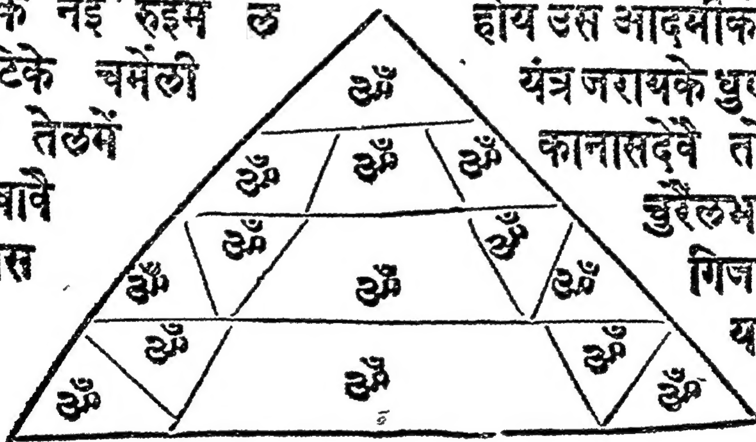
यंत्र २४



यह यंत्र नजरके वास्ते है कागजपर अष्टगंधसे लिखकर गलेमें बाँधै तो नजर दूर होय.

यंत्र २५

यह यंत्र कागजपर लिखके नई रुईमें लपेटिके चमेलीके तेलमें डुबावे जिस आदमी के चुडैल लगी होय उस आदमीको यंत्र जरायके धुआ कानासदेवै तो चुडैल भागिजाय.

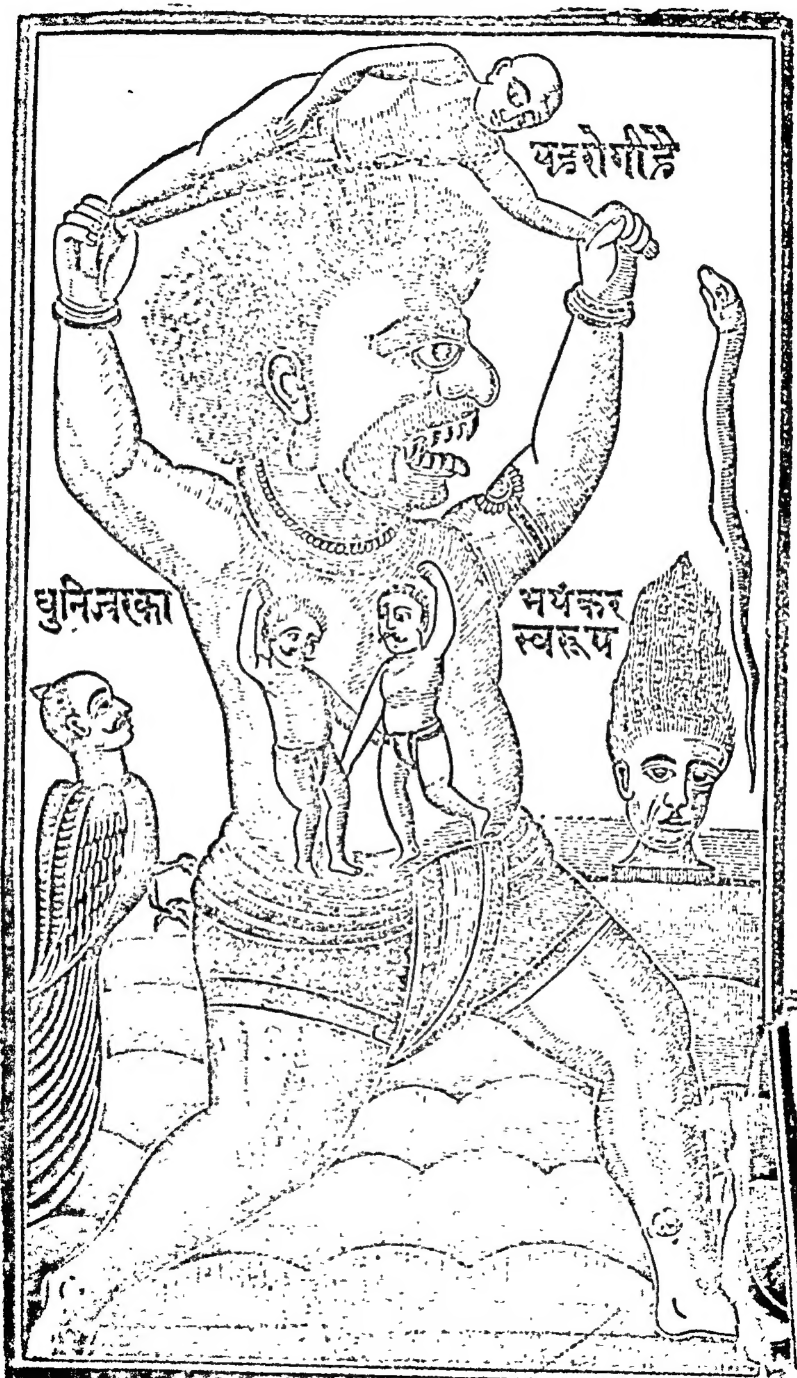


यंत्र २६

चक्रव्यूह.



यह चक्रव्यूह कागजपर लिखके जो स्त्रीके लडका होनेका दिन पूरा भया होवे और वह स्त्री कष्टमें होय


यहरोगीहै
धुनिज्वरका
भयंकर
स्वरूप

एक सेर मिश्री इन दोनोंकी चासनी करले और चासनीमें आँवरा डालदे फिर दवा केवडाका अर्क एक तोला, गुलाबका अर्क एक तोला, कस्तूरी एक तोला, अगर एक तोला, सब कूट कपड छान करके चासनीमें मिला पन्द्रह दिन रक्खे पीछे खानेको देवै खुराक एक तोला इडके मुरब्बासे आँवराके मुरब्बेका गुण ज्यादा है सब रोगोंपर दे.

अथ गाजरका मुरब्बा.

अच्छा गाजर चार सेर लेकर उसका छाल छील कर दूर करै फिर छोटे २ कतरा कर एक दिन पानीमें भिगोदे तब पानीसे निकाल दो सेर मधुमें चुरावै फिर दो सेर मधु लेवे दोनो मधुकी चासनी करै उस चासनीमें गाजर छोड देवै फिर सोंठि बालछड मिरच पड़ी इलायची रूमीमस्तगी पीपरि कंफरकेबीज यह सब दवा एक २ तोला ले कपडछान करके मुरब्बामें मिलाय देवै आठ दिन पीछे खुराक डेढ तोलादे मनीको बढाताहै छाती व कमरके दर्दको दूर करताहै मन प्रसन्न करता है कलेजेकी गर्मीको शान्त करताहै सब रोगोंको फायदा करता है.

अथ बचका मुरब्बा.

अच्छी बच दो सेर लेके पानीमें एक रात एक दिन


रोगी
दूसराज्वर
रूप

तिसे पूजा करे और सोना दानदे तो श्वास शांति होय पीछे दवा करे.

अथ श्वासका लक्षण.

जब मनुष्य श्वाससे दुःखी होय तबमस्तबैलकी नाईं लेवे २ श्वास निरंतर लेय संज्ञा और ज्ञान नष्ट होजाय, नेत्र तरतराट करें और श्वास लेते मुँह कट व फट जाय, बोला नहीं जावे, गरीबसा होजाय और जिसका स्वर बहुतही दूर सुनाई देय तो वैद्यको चाहिये कि इस श्वास वाले रोगीको असाध्य जान दवा न करै (पुनः) सर्व शरीरमें पीड़ा होय और पाँचों पवनोंसे पीडित मनुष्य ठंढी २ श्वास लेवै अथवा दुःखित हो श्वास नहींले अफाराहो शरीरका वर्ण और होजाय तो असाध्य जानों.

अथ खांसी श्वास की दवा.

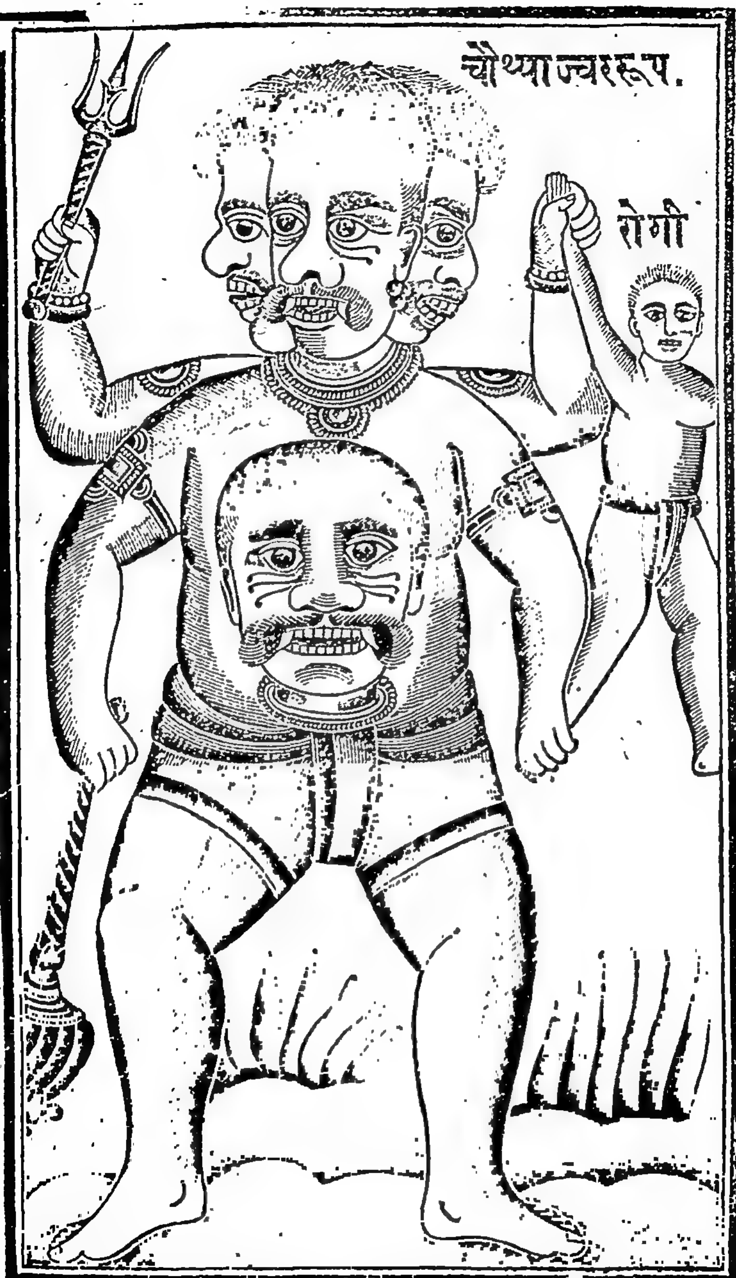
बंग १ टंक पीपरि २ टंक हड़का बोकला ३ टंक बहेड़ेका बोकला ४ टंक रूस की पाती ५ टंक भारंगी ६ टंक इन सबको कूट कपरछान करि बबूलके क्वाथ में २ पुट दे पीछे शहद में २ पुट दे खल करि झरबेरके बराबर गोली बाँधे १ गोली खाय तो श्वास खांसी क्षयी सब दूर होय.

तेल बनानेकी विधि.

मदार, धतूर, थूहर, सेहुंड, मेहँदी, अडूसकी पत्ती एरंडकी जड, खेवडीकी पत्ती, सहिजन सबका रस पाव पावभर, सोंठि, पीपल, रसवत, अजमोदा, कुलि-जन, कलियारी, सोवा, पीपलामूल, चिरैता, सब दो दो तोला ले मेथी बारह तोला लहसुन बीस तोला इन सब दवाइयोंका तीनसेर पानीमें जोशदे जब आधा पानी रहे उपरोक्त रस डारिके तिलका तेल आधा सेर, कडू तेल एक सेर, रेंडीका तेल आधासेर सब अर्क डालके मधुरी आंचसे चुरावै जब पानी जल जाय तब बीस भेलावां छोडै जब भेलावां भी जल जाय तब तेल ठंढाकर सीसीमें रखदे बात, जोडा, साना, गठिया इत्यादि सब तरहका दर्द मालिश करनेसे जाय.

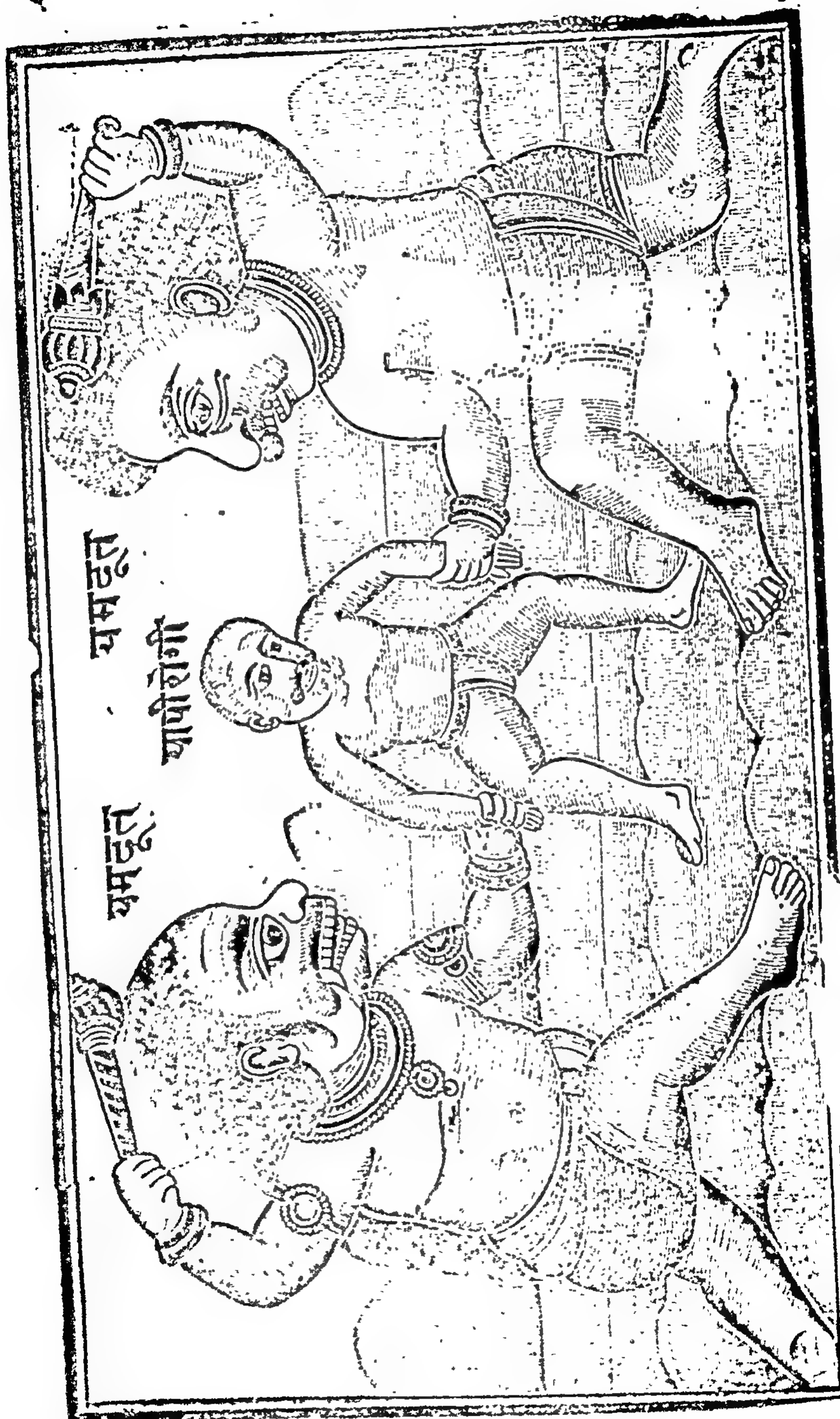
अथ जीवनारायण तेल.

दस सेर तिलका तेल, दस सेर कडू तेल, दससेर बकरीका दूध, दस सेर गायका दूध, शतावरीका रस दससेर, हड, आँवला, गिलोय, बेलका मगज, दोनों गोखरू, भटकटइआ, जीवंती, मुलहठी, दोनों अरंड, महामुंडी, मुंडी, जायफल, निसवत, इन्द्रायन, चिरायता नीम, बकाइन, मैनफल, सम्भालू, बरियारी, रासना, सहिजन, गदापुरैना, मडुकी गुलसकरी, फफई, गंध-प्रसारन, असगंध, कटसरैया, कुश, करंज, खैर, चन्दन, बच, बिजेसार, रेंड, बरुना, दोनो अडूस, बच बड़ी,


चौथ्याज्वररूप.
रोगी

दशमूलासव.

दशमूल २० तोला, पुस्करमूल १०० तोला हड़ें ८० तोला, आंवरा १२८ तोला, चित्र १०० तोला, धमासा ५० तोला, गुरुची ४०० तोला, बिसाला २० तोला, खैरसार ३२ तोला, बिजौरा १६ तोला, मंजिष्ठ ४ तोला, मुलहटी ४ तोला, वायविडंग ४ तोला, चवक ४ तोला, लोध ४ तोला, जीवक ४ तोला, ऋषभक ४ तोला, मेदा ४ तोला, महामेद ४ तोला, ऋद्धि ४ तोला, वृद्धि ४ तोला, कंकोल ४ तोला, क्षीरकाकोली ४ तोला, पीपरि ४ तोला, जीरा ४ तोला, गजपीपरि ४ तोला, चीकनी ४ तोला पद्माख ४ तोला, कचूर ४ तोला, एला ४ तोला हर्रे काबुली ४ तोला, जटामासी ४ तोला, पित्तपापडा ४ तोला, नागकेसरि ४ तोला, निसोत ४ तोला, हरदी ४ तोला, रास्ना ४ तोला, मेढासींगी ४ तोला, सोंठि ४ तोला, सतावरि ४ तोला, इन्द्रयव ४ तोला, नागरमोथा ४ तोला, सब दवाका चौगुने पानीमें काढ़ा बनावे जब पानी आधा रहे तो पीछे दाख २४० तोला, धौकेफूल १२० तोला, गुड १६ तोला, शहद १२८ तोला मिलायके घीके चीकने बरतनमें रखदे पहले जटामासी मिर्ची दोनोंके चूर्णका धूप देवै पीछे पीपरि ८ तोला, चन्दन ८ तोला, बाला ८ तोला, जायफल ८ तोला, लौंग ८ तोला, दालचीनी ८ तोला, इलायची ८ तोला,


यमदूत
पापीरोगी
यमदूत

कुष्ठके खानेकी दवा.

सेहुँडका दूध आधासेर, भूंजाचना पांच तोला एकमें मिलाय खल करै फिर चनाबराबर गोली बांधै कुष्ठवाले रोगीका बल देखि दे तो गलितकुष्ठ दूर होय इसपर खटाई और सब परहेज रक्खै कुछदिन सेवै तो आराम होय.

कुष्ठकी दूसरी दवा.

निंब, कडू परवर, कटैली, गिलोय, बांसा सब चालीस चालीस तोले ले कूटिके एक द्रोण पानीमें चुरावै जब चतुर्थांश काढ़ा रहिजाय तो घृत ६४ तोले त्रिफलाका काढ़ा ६४ तोले मिलायके पकावै घृतको सिद्धकर खानेसे कुष्ठ दूर होय और ८० प्रकारका वात रोग ४० प्रकारका पित्तरोग २० प्रकारका कफ-रोग दुष्टव्रण कृमि बवासीर पाँचों खांसी इन्होंको नाशै.

अथ त्रिफलादि मोदक.

त्रिफलाका चूर्ण ६० तोले, बायविडंग २८ तोले, लोहभस्म ८ तोले, बाकुची ४० तोले, शिलाजीत २ तोले, गूगुल ८ तोले पुष्करमूल ४ तोले, निसोत १ तोला, मिर्च, पीपल, सुंठी, दालचीनी, तमालपत्र केसर, नागरमोथा ये सब दवा दो दो तोले लेय सब औषधोंके समान मिश्री मिलाय ४ तोलेके लड्डू बनाय प्रभातसमय १ लड्डू रोज खाय तो मनोवांछित भोजन करै १८ प्रकारके कुष्ठ, तिल्ली, गुल्म, भगंदर ८० प्रका-


यमदूत
यमदूत
धर्मीरोगी

मधुके साथ इन्द्रियपर लेप करै तो औरत बहुत प्यार करे शंखाहोलीके साथ खाय तो पिंड रोग जाय-

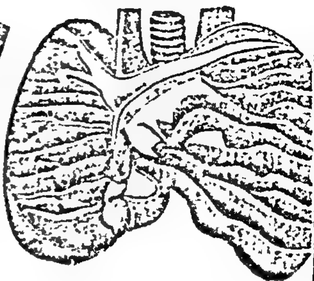
छोहाराके बीजके चूरणके साथ गोली खाय तो बाँझिनीके गर्भ रहै ब्राह्मीरस दमयंती रसके साथ गोली खाय तो जलंधर रोग जाय.

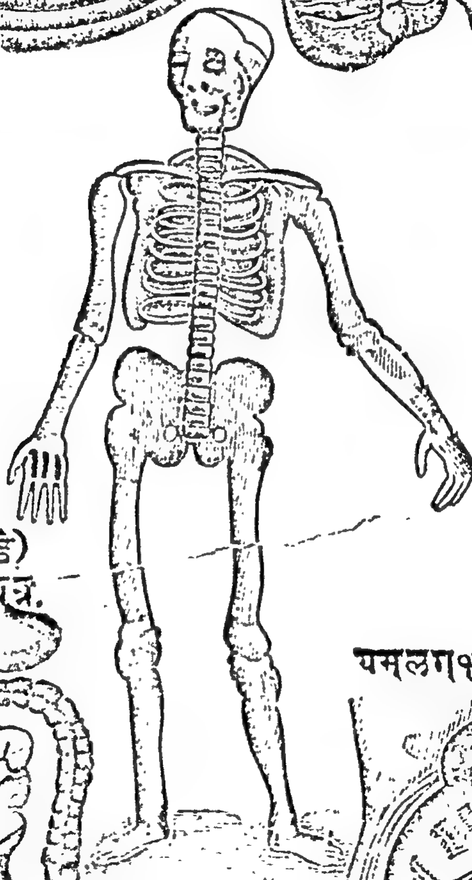
नकछींकनी और निबोरा के रसके साथ गोली खाय तो पेटका वायु तुर्त दूर होइजाय.

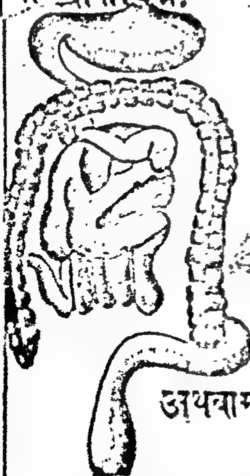
पीपल व हींगके साथ गोली खाय तो बघेशी रोग जाय गंगेरूके रसके साथ गोली खाय तो विन्दुकुष्ठादि जाय,छांछके साथ गोली खाय तो शरीरका सूजन जाय सोंठिके चूरणके साथ गोली खाय तो हथरस रोग जाय जावित्रीके साथ गोली खाय तो बाँझिनीके पुत्र होय.

ऊँटकटेरीके साथ गोली खाय तो पेटकी अग्निको तुर्त बुझावै निबोरीके साथ गोली खाय तो दांतका चबाल बन्द होय,सफेद गुंजामें घिसिके आंखोंमें लगावै तो आंखोंका रोग दूर होय, निबोरके साथ गोलीको घिसिके शरीर पर लगावै तो भूत प्रेत भागि जायँ. नीबीके फूलके साथ यह गोली खाय तो सांपका विष दूर होय,-नीबीके पत्रके साथ गोली खाय तो सब ज्वर जाय पीपरके साथ गोली खाय तो अवलेह रोग जाय; काला नमकके साथ गोली खाय तो पेटका मल दूर होय भंगराके रसके साथ यह गोली खाय तो सन्निपात जाय. जीरा मिश्रीके साथ गोली खाय तो शरीरको पुष्ट


गर्भाशयका चित्र.


फुप्फुस (फेंफड)


नरकंकाल
अथवामनुष्यअस्थिपंजर.


अंत्र(अंतडे)
प्रदर्शकचित्र.


यमलगर्भकाचित्र

कलौंजी सौंफ जायफल कचूर दालचीनी तमालपत्र नागरमोथा ये सब दवा चार चार तोला और सोंठि छः तोला मिर्चे छः तोले इन्होंका चूरणकर मिलाय पाक तैयार करै ये मेथीपाक चार तोले अग्नि बलको विचार खाय तो आमवात और सब वातरोगोंको शांति करै और विषमज्वरको पांडु रोगको कामलाको उन्मादको अपस्मारको प्रमेहको वा रक्तपित्तको वा अम्लपित्तको शिरपीड़ाको नासिका रोगको नेत्ररोगको प्रदररोगको सूतिका रोगको यह सब रोगको हरै संशय नहीं यह शरीरको पुष्ट करै और बलवीर्यको बढ़ावे सम्पूर्ण रोगोंको हरै पथ्यसे रहै;

जुलाब अमीरोंका ॥

चावल ९ टंक शक्कर ९ टंक गुलाबके फूल ९ टंक दूध आधासेर ये सब एकमें मिलाय खीर बनावे तब ९ टंक घी डालके खाय तो जितना ठंढा पानी पीवै तितना जुलाब होवै और गर्म पानी पीनेसे बन्द होइजाय इसके बराबर दूसरा जुलाब नहीं ॥

इति श्रीभगतभगवानदास विरचित बोडाचोली गोरखमुंडीकलपशुक्रपाक मेथीपाक जुलाबादिवर्णनं नाम उत्तर भाग समाप्तम् ॥

अथ लकवाकी दवा.

सवा ३। तोले सनके बीज शहदमें मिलाय सबेरे खायतो लकवा १५ दिनमें नाश होय.

जलंधर रोगी.



त्याग करे रोके नहीं जो रोके तो मलकी गरमी से वात पित्त मिल कर तमाम शरीर में नाना प्रकार के रोग पैदा करतेहैं मनुष्य मलको बराबर त्याग करे और पेशाव इसी तरहसे करे रोके नहीं पेशाव रोकनेसे सुजाक परमा पैदा होता है सोइसे बचाये रहना.

अथ पानीका बयान.

पानी भोजनमें कमती पीवे भोजन के दो घरी पीछे पीवे गरम शरद की प्रकृति समझ कर पीवे दरियाव का पानी सबसे अच्छा पीछे कूए का पानी अच्छा है और तालपोखरी का पानी रोग पैदा करता है मैथुनमें पानी विकार है कुस्ती मेहनति में विकार है ठंढे पानी से गरम पानी का स्नान करना हित है

अथ शीतपित्तका बयान.

शीतपित्त महारोगहै क्षणमें निकलता है क्षणमें समात है दवासे दूर होता है लेकिन उसकी जड़ नहीं जाती मरने तक रहतीहै कभी शीतमें निकलता है कभी गरमीमें निकलता है शरीरका खून सब बिगाड़ देता है इसके दूर करनेकी दवा लिखते हैं परमेश्वरकी कृपासे रोगी निरोग होगा निश्चयसे यही दवा करना भूलना नहीं.

अथ शीतपित्तकी मालिश.

सज्जीखार सेंधानमक करुवातेल मिलायके शरीर

अथ अच्छीरीति सिखनेका बयान.

मनुष्योंको चाहियेकि अपने लड़केको बाल अवस्थामें अच्छी रीतिसे रखना औ सिखाना पढाना और बालकको चाहिये कि माता पिताकी आज्ञा माने और पढ़नेमें दिल लगावै और सफाईसे रहे और अपनी जिन्दगी गुजर करनेके वास्ते वह पेशा करे जो बाप दादा करते आये हैं फिर उपरांत इसके सादी करै और बालपनका सादी होना पीछे तकलीफ देता है क्योंकर कि कुछ विद्या नहीं सीखा काम धंधा नहीं सीखा इससे उनको शोच फिक्र करके बहुत तकलीफ होती है और उसी सोच फिकरसे नाना प्रकारके रोग पैदा होते हैं सो इस रोगको हमने अनेक तरहका इलाज अजमाया पर इसको कोई दवा काम नहीं किया सिवाय परमेश्वरकी कृपासे दूसरी दवा काम नहीं आती और आदमियोंको चाहिये कि छोटेपनहीसे भगवा-नूका ध्यान करैं और दान पुण्य यथाशक्ति करैं और बुरे कामको त्याग करैं अच्छा काम करैं और अच्छे आदमीकी संगति करैं बुरेसे दूर रहैं—अच्छा आदमी वह जो अपनी नीतिसे रहै और दूसरेका उपकार करै और बुरा आदमी चोर ज्वारी लबार बात छुटक उचक्का इनकी संगति करनेसे अनेक तरहकी तकलीफ उठानी पड़तीहै हमने इसको अच्छी तरहसे अजमायाहै



कालज्वराचें भयंकर स्वरूप.



श्रीविठलनाथजी महाराज.

श्रीः ।

अथानुक्रमणिका प्रारंभः ।

विषय.	पृष्ठ.

इति अनुक्रमणिका समाप्ता ।

भूमिका ।



कोटि कोटि दंडवतहै उस निर्गुण निराकार पूरण ब्रह्म सच्चिदानंदघन अवधविहारी गोवर्द्धनधारी श्याम सुंदर श्रीमुरारी मोरमुकुटधारीको जिसकी अपार महिमाको शारदा, ब्रह्मा, शिव, वेद, पुराण कोई बयान नहीं कर सकता। जिसके चरित्र को गायके कैसाही अधम और पातकी होवे सोभी इस अपार संसारके भवसागरसे पार उतराहै यह औषधि रूपी "रसराजमहोदधि" वैद्यक ग्रंथ पांचखंड प्रगट करताहूं. और सब सज्जन पुरुष और पंडित साधू स्वामी लोगोंकी बहुत तरहसों विनती करताहूं कि जिस जगह कोई भूल होय तो सँभार लेवें और इस ग्रंथमें यूनानी और फकीरोंकी दी हुई बूटियोंकी संग्रह है इसके पढनेसे हजारों आदमीकाहित कारज होगा. और जो इसकी विधिप्रमाण दवा करैगा तो उस पुरुषको इस संसारमें मान और यश मिलेगा और एक पैसेकी दवाईमें हजारों रुपयेका गुण दिखावेगा. और इस ग्रंथका वर्णन लिखने योग्य नहीं है जो देखेगा उसको इसका गुण मालूम होगा. श्रीपंडित कामताप्रसाद संतन प्रतिपालक और सुकुल भगवान-

कृता पंडित और बाबाहंसदास और शिरोमणि पंडित और ठाकुर उदवंतासिंह ये सब सज्जनपुरुषकी आज्ञानुसार मुंशी भगवानप्रसाद कायथ जिले जौनपुर गांव रसूलपुर शिष्य भगत भगवानदास सुराई जिला जौनपुर गांव ठाकुर गोदामकेपास गाय चकबढ मूल इन्होंने बनाय

भगत भगवानदास.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-खेतवाडी-बंबई.

ॐ

श्रीगणेशाय नमः ।

वैद्यक रसराजमहोदधि ।

वन्दना ।



दोहा ।

उमा महेश गणेश गुरु, ब्रह्मा विष्णु फणीश ।
भगवानदासकरजोरिकहै, कृपाकरहुजगदीश ॥
विष्णुरूप हियमें धरौं, करौं गुरुको ध्यान ॥
सरस्वती उर धारिकै, रचौं ग्रंथ परमान ॥
जग कारज कल्याणहित, वैद्यक अमृतरूप ॥
धन्वंतर वैद्यक किये, औषध अमृतरूप ॥
कहा फारसी वैद्यक, जिसमें वैद्यकसार ॥
रसराजमहोदधि कहौं, वैद्यक भाषविचार ॥
विविधभांति सुमिरण करौं, शिवचरणनकी आस ॥
सर्वद्विजन आशीशकै, सुजन पुरुषकी आस ॥
मुन्शी भगवान प्रसादके, चरणन करौं प्रणाम ॥
वैद्यकग्रंथविरचितकियो, भगवानदासहैनाम ॥
जगतमही परकाशहै, विधिहरिहरहै नाम ॥
ऐसे उस जगदीशको, बहुविधिकरौं प्रणाम ॥

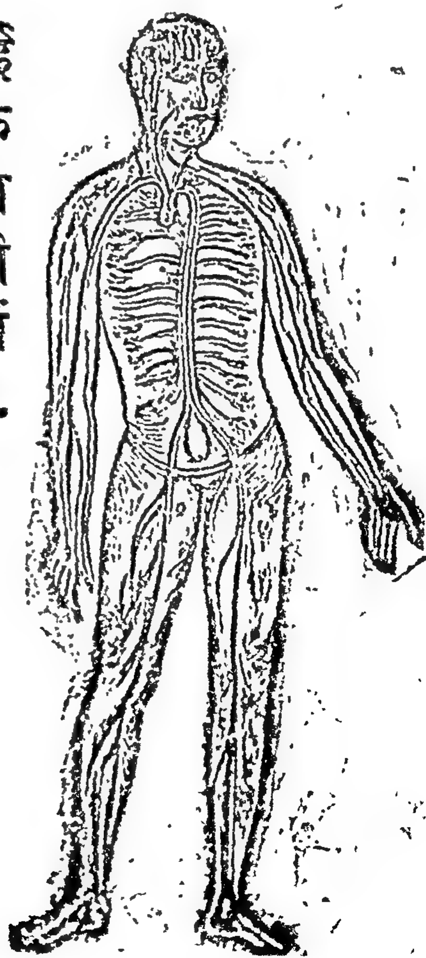
देवै और चतुर वैद्यजन नाडी ऐसे देखे कि रोगीका हाथ लंबा करावे और कछुक टेढ़ा हाथकी अँगुली सब पसारके हाथको न हिलावे और कडा करै ऐसी विधि करायके अंगुष्ठमूलसे नाडी देखै प्रभात समयमें तीनवार नाडीपरीक्षा धारण करै फिर छोडदे. ऐसे तीनवार परीक्षा करै और फिर बुद्धिसे विचारकर रोगको नाडीद्वारा प्रगटकरै वैद्य गुरुका ध्यान करिके नाडी देखै कौवाकी चाल नाडी चलै तो उसके ज्वर जानै और बहुत सुस्त बारीक नाडी चलै तो कफज्वर जानो और मोर या मुर्गा या बतक इसके मिसाल चलै तो कफ पित्तका ज्वर जानो और अँगुलीमें दबि दबि जाय तो बातके फिसाद ज्वर जानो. और सांपकीचाल नाडी चलै तो बात कफका ज्वर समुझना और काठफोरा जो काठको ठांक ठंक काटतेहैं जो नाडी ऐसी चाल चलै तो सन्निपातज्वर जानो यही सब नाडीपरीक्षा है और इसीसे सब रोग जाना जाता है.

अथ मूत्रपरीक्षा.

लाल रंग मूत्र होय तो उसके खूनका जोर समझना चाहिये. और पीला हो तो ज्वर समुझना और सफेद रंग होय तो बलगमके व्याधि जानो और

अंजीरके रंग मूत्रहोय तो खूनसे बिगडा मूत्र समझो. और केसरीके रंगका मूत्र होय तो वादी वा पित्तसूं बिगडा मूत्र जानो. और खूनके रंग मूत्र होय तो और जडा स्याही रंगलिये होय तो गरमीका रोग जानो. और जो निहायत कालारंग हो तो असाध्य जानो और जोकि ज्वर मिला होतो ६ महिनाके अंदर मरै और ज्वर न रहै काला रंग मूत्रहोय तो रोगी जीवैगा मरै नहीं.

जो तस्वीरमें नसें बनाई हैं इसी तरहसे मनुष्यके शरीरमें नसें होतीहैं. तमाम शरीरमें जो नसें हैं सो इनकी जड छातीसे है. सो वह नसें छातीसे पेर व हाथ तकहैं.



अथ कफ खाँसी डाँसी ऊर्द्धश्वासका लक्षण.

दोहा—उदर विषे एक नाटिका, होवै मलसों बन्द।
कफ खाँसी ऊर्द्ध श्वास बहु, करै व्यथा सब अंग॥

अथ मन्द अग्निलक्षण.

जिस पुरुषके पेटमेमल खराब हुआ हो उसकी नाडी बहुत सुस्त चले पेटमें गर्मी मालूम हो शरीर सुस्त रहै. खाना बराबर हजम न होय. मूत्र लालउतरै और सब अंगमें पीडा हो, या अंग गर्म रहै. मल बराबर उतरै नहीं ये लक्षण मन्द अग्निके हैं.

अथ संग्रहणीका लक्षण.

जिस पुरुषके अंगमे संग्रहणी होय शिर भारी रहै. आंख बैठ जाय. मल, मूत्रसाथही उतरै दस्त पानीके सरीखा होय अन्न पचे नहीं दस्तके साथ वह अन्न गिरा करै.शरीरका चेहरा बदल जाय.ये लक्षण संग्रहणीके हैं.

खूनी बवासीरका लक्षण.

तृषा अरुचि रुधिर निकलै. दुर्बलहोय अतीसार होय. खाज होय. गुदाके बीचमें फोडा निकलैं ये लक्षण खूनीकाहै.

अथ दाहका लक्षण.

बाहर अन्दर दाह बहुत होय. उदर गरम रहै मुरछा होय. तृषा होय. ये लक्षण दाहके हैं.

अथ बदनमें बादी कब्जियत बिगडेका लक्षण.

जिस आदमीके अंगमें बादीका बहुत जोर होता है उससे खाना नहीं खाया जाता. और न बराबर हजम होय. तमाम अंगमें सुस्ती होवे हाथ पांवमें चिकनाहट होवे और पानीके मुवाफिक मालूम होय पानी पीनेकी इच्छा न लगै गर्मी मिजाजमें मालूम होय.

अथ खून बिगड़ेका लक्षण.

जिस पुरुषके अंगमें रक्त बिगडा होवे उसके मुँहका स्वाद मीठा कडुआ होय. शिर भारी होय. और हड्डीके अन्दर दर्द होय. जबान सूखी रहै और अंगमें खुजली, आंख सुर्ख रहै पेशाब लाल उतरै नाडी बहुत जलदी जलदी चले ये लक्षण रक्त बिगडेके हैं.

वात पित्त मिश्रित होय उसका लक्षण.

दोहा—वात पित्त कफ धीरते, करत बदनके रोग।
जीव दोष दुर्वासना, फोडा फुडिया योग ॥

अथ वायुका लक्षण.

दोहा—तनु कांपै सूखै अधर, तृषा जलकी होय।
हुचकी शूलरु उदर दुख, मुख फीका कहुसोय॥

अथ वातका लक्षण.

दोहा—सब शरीर नख नेत्रको, विष्ठा मूत्र जु होय।
ये लक्षण ज्वरवायुके, मूत्र रुधिररँग होय॥

अथ कफज्वर लक्षण.

मूत्र बहुत जल्दी जल्दी उतरै चित्त भ्रमित रहै बुद्धि नष्ट हो जाय नींद बहुत आवे कफ छाती छेके रहै देहमें ददोरा ऐसा मालूम होय तो कफ-ज्वरका लक्षण है.

निरोगरहनेका बयान.

मनुष्यको चाहियेकि दिनको सोना नहीं. और रातको जागना नहीं बहुत आदमी ऐसे निद्रा करनेसे रोग उत्पन्न करतेहैं. और खराब खाना खाय नहीं. और दिनको स्त्री भोग करै नहीं, जोडा पहननेसे आँखों को गुण करताहै. छतरी धारण कियेसे शरीरको सुख होताहै. और मनुष्यको उचितहैकि सज्जन पुरुषसे प्रीति करै, और सत संगति करै. ब्राह्मण वृद्ध पुरुष वैद्य और राजासे प्रीति करै और गुरुका कहना मानैं

दुष्ट पुरुषको त्याग करे. वैरीसे दूर रहै. और किसीको दुःख देवै नहीं, और विश्वास विचारके करे मिथ्या बोलै नहीं, अपनेसे बलवान पुरुषसे युद्ध करे नहीं, स्त्रीका विश्वास करै नहीं. सामके वक्त घड़ी दिन रहे सोवै नहीं. सोनेसे आयुहीन और दरिद्र होता है स्त्रीका सोलह वर्षतक बाला नामहै और बत्तीस वर्षकी स्त्री तरुणी संज्ञा है पचास वर्षतक अधि-रूढ़ा पचास वर्षके उपरांत वृद्ध अवस्थाहै रज-स्वला. वृद्ध गर्भिणी वैरवाली और गोत्रकी गुरुकी स्त्रीसे मनुष्यको उचितहै कि ऐसी स्त्रीसे भोग करैनहीं जो मूर्ख लोग करते हैं तो पूर्वजन्म में गूँगे होतेहैं और परीक्षित रोग होताहै. वह आदमी सदा कलेशमें रहताहै. मनुष्यको चाहिये कि अपनी स्त्री सिवाय दूसरी स्त्रीसे भोग नहीं करे और स्त्रीको चाहिये कि अपने पतिको छोड़कर दूसरेसे भोग करे नहीं यह धर्म और वेदकी रीतिहै.

अथ स्वप्न विचार.

जो स्वप्न मनुष्यको शामसे आधीराततक दीख-आवे तो छःमहीनेके अंदर फल करे और आधी रातसे सवेरेतक जो स्वप्न देखे तो दश महीनाके अन्दर फल करे और वेद धर्मवाला और भक्तिवाला

शीलवाला ये अच्छा है पढे लिखे शास्त्र-विषे निश्चयवाला और गैर लालची ये वैद्य अच्छाहै ये स्वप्नमें आवें तो श्रेष्ठ है. जो खराब स्वप्ना देखे तो किसीसे कहे नहीं और ब्राह्मणको दानदे और सींगवाला बैल बंदर और शूरवीर और नाव पर चढा ये देखे तो राजाका भय होय और काला कपडा लाल कपडा पहरे स्त्री देखे तो मृत्यु होय और शिर मुँडाये और अपना व्याह देखे और घरमें नाच तमासा देखे तो मृत्यु होय. और भैंसा ऊंट गधा दक्षिण दिशाको जाता देखे अच्छा मनुष्य देखे तो बीमार होय. और बीमार देखे तो अवश्य मरै और जो सफेद कपडा पहरे सफेद माला पहरे स्त्री को पुरुष देखे तो लक्ष्मी प्राप्त होय. ब्राह्मण गुरु और बतिआगि साधुनका झुंड बुढापा ये स्वप्ना सदा आनंदकारीहैं.

अथ दूतपरीक्षा.

पवित्र होकर शीलमान आदमी वैद्यको बुलाने जाय तो श्रेष्ठ है. और काना और अंधा लँगडा मैला कपड़ा ये अशुभहै वैद्यको अच्छा दृष्टांत मिले तो जाय और मान होय रोगी जीवे परीक्षा बहुत है जियादा लिखनेसे काम नहीं.

अथ साध्यलक्षण.

रोगी आदमीका सर्वशरीर शोभायमान होय चेहरा ज्योंका त्यों रहै मुख सूखा रहै दाँत सफेद रहैं वो रोगी जीवै ओंठ लाल रहैं शरीरमें मैल बास न रहै कानसे सुनै ये लक्षणका रोगी जीवै. और जिसके पैरगर्म रहैं और कपडामें खराब बास नहीं आवै मधुर वचन बोलै वह रोगी अवश्य जीवै. सबेरे रोगीका मूत्र पानी सरीखा हो तो वह रोगी मरै नहीं.

असाध्यलक्षण.

देहकी शोभा जाती रहै. और चेहरा भयंकर होय रात दिन अचेत रहै तो वह रोगी अवश्य मरै और रोगी का मुँह रोरी सरीखा होय. जीभ काली होय और वचन दव दव बोलै वह रोगी असाध्यहै. और जिस रोगीके शरीरमें खराब बास आवै तो वह रोगी असाध्य. आँखि बैठ जाय और किसीको पहिचानै नहीं और बोलै औरका और तो वह रोगी असाध्यहै.

अथ मलज्वरलक्षण.

कंठ सूखै, दाह बहुत होय, मस्तक पीडा होय, भ्रम उपजै, मूर्छा होय, हड फूटनी होय, हिचकी, पेटमें शूल, वमन होय तो मल ज्वर लक्षण जानो.

कालज्वरके लक्षण.

पेशाव बहुत होय, देह गलिजाय, माथ नाक शीतल होय ये लक्षण कालज्वरके हैं.

कफज्वर, शीतज्वरका लक्षण.

अरुचि होय, अग्नि मंद होजाय, मुखसें खराव गंध आवै, ज्वर वहुत होय, देह शीतल होय, निद्रा बहुत होय, येलक्षण कफज्वर और शीतज्वरके हैं.

कामज्वरका लक्षण.

शीत लगै, शरीर काँपै, चित्तभ्रम होय, माथामें पीड़ा होय, कंठ सूखा रहै, मुँह कसैला होय, यह लक्षण कामज्वरका है.

रक्तज्वरका लक्षण.

शरीरमें पीड़ा होय, मुख नाकसे खून निकलै, ये लक्षण रक्तज्वरके हैं.

सर्वज्वरके दूर होनेका चूर्ण.

सोंठि धनियां छोटी बड़ी कटाई देवदारु सब बराबरि ले कपडछान करिके छः मासा शामको छः मासा सवेरे गर्म पानीके साथ खाय तो सब प्रकारका ज्वर दूरहोय.

अथ सर्वज्वरकी उत्पत्ति.

श्रीमहादेवजीने अपने तीसरे नेत्रसे वीरभद्रको जाया सो यही वीरभद्रसे आठ प्रकारका ज्वर

हुआ सो आठ प्रकार ज्वरसे सैकरों ज्वर हैं जो लिखने योग्य नहीं. आठ प्रकारके ज्वरोंको अलग २ लिखते हैं वातज्वर १ पित्तज्वर २ कफज्वर ३ वातपित्त ज्वर ४ वातकफज्वर ५ कफपित्तज्वर ६ सन्निपात ज्वर ७ आगंतुकज्वर ८ यही आठ प्रकारके ज्वर हैं.

अथ वातज्वरलक्षण.

शरीर काँपै, कभी शरीर जलै, कभी कम होना, गल ओठ मुखका सूखना निद्रा न आना छींक न आना अंगमें रुखाई शिर हृदय व देहभरमें पीडा मुख फीका बहुत कडा दस्त होना, पेटकी पीडा पेट फूलना जँभाई आना ये सब वातज्वरके लक्षण हैं.

अथ वातज्वरकी दवा.

सोंठि चिरायता नागरमोथा गिलोय इन्होंका काढा करि देइ तो वातज्वर दूर होय.

गुडूच्यादि काढा.

गिलोय, छोटी पीपली जटामासी सोंठि इन्होंका काढा करिदेय तो वातज्वर जाय. यहीगुडूच्यादि काढाहै.

(भैरवरस)

वचनाग विष सोंठि पिपली मिरच रक्त आक सब बराबर लेय अदरखके रसमें खल करिके दे वातज्वर तत्काल दूर होय.

पित्तज्वरका लक्षण दवा.

नेत्रमें दाह होय, मुँह करुवा होय पियास बहुत लगै भवँर छुटै बकै शिर गरम रहै, मल पतला उतरै, वमन होय, नींद न लगै, मुख सूखै और पाकि जाय पसीना आवै, नेत्र मूत्र मल पियर होयँ ये लक्षण जेहि पुरुष के होयँ तो पित्तज्वर जानो.

अथ पित्तज्वरका काढ़ा.

धमासा बांसा कटुकी पित्तपापडा मालकांगुणी चिरायता इन्होंका काढ़ा बनाय मिसिरी डारि पिये तो पित्तज्वर दाहसहित नाश होय.

(पुनःकाढ़ा)

गिलोय नागरमोथा धनियाँ मुलहटी चिरायता इन्हों का काढ़ा तृषा शूल अरुचि छर्दि पित्तज्वरको दूरकरैहै.

अथ कफज्वर लक्षण दवा.

अन्नकी अरुचि होय, शरीर भारी होय, मूत्र नेत्र नख सफेद होयँ, नींद घनी आवै, शरीरमें ठंढी होय मुँह मीठा होय दस्त न उतरै आलस्य आवै, श्वास खांसी होय ये लक्षण कफज्वरके हैं.

कफज्वरपर त्रिफलादि चूर्ण.

त्रिफला पिपली चूर्ण करि शहतके साथ चाटै तो कफज्वर श्वास खांसी दूर होय.

निम्बादिका काढ़ा.

निम्ब सोंठि गिलोय शतावरी धमासा चिरायता पुष्करमूल पीपलामूल कटेली इन्होंका काढ़ा करि पिये तो कफज्वर दूर होय.

अथ वात पित्तज्वरका लक्षण.

मूर्च्छा होय, भवँरी छूटै, दाह नींद आवे नहीं, माथेमें पीडा हो कंठ मुँह सूखै, वमन रोमांच होय अरुचि होय सर्व अंगमें पीडा होय जँभाई आवे और बकवाद करै ये लक्षण वातपित्तके हैं.

अथ वात पित्तज्वरपर पंचमूलादि काढ़ा.

पंचमूल गिलोय नागरमोथा सोंठि चिरायता इन्हों का काढ़ा करि पिये तो वातपित्तज्वर दूर होय.

मुस्तादि काढ़ा.

नागरमोथा धनियाँ चिरायता गिलोय नींब कटुकी कडू परवर इन्होंका काढ़ा करि पिये तो वातपित्त ज्वर दूर होय.

अथ वात कफज्वरके लक्षण.

खांसी अरुचि संधि २ में पीडा माथ बाय पीनस संताप अंग कंपै शरीर में भारीपना होय नींद आवे नहीं पसीना श्वास पेटमें शूल होय और यही लक्षण

जिस मनुष्यके होयँ और नाड़ी सर्प हंसकी चाल चले तो वात कफज्वर जानो.

अथ वात कफज्वरकी दवा.

कली चूना १० टंक हरताल तबकी १० टंक ले घीकुवारके रसमें ४ पहर घोटै तब गोला बांधि सुखावे फिर गजपुट कर आंच देय शीतल भयेपर रोगीकाबल देखिके १ टंक गरम पानीके साथ देय तो नित्य ज्वर अँतराज्वर तिजारीज्वर चौथियाज्वर वात कफ ज्वर ये सब ज्वर जायँ.

और काढ़ा.

कायफल सूंठि वच नागरमोथा पित्तपापड़ा धनियाँ हर्र काकड़ासिंगी देवदारु भारंगी इन्होंका काढ़ा बनाय पिये तो वात कफज्वर जाय.

अथ कफपित्तज्वर लक्षण.

चटचटाहट और मुख कडू होना, आलस्य होना और खांसी आना, अरुचि प्यास बारर लगै, दाह होय शरीर ठंढा रहै, ये कफ पित्तज्वरके लक्षण हैं.

कफ पित्तज्वरकी दवा.

सोंठि पित्तपापडा धमासा इन्होंका काढ़ा कफ पित्तज्वरको दूर करता है.

और काढा-

कटैली गिलोय सोंठि पुष्करमूल चिरायता इन्होंका काढ़ा सर्वज्वरको हरैहै.

ज्वरांकुश रस- कफ पित्त सब ज्वरोंपर-

पारा २५ गंधक २५ विष २५ सोहागाचौकिया २५ त्रिफला ३७॥ लेकर कूटि कपड छानकर अदरखके रससें घोटि गोली उरद प्रमाण बांधै एक शाम एक सवेरे खाय तो कफ पित्तज्वर सर्वज्वर दूर होय.

अथ सन्निपातका लक्षण-

अकस्मात् क्षण २ में रोवै हँसै गावै क्षणमें दाह होय क्षणमें सीतलगै क्षणमें स्वभाव फिर जाय इन्द्रियाँ अपने अपने धर्म्मको छोड़दें शरीरकी संधियोंमें हाडोंमें माथेमें पीडा होय आँसू आवैं नेत्र काले वा लाल होयँ कानमें शब्दहोय अंगमें पीड़ा होय कंठ घरि जाय तंद्रा श्वास कास अरुचि भ्रम होय जीभ काली खरदरी लाठरसी होय लोहूसे मिला कफ होय दिनमें सोवै रातिको जागै पसीना बहुत आवै वा न आवै तृषा बहुत होय छातीमें पीडा होय मल मूत्र उतरै नहीं उतरै तो थोडा उतरै दुर्बर होय कफ घुरघुराय मौन रहै ओंठ आदि इन्द्रिय पाकि जायँ पेट भारी रहै नाडीकी गति महामन्द होय, सूक्ष्म टूटीसी होय मूत्र

पीला वा लाल वा काला वा सेंदुर समान होय मल काला या सफेद वा सुवरके मांसके समान होय ये लक्षण होयँ तो जानो कि सन्निपात रोग है.

अथ सन्निपातकी दवा, वीरभद्र रस.

(त्रिकुटा) तिरकूठ ३। नोन ५। सौंफ १। दोनों जीरा ३। पारा १। गंधक १। अभ्रक रस १। सबकी कजरी करै फिर अदरख रसमें सब दवा छोड़िके घोटै फिर अनोपान आदिके रसमें औरसेंधो और चितावरिमें देइ तो तेरहौं प्रकारका सन्निपात दूर होय जैसे सिंह हाथीको मारै तैसे ज्वरको वीरभद्र रस मारै.

पुनःदूसरा रस.

पारा शुद्ध,गंधक शुद्ध,विष शुद्ध, २५ टंक जायफल ६२ टंक पीपरी १० टंक पारा गंधककी कजली करे तब दवा डारिके अदरखके रसमें एकादिन खरल करे फिर १ रत्ती प्रमाण रोगीको दीजे तौ सन्निपातज्वर शीतज्वर जीर्णज्वर विषूचिका विषमज्वर मन्दाग्नि माथेके रोग सब दूर होयँ.

अथ रोगीकी परीक्षा.

रोगीकी उम्मर बाकी हो तबभी औषध बिना रोगीकी पीडा दूर नहीं होती दृष्टांत जैसे हस्ती कीचडमें खड़ा हुआ उपाय बिना निकल नहीं सक्ता उमर बाकी हो

अरु चिकित्सा नहीं करे तो रोगी मरसक्ता है जैसे दीपकमें तेल बाती होतेभी पवनसे दीपक नष्ट होता है तैसे साध्य रोगी चिकित्सा नहीं करे तो स्वल्पासाध्य हो स्वल्पासाध्य चिकित्सा नहीं करे तो असाध्य हो असाध्य चिकित्सा नहीं करे तो मृत्यु होय जबतक श्वास आवे तबतक चिकित्सा करनी चाहिये कोई समयमें चिकित्सासे मरणप्रायभी जीवताहै आदिमें रोगीकी परीक्षा करै पीछे औषधकी परीक्षा करै पीछे समझकर औषध रोगीको देवै.

१ अथ शर्बत गाजुबाँ.

गाजुबाँ पावसेर, खांड एक सेर, पहिले गाज़बांको साफ करके दो या तीन पानीसे धोकर कपडेमें बांधिके रातिको भिगावै सबेरे अग्निपर दोसेर पानी डारिके चुरावै जब आधासेर पानी रहिजाय तो खांडडारिके शर्बत तयार करै, एक तोला खुराक शर्बतकी है सब रोगोंपर देवै.

२ अथ गाजबांके शर्बतकी दूसरी विधि.

हरी गाज़बाँका रस एक सेरले और एक सेर सफेद कंदले दोनोंको एकमें मिलायके चुरावै तब छानिले सात तोले छःमासे गुलाबका अर्क मिलायके चाशनीकरके खुराक एक तोले दे यह होलदिलकोहात.

करताहै और कलेजेको फायदा देताहै. सुस्ती और फेफड़ाको दूर करताहै.

३ शर्बत नीलोफरकी विधि.

नीलोफरका फूल आधा सेर दोसेर पानीमें सामको भिगावे सबेरे एक सेर चीनी मिलाय कर शर्वत तैयार करै खुराक ९ मासे दिमागको खुश करताहै और पित्तज्वरको दूर करताहै.

४ शर्बत दीनार (कासनी) की विधि.

कासनीका बीज ८ मासे गुलाबका फूल ८ मासे कासनीकी जडका छिलका ४ मासे गाजबां ४ मासे कुसुम ४ मासे सब दवा डेढसेर पानीमें चुरावे और आधा रहजाय तब डेढपाव शक्कर मिलायके चासनी करके खुराक एक तोला अनोपान मुवाफिक सब रोगोंपरदे.

५ शर्बत जूफाकी विधि.

सम्भुकी जड अजमोदाकी जड सोसनकी जड हंसराज अंजीर ये सब बारह बारह मासे ले सवा दोसेर पानीमें चुरावे और आधा रहजाय तब डेढ पाव शक्कर मिलाके शर्वत तय्यार करै खुराक चारि मासे खांसीको दूर करताहै. कलेजेको तर करताहै.

६ शर्बत अनार विलायतकी विधि.

दो सेर अनारके दानेका रस निकालले और ढाई सेर शक्कर मिलाके शर्बत तय्यार करले खुराक दो तोले नजूलाको दूर करताहै दिल और दिमाग़को ताकत देताहै.

७ शर्बत शहतूतकी विधि.

लाल शहतूत दो सेर मलिके छानिले और दोसेर कन्द मिलाकर चासनी करले खुराक दो तोले दिलको प्रसन्न करताहै और कफज्वरको दूर करताहै.

८ शर्बत गुलाबकी विधि.

पावसेर गुलाबके फूल लेकर दोसेर पानीमें ओटावे आधा रहजाय तब आधासेर शक्कर मिलाकर चासनी करले खुराक एक तोले. पित्तकी गर्मीको शान्त करताहै, और पियासको बुझाताहै. कलेजेको ताक़त देताहै.

९ शर्बत बनफ्शाकी विधि.

बनफ्शाके पत्ता आधपाव लेकर डेढ पाव पानीमें ओटावे जब आधा रहजाय तब आधसेर चीनी डारिके चासनी करले खुराक एक तोले फायदा पसलीको गुणकारकहै. फेफडेकी पीडा और शिरकी पीडाके दुःखको दूर करताहै. और ज्वरको फायदा करताहै.

१० शर्बत बेलकी विधि.

पावभर बेलका मगज लेकर भिगावै, एक सेर पानीमें थोड़ा चुरावे फिर डेढ पाव शक्कर मिलाकर चासनी करले खुराक एक तोले कब्जियत दूर करता है खूनी बवासीरको फायदा करता है और दस्त बंद करताहै.

११ शर्बत पुदीनाकी विधि.

एक पाव अनारको कूटकर रस निकाल ले और पुदीनाका रस पावभरि आधासेर कन्द मिलाकर चासनी करले खुराक एक तोला. दिलको प्रसन्न करता व प्यास बुझाताहै.

१२ शर्बत नींबूकी विधि.

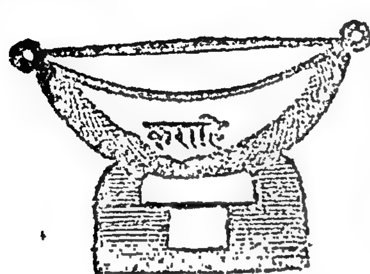
बीसनींबू लेकर उसका रस निकाल कर डेढ सेर सफेद चीनी मिलाकर चासनी करले खुराक एक तोलेसे डेढ तोले तक कलेजेकी गरमीको शांत करताहै भूंख लगाताहै और मन प्रसन्न करताहै.

१३ शर्बत केवड़ाकी विधि.

पावभर केवड़ेके फूल लेकर एकसेर पानीमें भिगोकर फिर थोड़ा चुरावै जब आधा रह जाय तब तीनपाव चीनी मिलाकर चासनी करले खुराक एक तोलाहै.

यह यंत्र शर्बत बनानेकी विधिहै.

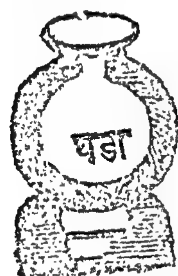
दवाईका अर्क कढ़ाईमे डालकर मिश्री डालके चुरावे जब गाढा होजावे तब कलछुलीसे चलाकर



उठावे जोकि टोप बांधि लेवै तब कढाईमेंसे निकालकर सीसीमें रखदे इसी तरहसे शर्बत बनाले.

ये यंत्र अर्क उतारनेकी विधिहै.

एक घडाले उसमें पानी डालकर तब उसमें दवाई डालके ढपनासे घड़ाको बन्द करदे मधुरी आंचसे



चुरावे जब आधा रहजाय तब कोई दवाईका अर्कहो इसी तरहसे बनाले अर्क की यही विधिहै शर्बत बनानेके वास्ते.

१४ शर्बत पानकी विधि.

पक्का पान दोसै मलके रस निकाल ले और एक सेर कन्द मिलाकर चासनी करले खुराक एक तोलेसे दोतोले तक दिलको प्रसन्नकरता है शरीरको ताकत देताहै.

१५ शर्बत इमली विधि.

आधासेर इमलीको दोसेर पानीमें भिगोकर उस

को मलिके छानिके एक सेर कन्द मिलाकर चासनी करले. खुराक सवातोला, उलटीको शान्त करताहै.

१६ शर्बत चन्दनकी विधि.

चन्दनका चूरन एकसेर पांचसेर पानीमें अंगार पर चुरावै जब आधा रहजाय तब चारसेर कन्दमें मिलाकर चासनी करले खुराक एक तोला पित्तज्व-रको दूर करताहै उलटी शान्त करताहै, भूख लगा-ताहै, और तमाम शरीरको खुश करताहै.

मृगीकी दवाई.

दोहा—बच खुरशानी शहद सँग, दोयटंक जो देय ॥
मृगी रोग तुरतै हरै, दूध भात पथ लेय ॥
ब्रह्मणी बच कुट संगसों, शंखाहोली लेय ॥
गऊ घीवमें पीजिये, मृगी व्याधि क्षय होय ॥
मिरच डिठोहरिमें धरै. दिनइक्किस परिमान ॥
जलसों नाश घुलीजिये, होय मृगीकी हान ॥

परमाकी दवाई.

शंखाहोलि, इलाइची, शिलाजीत पुनिलेय ॥
सब परमोंका दुख हरै, प्रात समय जो सेय ॥
रस गिलोय निकालके, पीजे शहद मिलाय ॥
सब परमाका दुख हरै प्रात समय जो खाय ॥

बवासीरकी दवाई.

दोहा—दुद्धीवाडि जो आनिकै, लौंग संगमें खाय ॥
वा घृतसँग जो पीजिये, खून बवेशी जाय ॥

बूटीका गुण.

दोहा—पातकसौंजी विष हरै, जडसे सांप डराय ॥
फलसे बावडरातहै, फूल रतौंधी जाय ॥

वांझिनी स्त्रीका लक्षण.

दोहा—मुखलम्बाकुचपुहुप सम, कटिविसाल जो होय ॥
कवि कोविद दोऊ कहैं, होय वांझिनी सोय ॥

दरिद्रिनी स्त्रीका लक्षण.

दोहा—जाकीनाभिगँभीरअति, श्रवणहोईं जसशूप ॥
सोतिय होय दरिद्रिणी, जो पावैपतिभूप ॥

अथगुंजाप्रकाशविधि.

दोहा—गुंजाकी गति कहतहों, कौतुक चरित्त अपार ॥
गिरिजासों शिव यों कह्यो, सब कल्पनको सार ॥
भूत रु डाकिनि प्रेत गण, यक्ष बीर बैताल ॥
इक गुंजाके कल्पसें, कोटिन माया जाल ॥
बहुत चरित हैं कहों कुछ, सकल कल्पकी खानि ॥
जो चाहे सोई करै, साधनके वरदानि ॥
अब याके साधन करे, यथायोग उपदेश ॥
जो साधै सो सिद्धिहै, कसर नहीं लवलेश ॥

पुष्य होय आदित्यको, जो लीजे यह मूल ॥
शुक्रवार की रोहिणी, गहन होय अनुकूल ॥
कृष्णपक्षकी अष्टमी, हस्त नक्षत्र जु होय ॥
अर्धरात्रिको जायके, मनकी शंका खोय ॥
धूप दीपदे लायकर, धरे दूधमें धोय ॥
जो काहू नर नारिके, विषधर काटे होय ॥
विष उतरे सब तुरतही, जानि पिलावे सोय ॥
जो घिसिकर मुखमें तवे, सभामध्य नर जाय ॥
हाँजी हाँजी सबकहै, जोइ कहै सो थाय ॥
चतुरलोग याविधि करे, कबहुँ न आवे आंच ॥
एक जड़ीके गुक्त सों, सबै नचावे नाच ॥
तांबा माहिं मढ़ायके, कटिमें बांधे कोय ॥
नवें मास वहि नारिके, निश्चय बालक होय ॥
काजलसों घिसि आंजिये, मोहै सब संसार ॥
जो माँगे वह वस्तु कछु, सो लावे तत्कार ॥
जोघिसि पयके योगसों, लेपनकीजे अंग ॥
भूत प्रेत अरु यक्ष गण, लगे फिरैं सब संग ॥
घिसिके रुई भिगायकर, बाती करे बनाय ॥
फेर भिगावे तेलसों, दीपक धरे जलाय ॥
होय अचंभो शयन तब, मृत्युक सभा देखाय ॥
मनमें ले स्तुति करे, सबही पूजे पाय ॥
जो घिसिये वह घीवसों, लेप शरीर बनाय ॥
कैसाही होवे हठी, लावे प्रीत लगाय ॥

मेष मूत्रसों रगरिके, जो लेपे द्वौ हाथ ॥
कहै दूरकी बात वह, सब मानो है साथ ॥
गोरोचनको लौंगसे, लिखिये जाको नाम ॥
मित्र होय वह तुर्तही, नहिं वैरीको काम ॥
बेल अर्कसों धुत्तकर, अंजन लेय बनाय ॥
भूत प्रेत अरु डाकिनी, देखतही भगिजाय ॥
खांड संग जो रगरिकै, तलवातले लगाय ॥
आंखि मिजतकै पलकमें, सहस कोस उड़िजाय ॥
जो घिस आंजे धाकसों, जादिश नज़र कराय ॥
व्याधि परेसो छुट नहीं, कोटिन करै उपाय ॥
जो गुलाबसों रगरिकै, नाभी लेपकराय ॥
त्यहि शरीर घड़िचारमें, जागे सहज उपाय ॥
फिरि वाको ले तेलसों, जो घिसि आंजै कोय ॥
धन देखे पातालका, दैवी दृष्टी होय ॥
जो वाघिनिके चीवसों, घिसि चुपरे सब देह ॥
तीर तुपक लागै नहीं, ज्यों बरसे घन मेह ॥
घिसिकै तिलके तेलमें, मर्दन करै शरीर ॥
देखे सब संसारको, महावीर रणधीर ॥
जो अलसीके तेलमें, घिसिके शहद मिलाय ॥
कूटकाट लेपन करै, कंचन तनु ह्वैजाय ॥
जो मुर्गीके बीटसों, अंधा आंजे कोय ॥
सात दिना जो आंजही, दृष्टि चौगुनी होय ॥

कस्तूरीसों आँजिये, प्रातसमय लवलाय ॥
नृत्य लखै संसारकी, काल रूप दरशाय ॥
गंधक संग मिलायके घीसों नखन लगाय ॥
जो नर होय कुमारगी, देखत वश ह्वै जाय ॥
जो आंजै निज मूत्रसों, खुलै रागिनी राग ॥
जो पीवै घिसि गाभमें, मिटै देहका दाग ॥
गंगाज़लसों आंजिये, दोनों नयनों माह ॥
वर्षा वर्षै पुष्पकी, होय अचंभो नाह ॥

यंत्र. १

यह यंत्र गोरोचनसों भोजपत्रपर लिखै फिर गूगुल

संकरमातु संकरपितु

४०	४२	४	९
१	३	४८	४३
४६	४५	९	४
२	७	४७	४४

की धूप देकर कंठमें बांधै जिस औरतका लड़का जीता नहो तो जीवै और होता नहीं होय तो होवै, यंत्र लिखनेकी विधि. अच्छे दिन और अच्छे नक्षत्र में लिखै और जिस जगह किसी चीजपर लिखनेका प्रमाण नहीं है वहां भोजपत्रपर लिखे और जहां कलम नहीं लिखीहै वहां अनारकी कलमसों लिखना चाहिये. और जो

किसी चीजसे लिखनेको न लिखा हो तो देवी चंदनसे लिखना चाहिये. प्रथम स्नान करिके कोई होवे. यंत्र फूल और नैवेद्य देय करके उत्तर मुँह होकर लिखना.

यंत्र २

यह यंत्र शीघ्र काम पूर्ण करनेके वास्ते है जो कोई अपने संकेत पड़े पर लिखे और दहिने हाथपर बांधै तो अवश्य काम सिद्धि होय.

मं. ४	ह्रां १	ॐ ८
मह: ५	ह्रीं २	श्रीं. ९
सः ६	श्रीं ३	ह्रीं. ८

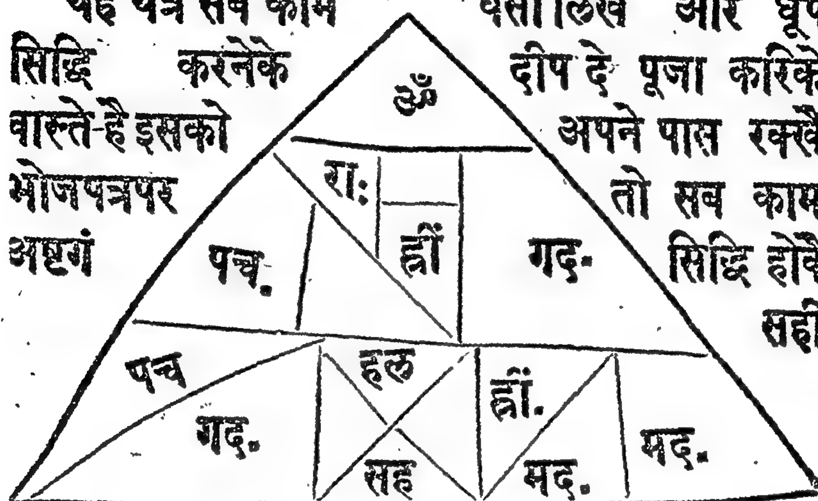
यंत्र ३

यह यंत्र एतवारके रोज लिख दहिने हाथमें बांधे तो चौथिया ज्वर छूटिजाय, पीछे जो कुछ बनि परै सो दान देय जरूर.

स्तः ७ ७	स्तः १	स्ताः ३ ८
स्तः ९	२ स्तः	स्तः ५
स्तः ८	स्तः ६	स्तः ४

यंत्र ४

यह यंत्र सब काम सिद्धि करनेके वास्ते है इसको भोजपत्रपर अष्टगं धसों लिखै और धूप दीप दे पूजा करिके अपने पास रक्खै तो सब काम सिद्धि होवै सही



यंत्र ५

इस यंत्रको भोजपत्रपर लिखकर व धूप देकर गलेमें बाँधे तो किसी तरहका भय न होवै. भूत नहीं लगै जो लगा होय तो छूट जाय. इस यंत्रको जगाइ करके लिखै.

१४	७	४	३
६	३	६	५
७	३	४	१४
४	१४	३	७

यंत्र ६

यह यंत्र जूडीके वास्ते है इसको भोजपत्रपर लिखकर जगायके गलेमें बांधै तो जूडी जाय सही.

७	२	८
८	६	४
३	८	५

यंत्र ७

यह यंत्र पंद्रहाँ है वहुत दिन जगायके भोजपत्र पर लिखे जिस औरतके लड़का न होता हो उसके कटिमें बांधे तो वहुत जलदी लड़का हो जावे

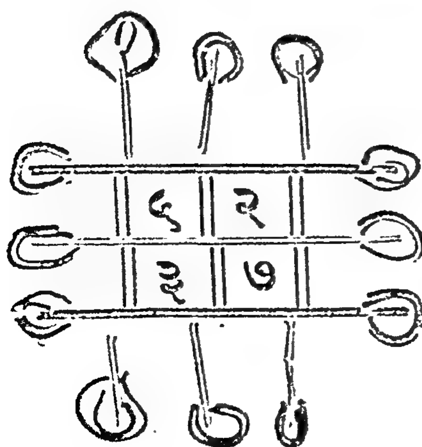
२	९	४
७	५	३
६	१	८

यंत्र ८

यह यंत्र (अधकपारी) आधाशीशीके वास्ते है एतवारको वा मंगलको लिखकर बांधे तो अध-कपारी जाय.

	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

यंत्र ९



यह यंत्र पीपरके पत्तापर रविवारको लिखकर हाथमें बाँधे तो अंतराज्वर जाय.

यंत्र १०



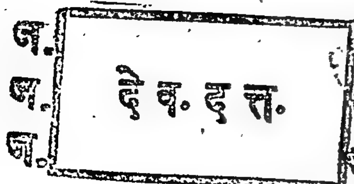
यह यंत्र अष्टगंधसों जिसका नाम लिखकर जाप करै वह मान करै

यंत्र ११

इस यंत्रको अष्टगंध सों भोजपत्रपर लिखकर धूप दीप देकर पगियामें राखै तो राजा प्रीति करै और संसारमें मान होय.

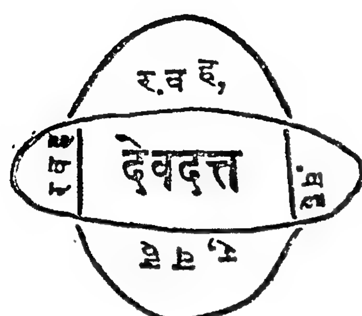
११७	१२४	२	७
६	३	१२१	१२०
११३	११८	८	१
४	५	११९	१२२

यंत्र १२



यह यंत्र धतूरके रससों रविदिन शत्रुका नाम लिखै शत्रु भागि जाय.

यंत्र १३



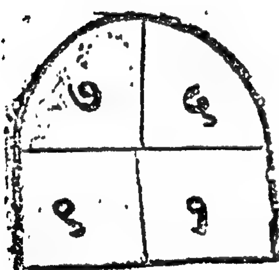
यह यंत्र नीबीके रससों कौवाके परसों लिखै शत्रु दूर होय.

यंत्र १४

६३	४२
३११	७०

यह यंत्र स्याहीसों लिखकर माथेमें बाँधे तो आधाशीशी दूर होय सही.

यंत्र १५



यह यंत्र कागजपर स्याहीसों रवि दिन लिखै और सूर्यके सामने पानीमें धोय कर पीवै तो वायगोला जाय.

यंत्र १६

अ.	ज	ब्र.
क्र	ग	ज:
छः	छः	दुः

यह यंत्र कानकी पीडाके वास्ते है लिखकर कानमें बाँधे तो पीडा दूर होय.

यंत्र १७

यह यंत्र कागजपर बुधकेदिन हरदीसे लिखकर जो लड़का बहुत रोता होय उसके गलेमें बाँधे तो रोवै नहीं और चुप होय.

१४८	१३	१३८	६
२	१४६	१३	१३१
१३	७	१४०	१
२०	१३२	९	१३७

यंत्र १८

यह यंत्र स्याहीसे कागजपर लिखे जिसकी आँख आवती होय उसको देखावे तो आंखें न उठें.

(९७८२०६०२)

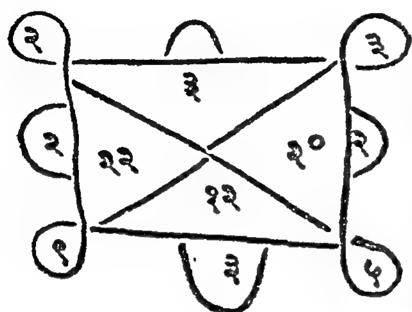
यंत्र १९

यह यंत्र पीपरकेपत्तापर लिखे जिसके चुरैल लगी होय उसके गलेमें गूगलकी धूप देके बाँधे तो छूटिजाय.

३७१००३ ७१३७१००
३७७००७७००३७०८
३७०० देवदत्त. ३० ८० ०

यंत्र २०.

यह यंत्र कोरे कपड़ापर लिखे और जिसके प्रेत लगा



होय उस आदमीका नाम लिखे पीछे रोगीको देखायके अग्निमें जलाय दे तो प्रेत भागे.

यंत्र २१

५५९	२१७	३६९
३५५	१३८३	८९३
७७२	१२७७	१५२१
८८१	९६६	१००१

यह यंत्र रवि दिन लिखिके गलेमें बाँधे तो ताप जाय.

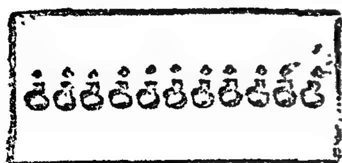
यंत्र २२

६९	१९	८९
७९	५९	३९
१९	९९	४९

यह यंत्र गुडगुडीके वास्तेहै पीपरके पत्तापर लिखिके दहने हाथमें बाँधे तो गुडगुडी दूरि होय.

यंत्र २३

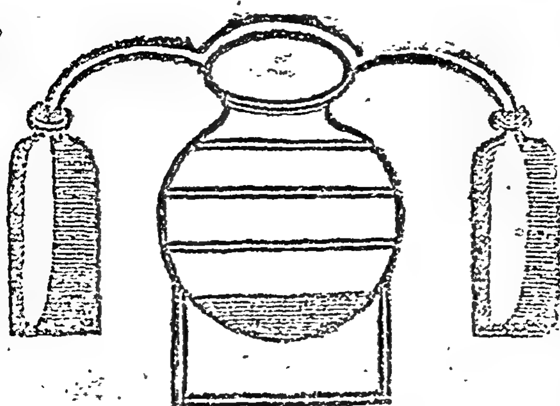
यह यंत्र कैसो संकट होय तो अष्टगंधसों भोजपत्र



पर लिखिके गलेमें धूप देके बाँधै संकटसे छूटै सही.

लडका होता न होय तो इस चक्रव्यूहको बनाकर दिखावे तो उस स्त्रीके तुर्त लडका होवे और कष्ट सब दूरहोय और एक छटांक गायके दूधमें पावभर पानी मिलाके पियावै तो तुर्त लडका होय.

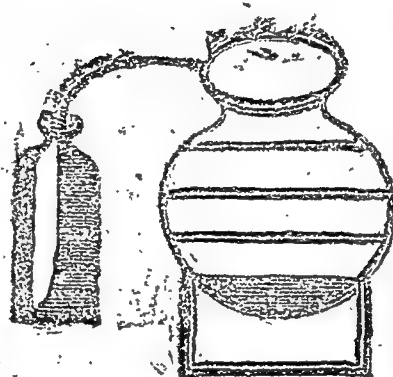
यंत्र २७



यह यंत्र डबल न-
लीकाहै इसमें ब-
नानेकी द वाईलिखते
हैं गुलाब के फूल
आधा सेर और के-
वडाके फूल पाव
भरि चमेलीके फूल पाव भरि सौंफ एक सेर चिरैता एक सेर कुलंजन आधा सेर बच पावभर सनायकी पत्ती आधा सेर अमिलतास पाव भर इन सब चीजोंको मिलाकर घडामें डाले और डेढ मन पानी डाले सबेरे भट्ठीपर चढावै मधुरी आंचसों अर्क खींचै बारह बजेतक समाप्त हो तब अर्क निकाल कर शीशीमें रक्खै जिसको जुलाब देना होय उसको पाव २ दो दिन पिलावे तब जुलाब देतौ शरीर निरोग होय और जुलाब बहुत अच्छु-

नर्म होय जिसका कोठा शर्द होय उसको गर्म करै और जिसका गर्म होय उसका नर्म करै.

यंत्र १८



यह यंत्र एक नलीकाहै कि सी तरहका अर्क खींचना होतो इसीतर हसे खींचै धनियाँ पाव भर कासनीका बीज पाव भर पुदीना पाव भर गुलाबके फूल पावभर सौंफ पावभर शक्कर एक सेर ये सब एक घड़ामें डालके शामको एक मन पानी डालके रखदे सबेरे अग्नि जरावै मधुरी आंचदे अर्क निकलै सो शीशी रखदे ॥ गुण ॥ करेजेकी गर्मीको तर करताहै उलटीको रोकताहै इन्द्रीको साफ कर देताहै गर्म मिजाज वालेको बहुत फायदा करता है भूख लगाताहै सब रोगोंको हरताहै जो किसी दवाईका अर्क खींचना होतो डबल नली या एक नलीसे खींच लेवै.

यंत्र २९

इस यंत्रको विद्याधर कहते हैं जो किसी धातुका या कोई दवाईका पारा निकालना होय तो इसी यंत्रसे निकालै सिंगरफ रसकपूर और सेंदुर जिस धातुसे पारा निकलताहै उससे निकालै सिंगरफ २ तोला लेकर नींबीके पत्तामें खल करै तब टिकिया बनाकर नीचेके घड़ाकी पेंदीमें रखके कपड़मिट्टी कर सुखायके उस घड़ेको चूल्हापर रखकर नीचे अग्नि जरावे और सिंगरफसे जो पारा निकलकर ऊपरके घडामें लगे तो वह पारा लोकप्रसिद्ध होय और आधाचावल पानके साथ खाय तो नामर्द मर्द होय.

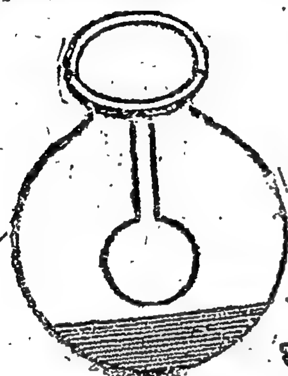
यंत्र ३०

यह डमरू यंत्र है जो किसी धातुका जौहर उड़ानाहो तो वह दवाई खल करके नीचेकीहंडीमें रक्खे और अग्नि ६ घंटा लगावै जब जौहर उड़के ऊपरकी हंडीमें लगै तो सब कामयें बेपरै अब इसके बनानेकी और एक विधि लिखते हैं आँवरासार गंधकको चूर्ण करके जौहर उड़ावै तो सब काममें वेपरे.



यंत्र ३१

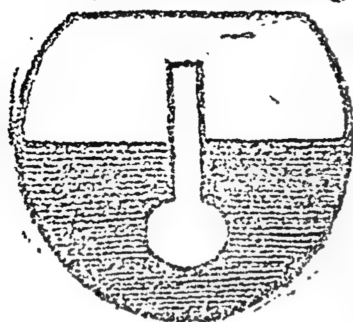
इसको स्वेदनयंत्र कहते हैं एक बड़ा घड़ा लेकर



उसमें आधा घड़ा पानी डालके तब आधा सेर गंधापिरोजा लेकर ३ दिन दुद्धीके लुगदीमें रखकर तब कपडामें पोटरी बांधिके रस्सी में बांधकर घड़ामें लटकावे और घड़ाके ऊपर एकछोटीहंडी रखकर कपड़मिट्टी करके तब अग्नि जरावै ६ घंटा आंचदे तौ सब गंधापिरोजा घड़ाकी पेंदीमें चूचूकर गिरै सो गंधा-पिरोजा फिर इसी विधिसे चार दफे कपडमिट्टी करके चुआवै तो सब काममें बेपरै सुजाक जो कि पीब बहता हो सो सात दिनमें अच्छा होय मिश्री ६ मासे इलायची ६ मासे गंधापिरोजा६ मासे ये सब दवा खाय १८ दिन और गायका दूध आधासेर पीवै तो परमा पथरी सब रोग दूरि होयँ और यह गंधापिरोजा सब रोगपर देय और इसीविधिसे गंधापिरोजाका सत निकाला जाता है.

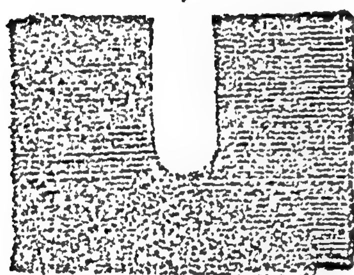
यंत्र ३२

इस यंत्रको वालुकायंत्र कहतेहैं इस यंत्रमें ऐसा



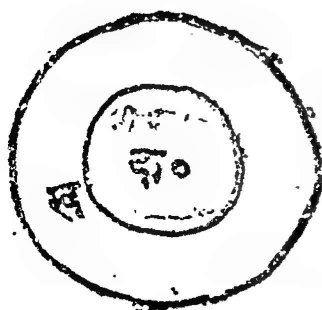
करे कि लोहेकी कराही लेकर उसमें वालू भरके वालूके बीचमें सीसीरखके मधुरी आंचदे जितना रसका परिमाण होय तितना आँचदे कोईभी रस होय.

यंत्र ३३



यह गौरीयंत्रहै कोई रस होय तो इसी यंत्रमें सिद्ध कर लेय.

यंत्र ३४



इसको चक्रयंत्र कहते हैं इस यंत्रमें पारा सिद्ध होताहै बीचके घरमें पारा बाहरके घरमें ऊपरी इस विधिसे भट्ठी लगावै.

यंत्र ३५

इस यंत्रको जल यंत्र कहतेहैं अब तेजाब उतर-नेकी विधि लिखते हैं फिटकरी पावभर नौसादर पाव-भर चौकिया सोहागा पावभर कलमीसोरा पावभर नीलाथोथा पावभर आंवरासार गंधक पावभर सबको एकमें मिलायके खल करै तब नीचेकी हंडीकी पेंदीमें

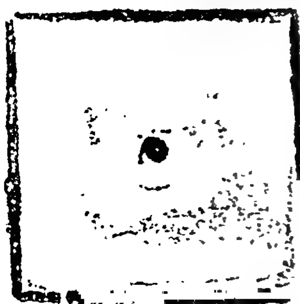


मिट्टी धरै और मिट्टीके ऊपर गिलास रक्खे और घड़ाके अंदर दवाई रक्खे और दूसरे घड़ामें पानी भरके दवा वाले घड़ाके ऊपर रक्खै मधुरी आंच दे जब ऊपरके घड़ाका पानी गर्म होजाय तो सँभारके तेजाब निका-लले अब इसका गुण लिखतेहैं बरबट वायगोला तापतिल्ली कछुई जाकूट पिलही उदररोग सब दूर होय खुराक ९ मासे ६ तोले पानी डालके पीवै.

यंत्र ३६

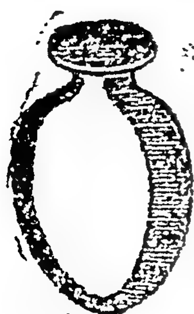
इस यंत्रकोगजपुट बोलतेहैं एक गज ऊंचा एक गज चौड़ा एक गज गहिरा इसके बीचमें दवाईका कपड़मिट रक्खै उसके चारों तरफ बीना हुआ कंडा

रखकर अग्नि जरावै और इसी मंत्रसे कोई यंत्र होवें



अग्नि जरावे (मंत्र) खाक फूंके तो मंत्र स्यों ह्लीं क्रीं श्रीं गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ॐ ॐ कर बीज मंत्र इति.

यंत्र ३७

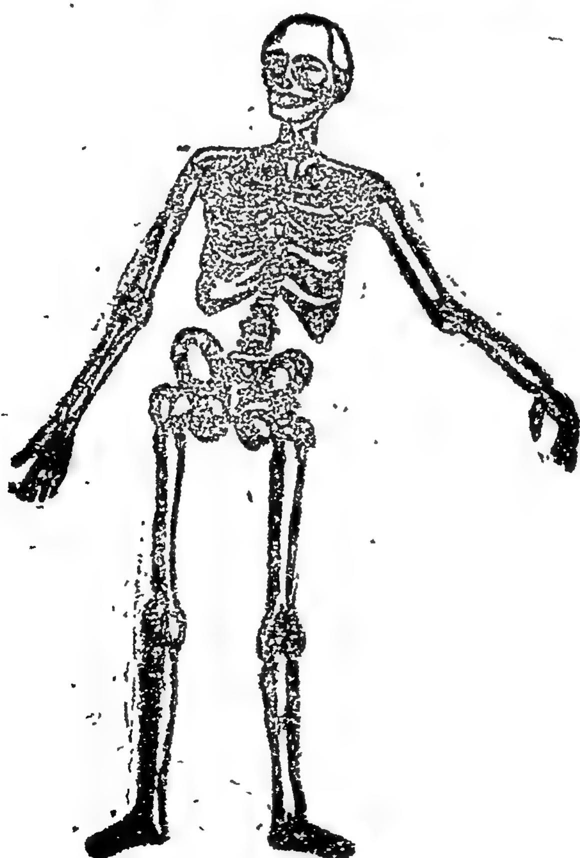


यह शीशी मृगांक बनानेकी है इसके चारों तरफ अग्निहै बीचमें कांच की सीसीहै, जो मृगांकके सदृश दवाई बनावे तो इसी तरहसे बनावे.

इति श्री मुन्शी भगवानप्रसाद शिष्य भगत भगवानदास विरचितं वैद्यकरसराजमहोदधि वंदना भूमिका रोगविचार नाडीपरीक्षा शरीरकी चेष्टा निरोग होनेका वर्णन स्वप्न विचार दूतपरीक्षा असाध्यलक्षण मलज्वर आठोंज्वरका लक्षण दवा कफज्वर शीतज्वर कामज्वर रक्तज्वर लक्षण उपाय सर्वज्वर दूर होनेका लक्षण वादी बिगडेका लक्षण खून बिगडेका लक्षण वात पित्त मिश्रित होनेका लक्षण वातका लक्षण, और कफ खांसीका लक्षण मन्दाग्नि और संग्रहनीका लक्षण, खूनी बवासीर और दाहका

लक्षण अठारह तरहके शर्बत बनानेकी विधि और गुण मृगीकी दवाई परमाकी दवाई बवासीरकी दवाई बूटीका गुण और बांझनी दरिद्रिनी स्त्रीका लक्षण गुंजा प्रकाशकी बत्तिस विधि और गुण, छव्वीस प्रकारके यंत्र और अर्क खींचने और रससिद्धि करनेकी विधि नाम प्रथमखंडं समाप्तम् ॥ १ ॥

यह यंत्र शिरसे पाँव तक शरीरकी हड्डीका है.



१ सिंघियाविष शोधन.

दो तोले सिंघिया विष लेकर भैंसाके गोबरमें डारिके दो घंटे चुरावे तब सिंघियाको निकाल कर सींक गोदे जोकि सींक उसमें धँसजाय तो उसको सफाकरके दूधमें चुरावे तो सब काममें वेपरै.

२ अथ विषका गुण.

रसायनहै, बलकरै है, त्रिदोषको दूरि करैहै, वात व शीत पित्त कफ कोढ़ खांसी दमा श्वास पील्ही जाकृति कंठोदर उदररोग इत्यादिको अनोपान मुवाफिक सब रोगोंको हरै .

३ कुच्चिला शोधन.

कुच्चिलाको गऊके मूत्रमें दशदिन डारिके रक्खै तब उसको निकालके छीलके टुकड़े २ काटै फिर दूधमें चुरावै शुद्ध होयगा (गुण) गर्म है वातको हरताहै लकवाको हरताहै और दमाको दूर करताहै अनोपान मुवाफिक सब रोगको हरताहै जो जड्डा घीमें चुरावै तो निहायत फायदादेवैगा.

४ अथ धतूरा शोधन.

गऊके मूत्रमें धतूरको चार घडी रक्खै फिर निकाल कर धो डाले तब सब काममें वेपरै (गुण) गर्म है

अग्निको बढाता और नसा करताहै वमनकारीहै ज्वर आदि सब रोगों को दूर करताहै.

५ जमालगोटा शोधन.

जमालगोटेको भैंसाके गोबरमें डारिके छः घंटे चुरावै तब फिर उसकी छालको निकाल कर जीभी निकालके नीबूके रसमें दो दिन खल करै तब सब कासमें वैपरै (गुण) पित्त कफको हरताहै और दस्त लाताहै उदर रोगको पील्हा बीछूको सर्वविषको व सब रोगको दूर करताहै.

६ भेलावाँ शोधन.

भेलावाँको पानीमें डालकर एक दिन चुरावै फिर उसका टुकड़ा २ करके दूधमें चुरावै फिर उसको निकालके एक तोला सोंठि और अजवाइन चार तोला डाल खूब खल करै तो सब कास में वैपरै (गुण) फोडा खाज खाँसी दमा इत्यादिक सब असाध्यरोग कोढ़ रोगको हरै.

७ गुंजा शोधन.

गुंजाको कांजीमें चुरावै तीन घंटे (गुण) हल्कीहै शीतलहै खांसी श्वास कोढ खुजली कफ पित्त सब विकारको दूर करती है.

८ आक शोधन.

आकको खल करके शुद्ध हुआ (गुण) वादी कोढ़ खुजली तापतिल्ली गोला बवासीर आकृती कंठोदर कृमिरोग सब रोगको हरै.

९ कलियारी शोधन.

कलियारी के टुकड़े २ करके एकदिन गोमूत्रमें भिगोनेसे शुद्ध हो (गुण) दस्त लाताहै कुष्ठ बवासीर यकृति कफोदर और कृमिरोगको दूर करताहै.

१० कनेर शोधन.

कनेरके टुकडे २करके गायके दूधमें डोलायंत्रसे पकावै शुद्ध हुआ (गुण) गर्म है नेत्रको गुण करताहै कोढ़ जरन खुजली सब रोगको दूर करताहै.

विष सेवनकी विधि.

मिश्री दूध शहद घृत चावल गेहूंकी रोटी इतना सेवन करै आचारपनसे रहै.

प्रमाण खानेका.

एक बजरीसे दो बजरी तक जैसा बल देखै तैसा रोगी को दे तो सब रोगोंको अनुपान मुवाफिक हरै.

अथ बछनागकी शांति.

हीरवण वृक्षके रसमें मिश्री मिलाकर पिये तो विष शांति होय.

२ अथ धतूरके बिषकी शांति.

बैंगनके बीजोंका रस पीनेसे धतूरका विष शांति होय तथा मिश्री दूध पीनेसे शांतिहोय.

३ अथ भिलावेके बिषकी शांति.

चौलाईका रस मक्खनमें मिलाकर जहां भिलावेकी सूजन होवे उस जगह लगानेसे भिलावेका विष शांति होय.

४ अथ भांगकेबिषकी शांति.

सोंठिके चूर्णको गायके दहीके साथ सेवन करनेसे भांगका विष शांति होय.

५ अथ गुंजाके विषकी शांति.

चौलाईके रसमें मिश्री मिलाय पीनेसे और ऊपर दूध पीनेसे गुंजाका विष शांति होय.

६ अथ कनेरके विषकी शांति.

मिश्रीमें भैंसका दही मिलायके पीनेसे कनेरका विष शांति होय.

७ अथ थूहरके विषकी शांति.

शीतल जलमें मिश्री मिलाय पीनेसे थूहरका विष शांति होय.

८ अथ जयपालके विषकी शांति.

धनियाँ मिश्री दही तीनों मिलाय पीनेसे जयपालका विष शांति होय.

९ अथ अफीमके विषकी शांति.

बड़ी कटेरीके रसमें दूध मिलाय पीनेसे अफीमका विष शांति होय.

१० अथ शंखियाके विषकी शांति.

घी गर्म करि पीनेसे तथा दूध मिश्री मिलाइके पीनेसे शंखियाका विष शांति होय.

जो बहुत विष खालिया होय तो जुलाब देवै उलटी करावै. इति विषकी शांति लक्षात.

अथ हरताल मारनविधि.

१एक तोला हरताल इन्द्रायणके एक फलमें रखके चार कपडमिट करके सुखाय डाले फिर सवासेर बिनुवा कंडोंसें फूंकदे इसी तरहसे इक्कीस इन्द्रायनमें फूंके तो हरताल पानी सोखन (गुण) कुष्ठ रोग व अनोपान मुवाफिक सब रोग दूर करता है.

दूसरी बिधि.

हरताल दो तोला लेके घीकुवारि के रसमें दो दिन खल करै तब गोला बांधिके सुखावै फिर सनईके बियों की लुगदीमें रख कपडमिट कारिकै तीन सेर कंडोंमें फूंकदे (गुण) कोढको दूर करताहै इसका गुण वर्णने योग्य नहीं है.अनोपान मुवाफिक सब रोग दूर करताहै.

अबरख मारनेकी दूसरी विधि.

अबरख लेकरके कूटै तब मूलीके रसमें १८ दिन रक्खे फिर गुरुमें खल करके फूंकदे फिर मूलीके रसमें १८ दिन रक्खे फिर हुरहुरके रसमें १८ दिन रक्खै फिर कलमीसोरामें खल करै फिर गुरुमें १८ दिन खल करै तब कपड़मिट्टी करिके फूँकदे इसी तरह चार दफे फूंके तो सब रोग हरै अनोपान मुवाफिक.

शंखिया मारन विधि.

शंखिया एक तोला लेकर मुरईकी राख आधा सेर एक हंडी लेकर हंडीके अन्दर आधी राख रक्खै तब शंखिया रक्खै और जो आधी राखहै उससे ढांक दे फिर हाथसे दबादे हंडीके ऊपर ढकना रखकर कपडमिट करके चूल्हे पर रखके एक दिन चिराग की टेम सम आँचदे तब शुद्ध होय खुराक आधा चावल श्वास कास दमा शीतज्वर पित्तज्वर अनोपान मुवाफिक सब रोग हरै.

दूसरी विधि.

पापडखार चारतोला शंखिया एक तोला लेकर मिट्टीकी एक ढकनी लेकर उसमें आधा पापडखार रखना तब शंखियारखना फिर दूसरे ढकनेसे ढांक देना. कपडमिट करके सुखायके आधामन गोवरीमें फूंकदे फिर रोगीको देख कर बल बिचारके दे आधा

चावलसे एक चावल तक ये दवा सर्व प्रकारके रोग को दूर करती है, अनोपान मिश्री, दूध, घी.

अथ शिलाजीत शोधन.

त्रिफलाके रसमें एक दिन घोटै फिर एकदिन दूध में घोटै तो शिलाजीत शुद्ध होय खुराक ६ मासे आधासेर दूधके साथ जो मनुष्य एक महीनासेवै तो शरीर पुष्ट होय बल होय वीर्य बढै अनोपान मुवाफिक सब रोग हरै शिलाजीतका गुण कुछ वर्णने योग्य नहीं.

अथ मैनशिल शोधन.

मैनशिल अगस्त्यके रसमें घोटै अथवा अदरखके रसमें घोटै शुद्धहोय तो सब काममें वेपरै (गुण) कडु- आहै विषको हरै श्वास कास आदि सब रोगोंको हरै.

अथ रसकपूर मारनविधि.

एक तोला रसकपूर लेके बिजौरा नींबूके बीचमें रखके मुलतानी मिट्टीसे कपडमिट्ट करके सुखायके एक सेर बीना हुआ कंडा लेकर उसमें रखके फूंकिदे पीछे रस निकालके तांबामें डाले तो पानी सोखन होय.

अथ खपरिया शोधन.

खपरिया लाल करिके सात बेर नींबूके रसमें बुझावे तो शुद्ध होय और सब काममें आवे.

अथ नीलाथोथा शोधन.

सिर्का अथवा अचारमें दोतोला नीलाथोथाको

एक पहर घोटै फिर टिकरी करिके आगमें फूंक दे तौ सब रोगोंको गुणकारीहै. खाज, कोढ, और सम्पूर्ण आंखिके रोगोंको बहुत फायदा करताहै.

अथ मोती मूंगा मारन विधि.

मोती, मूंगा कपड़ासें बाँधिके एक घड़ामें आधा घडा इंद्रायणका रस डालके उस घड़ेमें लटकाइ देइ पीछे एक पहर जुरावै तो शुद्धहोय तब गजपुटमें फूंकिदे तो भस्म होय सब कामोंमें आवै (गुण) आँखोंके रोग खांसी परमा सुजाक ज्वर मूत्रकृच्छ्र इन सबको दूर करताहै ठंढा है सब रोगोंको नाशकरताहै मोती मूंगाकी भस्मका गुण अगाध है.

अथ शंख, कौड़ीमारन.

शंख, कौडी आठ दफे आगमें लाल करिके नींबूके रसमें बुझावै तो शुद्ध होय. सब रोग पर देय (गुण) श्वास खाँसी, आँखोंको गुणकारी है.

अथ गुंजा शोधन.

गुंजा लेकर एक पहर दूधमें जुरावै तब शुद्ध होय सब काममें बेपरै (गुण) आंखों के रोगको दूर करै और शिरके बालोंको बढ़ावै अनोपान मुवाफिक सब रोग दूर करै.

अथ फिटकरी, सोहागा मारन.

फिटकरी, सोहागा नींबूके रसमें खल करके गोला

बनायके गजपुटमें आंच देय तो सब रोग हरै इसका गुण वर्णने योग्य नहीं है.

अथ समुद्रफेन शोधन.

समुद्रका फेन कागजी नीबूके रसमें डेढ पहर घोटै तो शुद्ध होय तब सब काममें बेपरे (गुण) शीतल है नेत्र रोग तथा कानोंकी पीडाको दूर करता है. और कानका बहना निश्चय दूर करताहै.

अथ तांबा मारन.

शुद्ध तांबा दो तोले लेकर बनगोभीकी एकसेर लुगदीमें रखदे फिर दश तोले मुलतानी मिट्टीसे कपड़मिट करके सुखावै तब दोमन बिनुआंकंडोंमें रखके फूंकि दे तो भस्म होय सब रोगोंको हरै पानी शोषण है खुराक आधा चावलसे एक चावल तक.

अथ तांबा मारन की दूसरी विधि.

सागवीब एक जातकी बूटीहै तांबा उसके पत्ताकी लुगदीमें रखके फूंक दे तो सुवर्ण होय इसमें कुछ संशय नहीं जो फिर फूंके तो भस्म होय जो कोई खावे उसकी सूर्यकी ज्योतिकेसमान ज्योति होय लोकप्रसिद्ध होय सब रोग नाशहों सोनारस सेवै, तो बहुत दिन जीवै. इसका गुण कुछ वर्णने योग्य नहीं है.

तांबा मारनेकी तीसरीविधि.

काकजंघा एक बूटी है फागुनके महीनेमें पैदा

होतीहै उस बूटीकी लुगदीमें एक तोला तांबा रखके कपड़मिट कर सुखायके गजपुटमें फूंकदे तो भस्म बहुतही अच्छा होय खानेसे लोक प्रसिद्ध होय.

तांबाकी भस्म खानेके गुण.

छंद—ताँबेकी खाक बनायके एक रती भर पानमें कोइभि खावै ॥ पुष्ट शरीर बने अति सुंदर साँझ सबेरे जो दूध सो पावै ॥ तज खान व पान अहार तजै सब दूधरु भात जो भोजनकीजै ॥ बल होय शरीर बनैं निश्चय पर सात दिना यह साधन कीजै.

अथ रूपा मारन विधि.

तितली जो गेहूं चनाके खेतमें होती है उसके रस में रूपा भिगोय रक्खे फिर उसी तितलीकी आध सेर लुगदीमें एक तोला रूपा रखके कपड़मिट करके गजपुट आंच देय तो भस्म होय खुराक एक चावल अनुपान मुवाफिक सब रोग हरै.

रूपा मारनेकी दूसरी विधि.

सिक्का रुपइया अग्निमें लाल करिके मेहँदीके रसमें आठ दफे बुझावे तब मेहँदीकी पत्ती आधा सेर ले लुगदी करिके बीचमें सिक्का रुपइया रखके कपड़ मिट करके सुखायके दोगजपुट आंचदे तो भस्म होय. खुराक एक चावलसे डेढ़ चावलतक.

रूपरस खानेका गुण.

छंद—रस रूप विधान कहूं नर एक रतीभर पानमें ताहि जो खावै ॥ कफ अरु कास औ खांस हरै सब लागती भूख अरु काम जगावै ॥ अति गर्म जो शरदकी हानि करै सब अन्नके रोगको तुरत नशावै ॥ ताहिते जानिकरै यह साधन निष्ठ शरीरको पुष्ट करावै.

अथ सोना मारन विधि.

कामदेव झमकोइया एक बूटी है उसकी लुगदीमें एक तोला शुद्ध सोना रख कपडमिट कर सुखायके तीन गजपुट आंचदे तो भस्म होय लोकप्रसिद्ध होय. खुराक आधा चावल, अनोपान मुवाफिक सब रोग हरै.

अथ सोना मारन दूसरी विधि.

एक सेर कचनारके पत्तोंके बीचमें आधा तोला सोना रखके गोला बनाय कपडमिट करिके सुखाके दोगजपुट आंचदे तो बहुत उत्तम रस बनै.

गुण ॥ छंद ॥

सोनेकी खाक बनायके सुंदर चावल एक चिरों-जीसें खावै॥पुष्ट शरीर बढै अति वीरज लागति भूखरु काम जगावै ॥ श्वास औ कास सफोदर ओदर आदि जलंधर रोग नशावै ॥ रोग हरै सबही तनुके अनो-पान मुवाफिक जो कोइपावै.

अथ लोहा मारन विधि.

अच्छा स्वच्छ लोह लेकर रेतै तब अनारका रस एक सेर और चार तोला लोहाका रेत पहले एक बरतनमें रस डालदे फिर उसमें रेत डालदे पंद्रह दिन धूपमें रक्खे तब आधामन गोवरीमें फूंक दे तौ बहुत उत्तम लोहासार रस बनै अनोपान मुवाफिक सब रोग हरै.

अथ पोलाद मारनेकी दूसरी विधि.

अच्छा स्वच्छ पोलाद रेतायके धरै फिर भंग्री एक बूटीहै उस बूटीके पत्ताकी लुगदीमें रक्खै पोलाद बीचमें रखिके गोला बनाय कपड़मिट कर सुखाय गजपुट आंचदे तो बेंगनी रंग रसबनै सब कामको मातदिल है आमवात आंव और खांसी इन सब रोगों को दूर करता है अनोपान मुवाफिक सब रोगोंको हरण करताहै.

अथ त्रिवंग मारन.

शुद्ध एक तोला, शुद्ध रांगा एक तोला, शुद्धसीसा एक तोला, लेकर तांबापर रखिकै चूल्हेपर रक्खै उसके नीचे अग्नि जरावै करछुलीसे चलाता जावै और हरप्रियाका रस छोडता जावै तो आध पंटामें नौरंगीके वरन रस बनैगा अनोपान मुवाफिक सब रोग हरै कैसो ज्वर नया पुराना होय तो एक चावल रस और दो मासे चिरैता दोमासे पीपरी दोनों एकमें

मिलाके कूटिके कपड़छान करिके शहदके साथ सांझ सवेरे खाय तो सर्व प्रकारके रोग हरै इसमें कुछ सन्देह नहीं.

अथ वंगरसबनानेकी क्रिया.

शुद्ध रांगा चार तोले लेकर गलावे नीचे अग्नि जलावे ऊपरसे अमलीके छाल व पीपरीके छाल दोनों का चूर्ण करिके छोड़ता जाय और राँगाको चलाता जाय तो चालीस मिनटमें भस्म होय बहुत उत्तम वंगरस बनै.

वंगरस खानेका गुण.

छंद–वंग सदाशिवको गुणदायक खाय नपुंसक मर्द भयेहैं ॥ खातहि रोग हरै तनुके बल पुष्ट शरीर अतुल्य भयेहैं । अनोपान मुवाफिक पान करै षट भाँति कि व्याधिन दूरि कियेहैं । दिन सातमें काम सुधारनीके अत्यंत नपुंसक मर्द भये हैं.

अथ सीसा मारनविधि.

शुद्धसीसा लेकर तांबापर रख गलावै फिर केवडाके डंडासे चलाता जावै और घोटता जावै इसी हिकमतसे एक घंटामें भस्म होवै फिर उस रसको घीकुवारके रसमें आठ पुटदे फिर भंगराजकी आठ पुटदे फिर गोदनदुद्धीकी आठ पुटदे फिर गोला

बनाय कपड़मिटकरके गजपुट आंचदे तो बहुत अच्छा नागरस बनै लोकप्रसिद्ध होयं अनोपान मुवाफिक सब रोग हरै, खुराक एक रत्तीसे डेढ़ रत्तीतक गर्म मिजाज वालेको ठंढे अनोपानमें देवै इसी विधिसे सब रोग हरै.

अथ सिंगरिफ मारनविधि.

सिंगरिफ चार तोला लेकर नीबूके पत्तामें खल करके टीकरी बनायके गौरी यंत्रसे आंचदे जो पारा ऊपरकी हंडीमें उड़के लगे तो सब काममें बेपरै और सब रोग हरै.

अथ गंधक शोधन.

गंधकको घीमें लगावे दूधमें बुझावे इस तरह चार दफे लगावे बुझावे और दो दफे भंगराजके रसमें बुझावे तो शुद्ध होय सब काममें बेपरै (गुण) बीस प्रकारके परमाको दूर करै और खांसी दमा वगैरह सब रोगों को हरै और छःमहीना गंधक सेवनेसे उसकी दृष्टि गिद्धके समान होय फिर उसके मैलसे तांबेका सोना बनै इसमें कुछ संशय नहीं है क्यों कर कि गंधक सब धातुको जलाताहै.

अथ पारा मारन विधि.

पारा लेकर सीसीमें डालके उसीमें मकोईका रस डालके एक दिन झकझोरै तब निकालके गूलरके दूधमें खल करै तब फिर हींगका मूसा बनाइके उसी

पाराको मूसामें रखकर मुलतानी मिट्टीके साथ कपड़ मिट करके सुखावे तब गजपुटमें फूंकदे और शीतल होय तब खानेको देय एक रत्ती भर पानमेंखावै तो नामर्दको मर्द करै और कोढ़को शिरसे पैरतक निरोग करै और आचारपनसों रहै तो अजर अमर होय.

पुनि दूसरी विधि.

शुद्धपारा लेवे और एक माटीकी परई अग्निमें लाल कर निकालके बाहर रक्खे फिर काले धतूरेका रस निकालके परईमें डाल अग्निपर चढावे पीछे पारा डाले तब रस जरै और पारा भस्म होय सब रोगोंको हित है अनोपान बदलता जाय तो सब रोग हरै और खट्टा मीठा तीता ये सब चीज त्याग करै.

जस्ता मारन विधि.

शुद्ध जस्ता लेकर तांबापर गलावै और बथुईका रस छोड़ता जाय कलछुलीसे चलाता जाय सवा घंटामें भस्म होय सब काममें बैपरै (गुण) कडू है हलका है शीतलहै कफ और खाज दूर करताहै अनोपान मुवाफिक सब रोग हरता है.

कीट मारन विधि.

पुरानी कीट आधा सेर लेके त्रिफलाके रसमें सात दफे ताव करिके बुझावे और नीबूके रसमें सात दफे

बुझाकर आंवरासार गंधकमें खल करके गोला बनायके गजपुटमें फूँक देवै तो बहुत उत्तम रस बनै (गुण) पांडुरोग प्लीहा आमवात उदररोग इत्यादिक सब रोगोंको हरै है.

मृगांक रस बनानेकी विधि.

पारा एक तोला, रांगा एक तोला, आँवरासार गंधक एक तोला, नौसादर एकतोला, ये सब शुद्धले पहिले पारा और आंवलासार गंधक. दोनोंको खल करै पीछे आठ टोप रेंडीका तेल खलमें डारि दे तब रांगा और नौसादर गलायके डारै. फिर दोदिन खल करै पीछे एक अग्नि सीसी कांचकी ले मुलतानी मिट्टीकी सात कपडमिट कर अच्छी तरहसे सुखावे फिर सीसीमें दवाई रखके कोइयाकी भट्टीमें सीसी रक्खै मुख सीसीका खुलारक्खे अग्नि जरावें एक लोहेकी सींकसे पन्द्रह २ मिनटमें सीसीमें हिलावे पहिले काला धुआँ निकलै पीछे हरा निकलै. फिर पीला निकलै फिर लाल निकलै. तब अग्नि आहिस्तसे बुझादे शीतल भयेपर सँभारिकै रस निकालिले सोने के वरन रस होय. सोनेके भाव रसका मोल होय इसका गुण कुछ वर्णन योग्य नहीं है. जिस रोगपर देय सो रोग हरै. और जो नर सेवै अजर अमर होय.

अथ सब रसका उतार.

मिश्री घृत दूध खिलावे तो शांति होय.

अथ शीत पित्तके लक्षण.

शीतल पवनके अधिक लग जानेसे कफ और वायु अतिदुष्ट होकर पित्तके संग मिलकर रुधिरमें प्रविष्ट होजातेहैं व बाहर त्वचामें फैल जाते हैं उसे शीत पित्त अर्थात् पित्ती उछलना कहते हैं शरीरमें सूजन और चकोटा पर जातेहैं और खाज होती है कोप करिके खजुली सहित बहुतसे लाल २ चकत्ते शरीर भरमें पड़ जातेहैं.

शीत पित्तकी दवा.

गुड़ अजवाइन मिलाय १४ दिन खानेसे शीतपित्त नाश होय अथवा सोधा पारा ८ भाग कुचला १० भाग गन्धक सोधा १२ भाग सुंठि १ भाग मिर्चे १ भाग पीपल १ भाग त्रिफला ३ भाग भिलावाँ १ भाग चीता १ भाग नागरमोथा १ भाग बच १ भाग रेणुके बीज १ भाग असगन्ध १ भाग मीठा तेलिया १ भाग कूट १ भाग पीपला मूल १ भाग नागकेशर १ भाग गुड़ २४ भाग इन्होंकी बेर समान गोली बनाय खानेसे शीत पित्त नाश होय.

अमृतादि काढ़ा.

गिलोय हल्दी नींब धनियां धमासा इन्होंका अलग अलग काढ़ा बनाय पीनेसे शीतपित्त नाश होय और पहिले शीत पित्त रोगीको सात रोज मुनजिस पिलावे तब दवा करै.

अथ अम्लपित्तका लक्षण.

अन्न पचै नहीं कडुई खट्टी डकारें आवें शरीर भारी रहै हिया और कंठमें दाह होय भोजनमें अरुचि हो ये लक्षण अम्ल पित्तके जानो.

अम्ल पित्तकी दवा.

गिलोय चीता नींब कडू परवर इन्होंका काढ़ा बनाय शहद मिलाय पीनेसे अम्लपित्त नाश होय.

मधु पीपली योग.

पीपलका चूर्ण करि शहदमें मिलाय चाटनेसे अम्ल-पित्त दूर होय.

पुनः अम्ल पित्तकी दवा.

चिरायता नींब त्रिफला कडूपरवर बांसा गिलोय पित्तपापड़ा भाँगरा इन्होंका काढ़ा बनाय शहद मिलाय पीनेसे अम्लपित्त नाश होय.

काढ़ा.

कटैली गिलोय बाला इन्होंका काढ़ा बनाय पीनेसे श्वास, कास, ज्वर छर्दि अम्लपित्त ये नाश होयँ.

अथ लक्ष्मीविलास तेल.

इलायची चंदन रासना लोङ्ग कपूर कंकोल नागरमोथा वलिधा दालचीनी दारुहल्दी पिपली अगर तगर जटामासी कूट ये सब दवा सम भागले और सब दवासे तिगुनी रालले पीछे इन सबोंका डमरू यंत्रसे तेल निकालिले इस तेलका शरीरमें मालिश करनेसे शिरसे पाँवतकके रोग हरै और इस तेलके मालिश करनेसे राजाओंसे मुलाकात होतीहै.

हरताल रस बनानेको फकीरकी बूटी.

स्नान करिके मंत्र जपके अच्छे दिन असगन्धको उखाड़ि लावे उसकी लुगदीमें हरताल तबकी रखके मुलतानी मिट्टीसे कपड़मिट करके सुखावे फिर पाँचसेर विनुवा कण्डोंमें फूंकि देय एक आँचमें भस्म सफेद होय इस रसके खानेसे सर्व कुष्ट जायँ लोक प्रसिद्ध होय और त्यागी भक्त मनुष्य फूँके.

संखिया मारन विधि फकीरकी बताई हुई.

...संखिया ६ तोले लेके दोसेर आकके दूधमें.

खल कर सुखावे फिर कपरौटी करके ९ सेर बिनुवा कण्डोंमें फूंकिदे तो सफेद भस्म होय और शरीरभरके रोगोंको हरै खुराक आधारत्ती पथ्य घी दूध मिश्री.

अथ मूत्रकृच्छ्रका लक्षण.

जांघ पेट लिंगमें पीड़ा होय और थोरा २ बार बार मूत्र उतरे तो बात से जानना और यदि पीला लाल औ गरम मूत्र कष्टसे उतरै और बहुत पीड़ा से उतरै तो पित्तका जानना और यदि पेडू और लिंग दोनों भारी हों और दोनों में सूजन होय मूत्रमें झाग आवे मूत्र कष्टसे उतरै तो कफ का जानो कफ में बमन हित है पित्त का होय तो जुलाब दे और बात का होय तो बस्ति कर्म हितहै.

काढ़ा.

गिलोय सुंठि आमला असगन्ध गोखुरू इन्होंका काढ़ा बनाय पीने से मूत्रकृच्छ्रको नाशै.

कुश कासादि काढ़ा.

कुश कास डाभ शर इष इन्होंका काढ़ा बनाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्र को नाशै.

मूत्र कृच्छ्रकी दूसरी दवा.

ककडीके बीज मुलहटी दारुहरदी इन्होंके चूर्णको

चावलके धोवनके साथ पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाशै (अथवा) आँवलेका रस दारुहर्दी शहद मिलाय पीनेसे नाश होय.

दुग्ध योग.

दूधमें गुड़ मिलाय थोरा गर्म करि पीनेसे सब प्रकारका मूत्रकृच्छ्र दूर होय.

यवाखार योग.

५ मासा मिश्री मिलाय यवाखार पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाश होय संशय नहीं.

गोखुरू का काढा बनाय यवाखार मिलाय खाने से पुराना मूत्रकृच्छ्र दूर होय.

कुडाकी छालको गौके दूधमें पीसि पीने से भयंकर मूत्रकृच्छ्र नाशहोय अथवा ताकमें यवाखार मिलाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाश होय अथवा सनायकी पत्ती ककडीके बीज मिलाय खानेसे मूत्रकृच्छ्र नाशै.

अथ चार प्रकारका मुञ्जिस.

उनाव विलायती ५ नग संवरा ५ मासे चिरायता ६ मासे गाजुवाँ का पत्ता ५ मासे सौंफकी जड ९ मासे मकोय सूखी ४ मासे कासनी की जड़ ९ मासे यह सब दवा मिलायके पाव भर पानी में शाम

को भिगोय दे सबेरे चुरावै जब आधा रहजाय तो छानिके पिये इसी विधि से सात रोज पिये पीछे जुलाब लेतो निरोग होय.

दूसरा मुन्जिस.

गाजुबाँ की पत्ती ६ मासे काली दाख ९नग गुलाब के फूल सूखे९मासे मुलहटी पत्ती६मासे सौंफकी जड़ ६मासे सनायकी पत्ती ३मासे अंजीर का छिलका९मासे गुलकन्द २ तोले सब दवा तीन पाव पानी में शामको भिगोयके सबेरे चुरावै जब आधा शेष रहै तो छानिके पिये तो शरीर भरेके रोगोंको नाशै ९ दिन पीने केपीछे जुलाब दे.

तीसरा मुन्जिस.

कच्ची अथवा गीली सौंफ १ तोला,मकोय सूखी १ तोला मुनक्का काला १९ नग. खतमी का बीज १ तोला तुख्म खब्बाजी १तोला गुलक्कन्द२तोला मिलाय पानीमें शामको भिगोवै सबेरे चुरावै जब आधा सेर रहै तो छानके पिये शरीरकी नस नसको फायदा करै.

चौथा मुन्जिस.

सनाय ६ मासे गुलाबके फूल ६ मासे लसोढ़ा सूखा ६ मासे मुलहटी ६ मासे कालादाना ६ मासे

गावजवाँ ६ मासे बनफ़शा ६ मासे मुनक्का ७ नग उन्नाव विलायती ५ नग मिश्री २ तोला सब दवा एक में मिलाय शामको भिगोय सवेरे एक सेर पानीमें चुरावे जब आधासेर रहै तौ छानिके पीनेसे शरीरभरके रोगोंको नाशै.

इति श्री मुन्शी भगवान् प्रसाद शिष्य भक्त भगवान् दास विरचित वैद्यक रसराज महोदधि नव विष, नव उपविष शोधन, खाने के गुण, सातो धातु और सातो उपधातु मारन,खाने के गुण,मूत्रकृच्छ्र के लक्षण, खाने की दवा, अच्छी २ मुन्जिस शीत पित्तके लक्षण और खानेकी दवा अम्ल पित्तका लक्षण और खानेकी दवा लक्ष्मी विलासतेल इस्तारमारन शंखियामारन नाम दूसरा खंड समाप्त ।

अथ तीसरा खंड.

(उपदंश) फिरंगवाय–गरमीका वर्णन.

वेश्या स्त्री तथा रजस्वला तथा चंडालिनी स्त्रीके पास जानेसे गर्मी पैदा होतीहै तथा गर्मीवाला मनुष्य जिसजगह पेशाब करे उसकी जगहपर पेशाब करनेसेभी गर्मी पैदा होतीहै और वात पित्त और कफके कोपसे फिरंग वायरोग तीन तरहसे पैदा होताहै.

अथ गर्मीका भेद.

गर्मीवाले मनुष्यको चाहिये कि छिपावै नहीं इलाज बहुत जल्दी करे बहुत मनुष्य शर्मके सबबसे किसीसे कहते नहीं मूर्ख लोगोंकी दवा करते हैं दवा लगै तो अच्छाहै नहींतो कोपकरके तमाम शरीरपर फैल जाती है पीली पीली फुन्सी पैदा होतीहैं और ज्यों ज्यों दिन बीतताहै त्योंत्यों अधिक दुःख होताहै इन्द्रीपर घाव शरीरपर कोढके समान चट्टा फैल जातेहैं और पेडूमें बद निकलतीहै कुछदिनमें शाना पकड लेताहै चलने फिरनेकी शक्ति नहीं रहती असाध्य होजाताहै जीव नाश होजाताहै इससे गर्मीवाले मनुष्यको चाहिये कि शर्म नहीं करै अच्छे उस्ताद या हकीमके पास जाके इलाज करै जो हकीम बोलै वही खावे पथ्यसे रहै और कोई बुरी चीज न खाय न जीभ की चालाकी करै तो दश दिनमें अच्छा होय और गर्मीकी निशानी तो तीन पुश्त तक रहती है.

अथ उपदंशका लक्षण.

ज्वर होय भूख नहीं लगै मुख काला पड़जाय शरीरकी द्युति बदल जाय झाडा पेशाबमें कडक होय ये लक्षण उपदंशकेहैं.

अथ दवादेनेकी विधि.

उपदंश वाले मनुष्यको जुलाब देना पीछे इन्द्रिय जुलाब देना और फिर घाव बंद शाना इत्यादिका इलाज करे.

अथ गर्मीका पाहिला इलाज.

मकोईकी पत्ती, सनायकी पत्ती सौंफ मुनक्का गुलाबके फूल, अमिलताश ये सब दवाई ले आधासेर पानीमें चुरावे जब पानी आधा रहजाय तब छानके गर्मीवाले मनुष्यको देय इसीतरहसे तीनदिन देवे पीछे दूसरी दवा करे.

दूसरा इलाज.

शुद्ध जमालगोटा एक तोला. आंवरा चार तोला इन दोनों को कूटकर कपड़छान करके एक दिन नींबूके रसमें खल करे पीछे मिर्च बराबर गोली बांधे तब ठंढे पानीके साथ एक गोली सांझ और एक सवेरे खानेको दे तो पंद्रह दिनमें गर्मी दूर होय.

तीसरा इलाज.

शुद्ध शंखिया अकरकरा सफेद खैर भंगराज और सफेद सुपारी ये सब चीज छः २ मासे ले कपड़छान करके पानीमें खल करै फिर बाजराके समान गोली बाँधे एक गोली शाम और एक सबेरे पानीके

साथ खानेको दे तो गर्मी दूर होय आठ दिनमें असाध्य रोग भी दूर करै.

अथ तेलबनानेकी विधि.

मिरचा हरा पाव भरि तिल्लीके आधे सेर तेलमें चुरावे जब मिरचा जरि जाय तब तेल मालिश करै तो गर्मी दूर होय.

अथ कडक पेशाबकी दवा.

शुद्ध राल पावभर, मिश्री पावभर एकमें मिलायके कपड़छान करके एक तोला खानेको दे तो जितना पानी पीवै तितना पेशाब होय. और दवा दिन भरमें तीन दफे करै तो कडक पेशाब छूटै.

अथ इन्द्री जुलाबकी दवा.

गुलारमनी एक जातकी मिट्टी है उसको ९ मासे लेवे और ९ मासे कलमी सोरा दोनोंको एकमें मिलायके तीन सेर पानीमें मिलावै पीछे रोगीको पीनेको दे तो जितना पानी पीवै तितना ही पेशाब बहुत खुलाशा होय.

शंखियाकी गोली गर्मीपर.

शुद्ध शंखिया एक तोला और पापरीखेर दो तोले एकसौ बँगलापानमें दो दिन खल करै तब बजरीके समान गोली बांधकर एक गोली शामको और एक

सवेरे पानीके साथ खानेको देवे तो उपदंश दूर होय. पथ्य दूध भात और खट्टामीठातीता वगैरह त्याग करै.

पुनःदवा

मंदारकी लकडी जलाई हुई दो तोले मिश्री दो तोले दोनोंको मिलाकर छःमासे शाम व सवेरे खाय तो गर्मी आठ रोजमें दूर होय.

इन्द्रीका मलहम.

काली मेल दो तोले दश मासे,मेंहदीका बीज सात मासे, रूमीमस्तगी सात मासे, सुरंजन सात मासे निसोत साढे सत्रह मासे. रोगन गुल तीन तोले. रोगन जितून पांच तोले नीबूकी पत्ती एक तोले, बकरीकी चर्वी ग्यारह तोले मिलाकर मलहम तयार करै तव सब शरीरपर मालिश करै जिधर जिधर चट्टा हों उधर उधर करै तो बहुत जल्दी चट्टा फुन्सी घाव इत्यादिक दूर होयँ.

अथ इन्द्रीकी दवा ।

काली मेल एक तोले. कवेला दोतोले. सफेदा दो तोले, प्युली दवा ६ मासे मसका घी धोयाहुआ छः तोले मिलाइके घावपर लगावै तो बहुत जल्दी घाव अच्छा होय असाध्य हुआ आदमी अच्छा होयँ.

अथ टाँकालेप.

मुर्दा संग १ पैसा भरि, राल एक पैसा भरि और घी चार तोले मिलायके मलहम तय्यार कर घावपर लगावै तो तुर्त टाँकी चट्टा अच्छा होय.

फिर लेप.

त्रिफला जलाया हुआ मधुमें मिलायके घावपर लेप करै तो बहुत दिनकी गर्मी अच्छी होय घाव भर-पूर होजाय घावकी जगह पहिचानमें नहीं आवै.

अथ उपदंशकी हुक्का पीनेकी दवाई.

शिंगरफ माजूफल मदारकी जड और भंगराज ये सब चीजें एक एक तोला लेकर एकमें खल करै तब नवमासे चिलममें रखके खैरकी लकड़ीके अंगार धर पीवै तो सब तरहकी गर्मी दूर होय इसके बराबर दूसरी दवा नहीं है.

अथ गर्मीका हुक्का पीना.

इन्द्रायणकी पत्ती और इन्द्रायण की जड़ सोरा भंग-राज ये सब मिलाके चिलममें रखके पीवै तो गर्मी जाय.

अथ आककी गोली.

आककी जड एक तोला पांच मासे मिर्च ६ तोले दोनों एकमें खल करके छोटी मटरके बराबर गुडमें

गोली बाँधे और शाम सवेरे एक एक गोली खाय तो अच्छा होय.

अथ अरुशकी गोली.

अरुशकी जड दो तोले मिर्च दोतोले मिलाके खल करके चना बराबर गोली बांधकर शाम सवेरे एक २ गोली खाय तो बहुत जल्दी अच्छा होय.

अथ हुक्का पीना.

खुरसानी अजवायन ढाई मासे शिंगरफ पांच मासे नीलाथोथा दोरत्ती अकरकरा पांच मासे आककी जड दश मासे ये सब दवाई कूट कर बेरकी लकड़ी की आगसे चिलमपर रखके पीवे तो बहुत जल्दी अच्छा होय फिरंगवाय जाय.

तथा.

कसौंजीकी जड़ व पत्ती एक तोला पांच मासे मिर्च ग्यारह मासे दोनोंको भांगके समान घोटि पीवे तो बहुत जल्दी अच्छा होय उपदंश जाय.

तथा.

शिंगरफ अकरकरा नीबका गोंद माजूफल सोहागा ये सब चीज एक एक तोला मिलाके चिलम पर रखके ऊपरसे अंगार रखके पीवे तो सब तरहकी गर्मी जाय इसमें संशय नहीं.

अथ घावको लेपन.

जराया हुआ नीलाथोथा छःमासे और मोम एक तोला घी दो तोला एकमें मिलाय गरम कर घावपर लेप करै तो उपदंश चट्टा फुन्सी सब दूर हों.

पुनः दूसरा लेप.

कडू तेल पाव भर मोम पांच टंक कथेला बारह टंक सिंदूर दो टंक शोरा दो टंक मुरदाशंख दो टंक सब बारीक पीस घीसें मिलाके मलहम तय्यार करै फिर जहां जख्म भया होय वहां लगावै तो बहुत जल्दी अच्छा होय.

अथ मलहम बनाने की विधि.

सफेद राल छःमासे रसकपूर छःमासे गुलाबका तेल दो मासे सब एकमें मिलाके एकसौ दश दफे पानीसे धोवे तब घावपर लगावे तो सब प्रकारका जख्म दूर होय.

मलहम बनानेकी दूसरी विधि.

नेनू एक तोला लेकर एक सौ दफे पानीसें धोवे फिर जख्म पर लगावे तो घाव फौरन् अच्छाहोय.

अथ बद का लेप.

नागफनीका एक पट्टा लेकर उसको फाड़के आंबाहरदीका चूर्ण भरै फिर कपडमिट करके अग्निमें भूँजिले तब बदपर बांधे तो बद तीनदिनमें

अच्छी होय (पुनः बदकालेप) तीसी कूटिके गर्म करि के बद पर बांधे तो बहुत जल्दी बैठ जाय. (पुनःलेप) आंबाहरदी तीसी ईसबगोल घीकुवारिका गोंद सब दवा एकमें मिलाकर पीसके गर्म करके बदके ऊपर बांधे तो बहुत जल्द बद अच्छी होय. (पुनः लेप) आंबाहरदी घरकारंडस चूना गुड सब बराबर पीस लेप करै तो बद पके फिर फूटिके बहुत जल्दी अच्छी होय. (पुनः लेप) रेंडीके बीज हर रेंडीका तेल सिरका सब एकमें मिलाके गरम करके बदके ऊपर बांधै तो जो थोड़े दिनकी बद हुई होय तो बैठ जाय. जो ज्यादह दिनकी होय तो पक फूटके बहुत जल्दी अच्छी होय. इसमें संशय नहीं (पुनः बदपकानेका लेप.) नीलाथोथा ६ मासे. आंबाहरदी एक तोला, राल एक तोला. गूगल-६ मासे. गुड एक तोला. सब एकमें पीस गरम कर बदपर बांधे तो बहुत जल्दी फूट जाय. (पुनःलेप) मेथी, हरदी, रेंडीका तेल, मिलाकरके बदपर बांधे तो बद बहुतजल्दी अच्छी होय (पुनः) मदारके पत्तामें रेंडी का तेल लगाके बदपर गरम करके बांधै तो अच्छी होय. फिर धतूरेके पत्तासे सेंकदे तो बहुतही गुण करै.

अथ सोना गांठियेका इलाज.

रसवाका माजूम गर्मीके चट्टा फोडा गाठिया ब-

लीज खूनको दूर करताहै. और नया खून पैदा करताहै. (दवा) उसवा मगरबी साततोले सनायकी पत्ती अढ़ाई तोले सौंफ अढ़ाई तोले विसपंज दो तोले लाल चंदनकाचूर्ण एक तोला मिश्री सात तोले शहद सात तोले पहिले उसवाको एक सेर पानीमें चुरावे जब आधा पानी रहजाय तब मिश्री शहद डारिके चासनी करै पीछे कपडछान करके चासनीमें मिलाके वरतनमें रक्खै खुराक ६ मासेसे एक तोला तक यह माजूम बहुत गुणकारीहै.

दूसरी खानेकी दवा.

रेंडीकी एक दानाकी छाल निकालके एक दिन एक दाना दूसरे दिन दो दाना. इसी तरहसे दररोज एक दाना बढ़ाताजाय जब सातदिन होय तो एक दाना कमती करताजाय. खाते खाते एक दाना अंतमें रहजाय तब सब तरहका जोडा साना और गठिया दूर होय.

मालिशका तेल.

अलसीका तेल, तिल्लीका तेल, करू तेल ये सब तेल आधा आधापाव लेकर और धतूरेके पत्ता जड व फल फूल इनको कूटकर तेलमें चुरावै जब

दवाई जल जाय और तेल मात्र रहिजाय तब मालिश करे तो शरीर भरे का जोडा साला सब दूर होय.

१ तंबाकूका तेल.

तंबाकू आध सेर लेकर शामको डेढ सेर पानीमें भिगोय दे सबेरे पानी छालि एक सेर तिल्लीका तेल डालके मधुरी आँचसे चुरावे, जब पानी जलजाय तेल मात्र रह जाय तब मालिश करै तो गठिया जोडा साला वगैरह दूर होयँ.

२ तंबाकूका तेल.

मालकाँगनी २ तोले कायफल एक तोला बका-इन १ तोला सोंठि एक तोला कतीरा १ तोला जाय-फल १ तोला अकरकरा एक तोला इलायची १ तोला लौंग १ एक तोला हल्दी १ तोला समुद्रखार १ तोला कुचिला १ तोला बदाम एक तोला गरी १ तोला करंज १ तोला समौर १ तोला कुलंजन एक तोला काला धतूर १ तोला मंदार १ तोला सहिंजन १ तोला गोस एक १ तोला मकोय १ तोला भंगराज १ तोला कडूतेल १ सेर तिल्लीका तेल १ सेर रेंडीका तेल आधा सेर पहिले यह सब दवा आठ सेर पानीमें चुरावै जब आधा पानी रहजाय तो छान कर तेल डालके मधुरी आंचसे चुरावै जब सब पानी जलजाय तेल मात्र रह

जाय तब मालिश करै तो जोडा गँठिया साना सब दूर होयँ गरमीके बात रोगको बहुत फायदा करता है.

अथ काढ़ा.

सौंफ, कासनीके बीज, मकोय, हंसराज, सौंफकी जड़, कासनीकी जड, मुलहठी, बबूलके फूल सब मिलाकर पानी डालके काढ़ा करिके पीवे तो जोड़ा साना गँठिया दूर होयँ तथा पोस्ताके ढोढका काढ़ा गुण्य करताहै.

गँठियाकोचूर्ण.

सुरंजन दो तोले, सनाय २ तोले, हर्र एक तोला, निसोत्त सफेद दशमासे, बादाम दश मासे, मेहँदी की पत्ती सात मासे, केसरि चार मासे और सबके बराबर मिश्री मिलाकर कपड़छान करके दो तोले नित सबेरे फांके तौ जोडा सानाको बहुत फायदा करताहै.

अथ गोली गँठियापर.

एलवा दोतोला ग्यारह मासा. काबिली हर्र एक तोला दश मासा. शुद्ध निसोत सात मासे सुरंजन सात मासे शुद्ध गूगल सात मासे. सोंठ, चीता, राई, सेंधा-नोन इन्द्रायणका गुज्झा मजीठ एक २ तोले आठ २ मासे अजवाइन पीपल कालीमिरच पौने दो

दो मासे मिश्री चार मासे सब कूट कपडछान करिके पानीमें गोली बनाकर तादाद गोलीकी दश मासे सबेरे एक गोली खाय तो दो दस्त आवैं गँठिया जोडा साना गरमीके सब रोग दूर होयँ.

उपदंशका लेप.

कनेरकी जड पीसकर लेप करै तो असाध्य गर्मी दूर होय.

इति श्री मुन्शी भगवान् प्रसाद शिष्य भगवान्दास
विरचित रस० उपदंश फिरंगवाय पांच प्रका-
रकी गर्मी क्वाथ हुक्का तेलादिविधियत्नवर्णनं
नाम तीसरा खंड समाप्त ॥ ३ ॥

चौथा खंड.

जवारिस हिन्दी.

कलेजेकी गर्मीको तर करताहै कब्जियतको दूर करताहै भूखको लगाताहै (दवा) लौंग सात मासे बाल-छड साढे तीन मासे, अगर खास साढे तेरह मासे मिश्री तीन पाव सवा छटांक गुलाबका अर्क आधा सेर पहिले गुलाबका अर्क और मिश्री दोनोंकी चास-नी करे तब दवा कूटके कपडछान करके चासनीमें मिलावै खुराक नौ मासे सबेरे.

जवारीस सहरान.

कलेजेके दर्दको दूर करताहै पेट फूलाहोय तो उसको फायदा करताहै. जिसको बहुत कडक पेशाब होय उसको बहुत फायदा करताहै (दवा) लौंग दारचीनी बालछड जायफल दोनो इलायची रूमी मस्तंगी, हुब बेलसा, सक मुनियां केसर ये सब दवा सोलह २ मासे ले निसोत दोतोले चार मासे सब दवाके बराबर मिश्री लेना शहद और मिश्री इन दोनोंकी चासनी करिलेय फिर दवा कपडछान करके चासनीमें मिलाय देय खुराक एक तोले सबेरे खावै.

अथ जवारीस तीसरी.

जवारीस जुलाबहै पेटके गलीजको साफ करताहै. (दवा) निसोत दो तोले ग्यारहमासे सोंठि सत्रह मासे मिश्री चार तोले चार मासे मिश्रीके चासनी करिकै दवा कूटके चासनीमें मिलाके तय्यार करले खुराक एक तोला सबेरे खावै.

अथ जवारीस दूसरी

हिंदुस्तानी.

शरीरकी गाँठि गांठिको, पेट, शिरके दर्दको दूर करता है (दवा) सक मुनिया दो तोले ग्यारह मासे छोटी और बडी इलायची दारचीनी सोंठि

तज नागकेसर लौंग कालीमिरच सब दवा साढे सात २ मासे लेना मिश्री २७ तोले ग्यारह मासे आधा सेर मधु, मधु और मिश्रीकी चासनी करिके दवा कूटके चासनीमें मिलाके जवारीस तय्यार कर लेय खुराक एक तोला सवेरेके वक्त खावे.

अथ जवारीसजारीनोस.

बालछड इलायची सली खाँदारचीनी कुलिंजन लौंग नागरमोथा सोंठि कालीमिरच पीपरि कूट दरियाई अगर कचा अस्साहून मूलीके बीज चिरैता रूमीमस्तंगी सब दवा एक एक तोलेले नागकेसर छःमासे मिश्री दश तोले शहद आधा सेर मिश्री और शहदकी चासनी करिके सब दवा कूट कपडछान करिके चासनीमें मिलाके तय्यार करलेवै खुराक नौ मासे सवेरे शाम खावे तो तमाम शरीरको ताकत देताहै शरदीको कब्जियतको शिर कमरके दर्दको दूर करताहै. सुस्तीको नाश करता और मस्ती लाताहै, बलगम बवासीर सेहुआं दाद चट्टा खुजली इन सबको दूर करता है कालबालोंको सफेद नहीं होने देताहै.

बरश बनाने की विधि.

सफेदमिर्चे अजवायनखुरासानी पांचतोले ले केसर एक तोले साढे पांच मासे बालछड तीन मासे

फरफिऊन तीन मासे, सब दवा कूट करिके कपड छानकर मधुमें मिलायके बरतनमें रख दे यवमें छःमहीनेतक गाड़ रक्खे पीछे निकाल कर तीन मासे सवेरे खाय तो सब रोग हरै.

बरश बनाने की दूसरी विधि.

कालीमिर्च चार तोले, सफेद मिर्च चार तोले खुरासानीअजवाइन चार तोले, उस्तु खुद्दूश एक तोला पीली हर्र दो तोले, अफीम दो तोले, केसर एक तोला फरफीऊन छःमासे, जटामासी छःमासे, अकर-करा छःमासे, सब एकमें मिलाके कूट कपडछान करिके मधुके चासनी करिके दवाई मिलाके बरश तय्यार करै खुराक तीन मासे सवेरे खाय तो एक महीनेमें सब रोग हरै.

अथ आनन्द दाता गोली.

जिसको पाँवसे शिरतक साना पकडे होय चलने फिरनेकी शक्ति न होय उसकी (दवा) एलवा साढे चार मासे निसोत सवा पांच मासे. कालादाना पौने दो मासे. गोरोचन पौने दो मासे. इन्द्रायनके फलका मगज छः रत्ती सवा दो चावल, अजमोदाके रससें चना बराबर गोली बनावै इस गोलीका गुण कुछ वर्णन योग्य नहीं. खुराक एक गोली शामको एक सवेरे.

अथ आनन्द भैरो रस.

शुद्ध शिंगरफ. शुद्ध शंखिया विष. कालीमिरच, पीपरि. शुद्धचौकियासोहागा, सब बराबरिले कपड़ छान करिके दो दिन निम्बूके रससें खल करै तब आनंदभैरो रस तय्यार होवै, खुराक आधा चावलसे एक चावल तक रोगीका बल देखके देवै. सब रोगों-को दूर करताहै.इसका गुण बहुत है लिखने योग्यनहीं.

अजीर्ण कंटक रस.

शुद्ध शंखिया, शुद्ध चौकिया सोहागा. सेंधा निमक सब बराबर लेकर कूट कपडछान करिके अदरखका रस पाव भरि दही पाव भरि निम्बूका रस एकसेर इन सब रसोंसें मिलाके खल करै तब दो रत्तीके बरा-बर गोली बांधे खुराक एक गोली शामको और एक सवेरे खाय तो वात रोग,अजीर्ण,पेटका फूलना दूर होय और सब प्रकारके उदर रोग दूर होयँ. भूख बहुत लगै. यह दवा अमृतके तुल्य है.

त्रिफलादि क्रिया.

त्रिफला एक सेर, मुलहटीएकसेर दारचीनी एक सेर, महुआके फूल एक सेर, सब दवा कूट कपडछान करिके दवाके बराबर मधु और मधुके बराबर घीमें मिलाके तीन दिन पीछे सोते समय खाय तो शरीर

पुष्टहोय. और आँख कान नाक मुँह छाती उदर रोग इत्यादि सब रोग दूर होयँ. बुद्धि बहुत होय. कितनीही मेहनत करै तोभी बल घटै नहीं बहुत दिन जीवै और अजर, अमर होय कुछ दिन सेवै तो आंखोंके रोगको बहुत फायदा करताहै.

राज मृगांक क्रिया.

मिरच छः मासे घी छः मासे तुलसीके पत्ते छः मासे एकमें मिलाके जो कोई कुछ दिन सेवै तो इस क्रियाके बराबर: कोई दवा नहीं यह दवा गरीब अमीर सबके वास्ते है वात रोगको बहुत गुण करतीहै.

हरैं खानेकी विधि,

ज्येष्ठ आषाढ़में हरैं गुडसे खाय सावन भादों में सेंधा नमकसे खाय कुवाँर कार्तिकमें मिश्रीसे खाय अगहन पूसमें सोंठिसे खाय, माघ फाल्गुनमें पीपरिसे खाय चैत वैशाख में मधुसे खाय (हरैं खानेका गुण) जेठमें खाय खांसी जाय आषाढ़में खाय पेट साफ होय सावनमें खाय तो आंखोंकी ज्योति बढ़ै भादोंमें खाय तो कूवत होय कुवाँरमें खाय तो बाल काले होयँ कार्तिकमें खाय तो सब रोग हरै अगहनमें खाय तो मर्द होय पूसमेंखाय तो पुष्ट होय माघमेंखायतो बुद्धिबढै फाल्गुनमेंखाय तो बहुतदेखै चैतमें खाय तो अक्क बढै वैशाख

में खाय तो भूली बात याद होय इसी विधिसे बारहों महीना खाय तो शरीरमें रोग नहीं व्यापै निरोग रहै.

काबुली हरेंकामुरब्बा.

एक सौ हरैं लेकर पानीमें डालदे और थोड़ी सी अच्छी माटी लेकर इसी पानीमें डालदे तीन दिन पीछें सुखावे तब साफ करके मधुमें बारह दिन रक्खै फिर दूसरी मधु लेकर दोनों मधुकी चासनी करके उसीमें हरैं डालदे और फिर ये दवा डाले तज, लौंग, सोंठि, बड़ी इलायची, जायफल, रूमी मस्तंगी ये सब दवाई एक २ तोले दश २ मासे कस्तूरी दोमासे केसरि चारिमासे ले सब दवा मिलाके चालीस दिन पीछे खानेको देय खुराक एक तोले तमाम शरीरको ताकत देताहै दिमागको दूर करताहै मस्ती लाताहै संग्रहणी वात शिर वादी ये सब रोगोंको दूर करताहै आंखोंकी ज्योति बढ़ाताहै कब-ज़ियतको दूर करताहै.

अथ आँवराका मुरब्बा.

अच्छे आँवरा एक सेर लेके एक दिन एक रात पानीमें भिगोदे फिर फिटकरीके पानीमें एक दिन भिगावे तब चूनाके पानीमें एक दिन भिगो पीछे चूना के पानीसे आँवरा धो डाले तब आधा सेर मधु और

भिगावे फिर दूसरे दिन डेढ सेर मधुकी चासनी करके वच डाल चुरावे आठ दिन पीछे खाने को देवै खुराक नौ मासे लकवाको गुण करता है पेट और छातीको ताकत देताहे सुस्ती दूर करता है जो एक महीना खावे तो सब रोग दूर होवें शरीर निरोग रहे मुरब्बा खाय तो खट्टा मीठा नहीं खावे जीसे बचा रहे.

अथ बेलका मुरब्बा.

अच्छा बेलका चार सेर मगज ले थोडा घी डाल पानीमें चुरावे तब मिश्री एक सेर मधु दो सेर मधु और मिश्रीकी चासनी करे फिर छड़ीला तीन मासे बालछड पांच मासे नागरमोथा चारमासे जहर-मोहरा खताई दो मासे जौहर कपूर दो मासे इलायची तीन मासे सब दवा कूट कपडछान करके चासनी में मिला देवै चालीस दिन पीछे खानेको देवै खुराक एक तोला संग्रहणीको दूर करताहे. पेट के सुरीको फायदा करताहै, आंव और खूनी बवासीरको दूर करता है. आँखों व कलेजे की गर्मीको दूर करताहै. प्यास बुझाताहै. यह मुरब्बा सब रोगोंको फायदा करताहै.

अथ जुलाब लेनेकी विधि,

जिस रोगीको जुलाब देना होय उसको पहले नरम २ भोजन करावै. जैसे दूध मिश्री और अच्छा भोजन करावे. जिससे सब रोग दोष प्रगट होवैं. तब जुलाब देवे जुलाब लेनेसे बुद्धि निर्मल होतीहै. इन्द्रियां प्रबल होतीहैं. शरीरकी सुस्ती दूर होतीहै. और आंखकी ज्योति बहुत बढतीहै. वात पित्त कफके लोहूके बिगडे को दूर करताहै. खराब खूनको दूर करताहै. नया खून पैदा करताहै. सब रोगोंको दूर करताहै.

जुलाब पहिला.

कालादाना थोडा भूनकर एक तोला सनायकी पत्ती एक तोला काली हर्र एक तोला लेकर खलमें खल करै तब चना बराबर गोली बनावै एक गोली गर्म पानीके साथ खाय तो बहुत उत्तम जुलाब होय पत्थ्य खिचडी घी स्नान नहीं करै और न सोवै.

जुलाब दूसरा.

शुद्ध जमालगोटा, कालादाना. गरी ये दवा एक २ तोला ले कूट कपडछान करके अदरखके रसमें गोली बांधै, चना बराबर एक गोली गर्म पानीके साथ खाय तो बहुत उत्तम जुलाब होय पत्थ्य खिचड़ी घी.

जुलाब तीसरा.

शुद्ध जमालगोटा तीन मासा, सोंठि चार मासा कतीरा गोंद तीन मासा एकमें मिलायके कूट कपड़छान करके खल करै पीछे चना बराबर गोली बाँधै एक गोली गरम पानीके साथदे ऊपरसे सौंफका पानी पीनेकोदेवै तो बहुतही अच्छा जुलाब होय.

जुलाब चौथा इच्छाभेदी.

सोंठि, मिरच, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध सोहागा सब दवा छः मासे ले और शुद्ध जमालगोटा डेढ तोला लेकर पीछे एकमें सब दवा खल करै पीछे दो रत्तीकी गोली बांधै एक गोली एक तोला मिश्रीके साथ खाय ऊपर जितनी अँजुरी गरम पानी पीवै उतनाही जुलाब होय इसका पत्थ्य चावल और ताक है.

जुलाब पाँचवाँ.

सनाय की पत्ती पच्चीस भरि काला दाना पच्चीस भरि गुड पच्चीस भरि सोंठि पच्चीस भरि, शुद्ध जमाल गोटा पच्चीस भरि. सब दवा एकमें मिलायके खल करै पश्चात् बड़ी मटरके बराबर गोली बाँधै, एक गोली चार मासे मिश्रीके साथ खाय ऊपरसे गरम पानी पीवै तो जुलाब होय पत्थ्य खिचड़ी घी.

जुलाब छठवाँ.

सनायकी पत्ती, गुलाबके फूल, मुनक्का, काला-दाना, अमलताशका मगज, सौंफ, काला नमक सब दवा एकमें खल कर जंगली बेरके बराबर गोली बांधै एक गोली गरम पानीके साथ खाय तो तीन जुलाब बहुत उत्तम होयँ पथ्य मूंगकी खिचडी.

अथ शिररोगकी दवा.

केसरि, मिश्री, घी तीनों बराबर दूधमें घिसके नास लेय तो शिररोग, अधकपारी (आधाशीशी) सूर्यवती मुंहकी पीडा ये सब रोग दूर होयँ.

अथ शिरकी दूसरी दवा.

अदरखका रस. पीपरि. सेंधानमक, गुड ये सब दवा एकमें घिसके पानीके साथ नास लेय तो शिरके सब रोग दूर होयँ.

अथ शिरका लेप.

चौराई दो तोला, सोंठि एक तोला, मिरच छः मासे सब दवा एकमें पीस लेप करै तो शिरके सब रोग दूर होयँ.

शिररोगका दूसरा लेप.

रेंडीकी जड़, सोंठ, कूट सब दवा एकमें पीसके शिरपर लेप करे तो शिरके सब रोग दूर होयँ.

शिररोगपर खानेकी दवा.

त्रिफला, मिश्री, घी एकमें मिलाके एक तोला खाय तो शिररोग दूर होय. इति शिर रोगकी दवा समाप्तः ।

१ अथ कर्णरोगका इलाज.

जो कानकी पीडा बहुत होती होवै तो मूलीका रस पाव भर और मंदारके पत्ताका रस पाव भर और पाव भर कडू तेल इन सब दवाइयोंको एकमें जुरावे और जब दवा जलजाय केवल तेल मात्र रह-जाय तब थोड़ा थोड़ा कानमें डालै तो कानकी पीड़ा और खाज दूर होय.

२ तथा.

कानके पीडा होने पर थोड़ासा समुद्रफेन कानमें डाले और फिर नीबूका रस डालै तो कानकी पीडा व शूल तुर्त हरै.

३ तथा.

सेहुंडके पत्ता और मन्दारके पत्ता दोनोंका रस निकालके गर्म कर कानमें छोडै तो कानकी सब पीडा दूर होय.

४ तथा.

सेंधा नमक, अदरखका रस, शहद, कडू तेल मिला-कर गर्म कर कानमें छोडै तो कान अच्छे होयँ.

५ तथा.

जो कानमें पीब बहता होय और थोड़ा २ शब्द सुन पड़े तो सफेद दूबका रस ८ तोले और मूलीका रस ६ तोले और सेंधानमक १ तोला और तिल्लीका तेल पावभर इसमें सब दवाई डालके चुरावे जब दवा जल जाय तेलमात्र रहजाय तब कानमें डाले तो कानके सब रोग दूर होयँ.

१ अथ आँखोंका इलाज.

अगर आँखोंमें लाली छाई होय और पीडा करती होयँ तो आँवला, हरें, बहेडा यह तीनों दवा एकमें मिलायके पानीमें भिगोयदे पश्चात् चार घडी पीछे पानीमेंसे निकालकर आंखोंमें डाले तो आंखोंके सब रोग दूर होयँ.

२ तथा.

हड छोटी दो मासे, बहेडा दोमासे, आँवला दो मासे, मिरच एक मासे, दालचीनी दो मासे, पीपर एक मासे, सेंधा व सांभरनमक एक एक मासे सब दवा एकमें मिलाकर खल करै पीछे कपड छान करके नीबीके पत्ताके रसमें एक दिन खरल करै फिर एक दिन काली मकोय के रसमें खलकरके सुखायके गोली बांधिके सुखावे पीछे जुदे २ अनोपानसे आंखोंके सब

रोग हरै माखनी होय तो गायके मूत्रमें घिस सात रोज आंजै तो सब रोग दूर होयँ. और फूली होय तो शहदमें घिस आंजै तो पन्द्रह दिनमें फूली अच्छी होय. और नाखूनके वास्ते अदरखके रसमें घिसि आंजै तो अठारह दिनमें दुःख दूर होय. और जो कमती देखाता होय तो बासी पानीमें घिसिके आँजै तो बाइस दिनमें अच्छी होयँ.

३ तथा.

मैनशिल, जीरा, पीपरि, धमासा, मिश्री, सफेद नौसादर, सांपकी केंचुल ये सब दवा बराबर लेकर कूट कपड़छान करके करेलीके रसकी तीन पुट दे पीछे भृंगराजके रसमें तीन पुट दे फिर खूब खरलकरके घुँघुची प्रमाण गोली बांध छायामें सुखावै जो कोई नीबूके रसमें गोली घिसि एक आंखिमें आंजै तो एक अंगका ज्वर जाय और दोनों आँखोंमें आँजै तो शरीर भरेका ज्वर जाय और जो गूगलकी एक गोली का धूप देय तो भूत प्रेत डाकिनी शाकिनी लगी होयँ तो सब छूटि जायँ.

४ तथा.

शुद्ध खपरिया, सेंधानोन, शुद्धनीलाथोथा, शुद्ध सोहागा, सोंठि, मिरच, पीपरि, यह सब चीजें एकमें

मिलाके नींबूके रसमें चार पहर घोटै तब गोली बनाय छायामें सुखायके शहदमें आंजे तो सब तरहके नेत्ररोग दूर होयँ और फुनसी फोडा मांसका गलना धूंधी मोतियाबिंध आदि सब रोग दूर होयँ.

५ तथा.

जराया हुआ भेलावाँ एक, फिटकरी दो चना भर, अफीम एक चना भर, छः नींबूके रसमें खरल करके छायामें सुखाय गोली बनाकर नींबूके रसमें घिसि आँजे तो फूली,फफरा, आंखोंसे पानी बहना ये सब दुःख दूरि होयँ.

६ तथा.

जेठी मधु, गेरू, सेंधानमक, दारुहल्दी, रसोत सब दवा बराबर लेके पानीमें एक दिन घोटै पीछे मटर बराबर गोली बाँधै पश्चात् पानीके साथ घिसके पलक पर लेप करै तो सब तरहके नेत्ररोग दूर होयँ.

१ अथ नाकरोगकी दवा.

जो बहुत छींकें आती होयँ तो धनियांकी पत्ती सूंघे अथवा चंदन सूंघना गुण करताहै.

२ नाकरोगकी खानेकी दवा ।

सोंठि, पीपर, इलायची तीन २ मासा ले गुड़ सात

तोला एकमें मिलाके चार मासे खाय तो नाकके सब रोग दूर होयँ

नाक रोगकी तीसरी दवा।

भृंगराजका रस पाव भर तिल्लीका तेल पाव भर, सेंधानमक दो तोला सब एकमें मिलाके चुरावै जब पानी जर जाय तेल मात्र रहि जाय तब नास लेवै तो जो नाकसें चइली (पपरी) पडती होयँ वह न पडें और पीनस इत्यादि सम्पूर्ण नाकके रोग हरै.

अथ जीभरोगका इलाज.

जो जीभपर छोटे २ फोडे निकल आवें और जीभ लाल लाल होजाय तो जानो यह रोग कलेजेकी गर्मीसे होताहै (दवा) शीतलचीनी वंशलोचन रूमीमस्तगी गुजराती इलायची गुरुचकोसत पीपरि मिश्री ये सब दवा छः छःमासे ले कूट कपडछान करके एक तोला माखनके साथ छः मासा दवा खाय तो जीभके सब रोग दूर होयँ.

अथ दाँतरोगकी प्रथम दवा.

फिटकरी, हर्रै खट्टे अनारका छिलका सेंधानमक सब दवा एकमें मिलाके कूट कपडछान करके मंजन करै तो सब प्रकारकी दांतकी पीडा दूर होय.यदि दांत हिलते होयँ तो वज्र समान होयँ.

दाँतकी दूसरी दवा.

वालछड एक मासे. अकरकरा छः मासे. सेंधा नमक छःमासे तूतियाकी भस्म एक मासे सुपारी जराई हुई छःमासे तुलसीकी पाती एक तोला, रूमी- मस्तंगी एक तोला. कस्तूरी एक मासा. नागरमोथा एक मासा. जराई हुई तमाखू एक तोला. जराया हुआ बादाम एक तोला. कालीमिर्च छःमासा ये सब दवा कूट कपडछान करके मंजन करै तो दांतके सब रोग पीड़ा इत्यादिक दूर होय.

तथा.

जराई हुई सुपारी एक तोला, पीली हरेंकी छाल एक तोला. इन्द्रायनका मग़ज एक तोला, गुलाबके फूल एक तोला, गुलनार तीन मासा ये सब दवा कूट कपडछान करके मंजन करै तो दांतके सब रोग दूर होयँ. दांतकी पीडा तथा दाँतोंका हिलना दांतमें कीडा पडजाना इत्यादिक ये सब रोग दूर होय.

तथा.

खट्टे अनारके छिलके ग्यारह मासा दो तोला, शुद्ध फिटकरी दो तोला चार मासा, अकरकरा सात मासा गुलाबके फूलसातमासा, माजूफल सात मासा

ये सब दवा कूट कपडछान करके मंजन करै तो दांत की पीडा, कीडों का पड़ना तथा हिलना मिटै और दांत मजबूत होयँ. कभी न हिलें दांतके सब रोग दूर होयँ

तथा.

कालेदाँतोंको सफेद करताहै, पीली हरडोंका छिलका दोतोला ग्यारह मासा कालीमिर्च चौदह मासा अनारका चूरण दश मासा तेजपात सात मासा माजूफल जलाया हुआ दो तोला चार मासा सब दवा कूट कपड़छान कर मंजन करै तौ मुँह दांत पीड़ा इत्यादिक सब दूर होयँ.

अथ श्वास रोगका वर्णन.

जिन वस्तुओंके खानेसे हुचकी होतीहैं उनहीं पदार्थोंके खानेसे श्वास पैदा होताहै वह श्वास ५ प्रकार काहै महाश्वास १ ऊर्द्ध श्वास २ छिन्न श्वास ३ तमक श्वास ४ क्षुद्र श्वास ५

अथ श्वास रोगकी पहिचान.

हिया कनपटी दूखै, शूल होय, अफरा होय, मल मूत्र नहीं उतरै और न मुखमें रसको स्वाद आवै तब जानिये श्वासरोग होगा इस रोगकी शांतिके वास्ते ३ चांद्रायणव्रत करै ब्राह्मणोंको भोजन जिमावै और विष्णुसहस्र नामका पाठ कराय ब्राह्मणों को भ-

शीतोपलादि चूर्ण।

मिश्री १६ तोले वंशलोचन ८ तोले पीपर ४ तोले इलायची २ तोले दालचीनी १ तोले इन्होंका चूर्ण करके घृत शहद युत खावे तो कास श्वास क्षयी व हस्त पाद अंग की दाह मन्दाग्नि जीभका जकडना पशुली शूलकी पीड़ा अरुचि ज्वर ऊर्द्धगत रक्त विकार पित्त इन सब रोगों को नाशै शरीरकी रक्षाकरै.

अथ खाँसी दमा श्वासकी दवा।

अकरकरा १ तोला लटजीरा १ तोला हींग १ तोला पीपर १ तोला चनाकी दाल भुँजी १ तोला अफीम ६ मासे लौंग ६ मासे सब दवा थोरी कूटि ले फिर एक दिन मदारके दूधमें भिगाय रक्खै पीछे सेंहुड़के गोजेका मगज़ निकालके उसमें दवा भरके मुँह वंद कर सात सेर कण्डों में फूँकि देय जरै न पावै फिर निकालि खल करि चना बराबर गोली बाँधि खाय तो सब तरह का दमा खांसी श्वास क्षयी दूर होय।

अथ हुचकी की दवा।

आँवलाके रसमें पिपली शहद मिलाय खानेसे हुचकी श्वास जावें।

अथ श्वास रोग नाशक शुंठ्यादि चूर्ण.

कचूर कमलकंद गिलोय दालचीनी नागरमोथा पुष्करमूल तुलसी भूमिआँवला इलायची पीपल कालाअगर सुंठि भीमसेनी कपूर ये सब दवा समान ले चूर्ण बनाय दुगुनी खांड़ मिलाय खानेसे हिचकी श्वासको हरै.

अथ भारंगी गुड़ श्वास पर.

भारंगी १०० तोले दशमूल १०० तोले हर्ड़ बड़ी १०० तोले ले १२०० तोले पानी में दवा डारि ओटावे जब ३०० तोला शेष रहै तो कपडासे छानिके ४०० तोले गुड़ मिलाय फिर ओटावै जब अवलेह होय जाय तब उतारिके ये दवा डारै शहद २४ तोले सोंठि ४ तोले मिर्च ४ तोले पीपल ४ तोले दालचीनी ४ तोले इलायची ४ तोले तमालपत्र ४ तोले यवाखार २ तोले इन्होंका चूर्ण करि मिलायके २ तोले खानेसे ५ प्रकारके श्वास ५ प्रकारकी खांसी बवासीर अरुचि गुल्म अतीसार क्षयीको हरै और स्वर अग्निको बढ़ावै यह भारंगी गुड संसारमें विख्यात है.

अथ श्वास खांसी नाशक बसन्तराज रस।

त्रिकुटा त्रिफला लोहारस कुटकी हरै अफीम धतूरे के बीज शुद्ध गुजराती इलायची चिरायता कपूर

लौंग जायफल इन सबको कूंकि कपरछान करि सहिंजनेके रसमें ४ पहर घोटै यह वसन्तराज रस है. पाँच प्रकारके श्वास व पाँच प्रकारकी खांसीको नाश करै और स्वरभंगको दूर करै इसका गुण बहुत है (पुनः) शुद्धपारा ६ मासे गन्धक ६ मासे शुद्ध मैनशिल ६ मासे मिर्च ६ मासे पीपल ६ मासे सब कूटि कपड़छान करिके पानमें गोली बनाय खानेसे सब प्रकारके श्वास खांसी नाश होयँ

अथ दमा व खांसीका इलाज.

सेहुँडके पत्तोंका रस धतूरके पत्तोंका रस मदारके पत्तोंका रसले प्रथम सेहुँड व मदारके पत्तोंको अग्निपर गरम करिके रस निकालै सबका रस पाव पाव भरि लेवै फिर अरूसके पत्ता डेढपाव एक सेर दूधमें चुरावै, जब तीनभाग जरजाय एक भाग रहै तब छान लेवै फिर सब रस इकट्ठा करिके चुरावै जब रस गाढ़ा होजाय तब पीपरि लौंग सोहागा छोटी इलायची अफीम सोंठि ये सबदवा एक तोला ले कूट कपड छान करिके रसमें मिलाके चना बराबर गोली बांधे खुराक एक गोली शामको और एक सबेरे खाय तो खोकला खांसी दमा इत्यादि सब रोग दूर होयँ. ॥

तथा.

मिर्चे पीपरि सोंठि इलायची चार २ तोला गुड आठ तोलाले सबका एकमें चूर्ण बनायके सवेरे एक तोला खाय तो सब तरहका दमा खांसी खोकला श्वास फूलना दूर होय.

तथा.

शंखकी खाक छः मासे पानके बीड़ामें खाय तो खांसी दूर होय. मदार व धतूरके पत्ता एक २ सौ काला नमक पावभर लेकर एक हंडीमें रखके फूंक देवे भस्म होनेपर अदरखके रसके साथ खाय तो खाँसी दमा और खोकला इत्यादिक रोग दूर होयँ.

तथा.

शुद्ध शंखिया एक तोले, शुद्ध चौकिया सोहागा एक तोला दोनोको एकमें मिलाकर अदरखके रसमें एकदिन खल करै फिर बजरीके समान गोली बांध-कर दूधके साथ एक शाम और एक सवेरे खाय तो खाँसी, दमा, इत्यादि रोग दूर होयँ.

तथा.

शुद्ध कुचिला सवातोले, मन्दार और अडूसेके पत्ता एक २ सौ, साँभर नोन अढाई तोला, पीपरि अढाई तोला. पीपरामूल अढाई तोला. सोंठि सवा दो

तोला. अजवाइन दो तोला. काली जीरी सवा दो तोला ये सब दवा एक हंडीमें भरके गजपुट आँच दे जब भस्म होय तो चाररत्ती पानके साथ खाय तो श्वास खाँसी दमा इत्यादिक सब रोग दूर होयँ.

अथ उदररोगका वर्णन.

उदररोग ८ प्रकारका है सो लिखतेहैं मंदाग्निवालेके निश्चय होय और अजीर्णसे खराब वस्तुके खानेसे वात पित्त कफके कोपसे उदररोग उत्पन्न होताहै सो अलग अलग लिखते हैं वातका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ प्लीहाका ५ मलबंधका ६ चोट लगनेका ७ जलोदर ८ ऐसे आठ प्रकारकेहैं अब अलग २ लक्षण सुनो.

अथ वातोदर लक्षण १.

जिस पुरुषके हाथ पैर नाभिमें सूजनहोय कुक्षि पसुली कटि पीठी संधिमें पीड़ा होय और सूखा खांसै शरीर भारी रहै मल उतरै नहीं शरीर की खाल नख नेत्र काले पड़ जावें पेटमें पीड़ा और अफरा हो पेट बोलाकरै ये लक्षण वातोदरकेहैं.

अथ पित्तोदर लक्षण २.

ज्वर मूर्च्छा दाह तृषा होवै. मुख कडुवाहो, शिर घूमै, अतीसार हो, शरीरकी खाल पीली हरी होय

और पसीना आवे डकार खराब आवें ये सब रोग होयँ तो पित्तोदरका लक्षण जानो.

अथ कफोदरका लक्षण ३.

जिसके शरीरमें पीड़ा होय और बहुत सोवे शरीर में सूजनहो सब शरीर भारी रहै हिया दूखे भोजन में अरुचि हो देर में पचै शरीर ठंढा रहै पेट बोला करै ये सब लक्षण कफोदरके हैं.

अथ सन्निपातोदरलक्षण ४.

खराब जिसैके खानेसे उदरमें नानाप्रकार के रोग पैदा होते हैं, मूर्छा, मोह, पांडु, शोष, तृषा, हो तो सन्निपातोदरका लक्षण जानो.

अथ प्लीहोदरका लक्षण ५.

गरम वस्तुके खाने पीने से दुष्ट रुधिरसे कफके जोरसे प्लीहाको बढ़ावैहै पीछे बढ़ा प्लीहा बांई पसुली में रोग और तिल्लीको उत्पन्न करै है इस रोग में मनुष्य पीडित होयके बहुत दुःख पाता है ॥ मन्दाग्नि, जीर्णज्वर, कफ, पित्त उपजै बल जाता रहै शरीर पांडु वर्णहोजाय ये लक्षण प्लीहोदरके जानो.

अथ मलबंधसे यकृतोदर लक्षण,

दहिनी पासुके नीचे और नाभिके ऊपर मांस का पिंड सरीखा बिकार उपजै तिसे यकृत रोग

कहते हैं इस रोगको यकृत गोल्म का लक्षण जानो।

अथ छतोदरका लक्षण.

जो मनुष्य कच्चा अन्न खाय और बाल कंकड रेत धूलसे मिले हों मलका संचय हो कष्टसे थोरा मल उतरै हृदय नाभि बढ़ जावै तिसको बद्ध गुदोदर तथा छतोदर भी कहते हैं.

अथ जलोदरका लक्षण.

घृतको खाय, बस्ति कर्म कराय जुलाब ले, वमन करके शीतल जलको पीवै, इससे जलकी बहने वाली नसें दूषित हो स्नेह करिके लिपी जलोदरको उत्पन्न करै हैं और उस शीतल जलसे उत्पन्न हुआ जलोदर नाभिके पास गोल और चीकना होय पानी भरी मसक समान बहुत बढ़ै तब मनुष्य उससे बहुत दुःखी हो और उसका शरीर कंपै और पेट वारंवार बोलै ये लक्षण जलोदरके हैं असाध्य जलोदररोगीको त्याग करै और इस रोगवाले रोगीकी सँभारिके दवा करै काहेसे कि इस रोगीका जीना कठिनहै और रोगीको खराब चीजके खानेसे बचाये रहै तीन महीनाके बाद थोरा अन्न दूधके साथ देय तो ६ महीना तथा एक वर्ष में जलोदर दूर होय

अथ वातोदरकी दवा।

पीपल, सेंधानमक पीस एक में मिलाय तक्रके साथ खाय तो वातोदर जाय.

पुनः दूसरी दवा, कुष्ठादि चूर्ण।

कूट जयपाल जवाखार सोंठ मिर्च पीपल सेंधानोंन मणियारी नमक कालानमक बच जीरा अजवायन हींग साजीखार चीता चाव इन्होंका चूर्ण करके गरम पानीके संग खानेसे वातोदर नाश होय

अथ पित्तोदरकी दवा।

इसरोगमें बलवान पहिले दूधमें निसोतका कल्क और अरंडीका तेल मिलायके पियेतो पित्तोदरदूर होय.

दूसरी दवा.

निसोत व त्रिफलाका काढ़ाकर घृत डारि पीनेसे पित्तोदर नाश होय.

अथ कफोदरकी दवा।

सोंठि मिर्च पीपल नागरमोथा इन्होंका काढ़ा बनाय गोमूत्र और अरंडीका तेल मिलायके पीनेसे कफोदर दूर होय.

पुनः दूसरी दवा.

लोहचूर्ण, अरंडीका तेल दूधमें कुछ दिन पीनेसे कफोदर नाश होय.

अथ सन्निपातकी दवा.

हरी निर्गुंडीका गोमूत्रमें कल्क बनाय खानेसे संपूर्ण उदर रोग तिल्ली ववासीर कृमि गुल्मको नाश करै.

पुनः दूसरी दवा.

नागरादि तैल ६४ तोले सोंठि ६४ तोले त्रिफला ६४ तोले घृत २५६ तोले सबको एकमें मिलाय २ तोला दहीके संग खानेसे संपूर्ण उदररोग कफोदर कफ गोला वायु गोला नाश होयँ.

अथ प्लीहोदरकी दवा.

स्नेह स्नेह जुलाव तिल्ली में हितहै और बायें हाथकी कोहनीके अभ्यंतरवर्ती जो नाड़ी है तिसमें फस्त खोलनेसे यकृत रोग नाश होय और उस नसको अग्निसे दाग दे तो प्लीहा दूर होय पीपली में शहद तक मिलाय पीनेसे भी प्लीहा नाश होय हुर हुर का पंचाग ८ तोला ले मिर्च ८ तोले मिलाय खल करके ६ मासेकी गोली बनाय शाम सवेरे खाने से प्लीहा नाश होय और शुद्ध वच्छनाग चौकिया

सोहागामें खलकरके पहिले दिन दो सरसोंसे बीस सरसों तक देइ रोगीका बल देखिके और आधासेर दूध के साथ सेवै तो सब उदर रोग नाश होयँ जैसे सिंह हाथीको मारै तैसे यह दवा उदर रोगको मारतीहै.

अथ जलोदरकी दवा.

जलोदरमें बारंबार जुलाबदे जिससे मल विकार दूर होय अथवा काबुली हरोंका चूर सेंधानमक गोमूत्रमें पीनेसे जलोदर नाशहोय अथवा पीपलका चूर्ण थूहरके दूधमें भिगोय खानेसे जलोदर नाश होय अथवा आनन्दभैरोंरस दूधके साथ कुछ दिन सेवनेसे जलोदर नाश होय. अथवा नीलाथोथा, गन्धक, पिपली, हर्र सब बराबर ले कूट कपड़छान करि थूहरके दूधमें ५ दिन खल करि फिर अमिलतासके काढ़ामें५ दिन खल करि १ मासे नित्य गरम पानीके संगखाय तो जलोदर तथा सम्पूर्ण उदरके रोग जायँ पथ्य अधिक चावलही खाय इमिलीका शर्बत पिये ऊपरसे पान का बीरा खाय तो बहुत फायदा होय.

जलंधर वाले रोगीकी तस्वीर देखना इसी तरहसे पेट सूजताहै इस रोगीको बहुत सँभारना चाहिये खट्टा मिट्ठा और तीतासे बचना चाहिये और जलदी ही दवा करै नहीं तो असाध्य होजाताहै सो पीछे बहुत दुःख देताहै सो दवा अच्छी २ लिखी है दो दवा और लिखते

हैं शुद्ध शंखिया १ तोला रेवलचीनी ९ मासे जदाखर खटाई ९ मासे अकरकरा ९ मासे सफेद कत्था २ तोले सब दवा कूट कपड़छान करके अदरखके १ सेर भर रसमें खल कर मूंग बरावर गोली बांधे एक गोली खानेको दे तो रोग दूर होय (पुनः दवा) पीपल मिरच सोंठि पांचोनोन सोहागा सज्जी सब दवा बरावर ले और दवाके बरावर जमालगोटा ले प्रथम दवाको कूटि कपड़छान करिके दात्वणीके रसमें ३ पुटदे फिर बिजौराके रसमें ३ पुटदे खरलकर छायामें सुखायके फिर आधा रत्ती रस खानेको दे तौ उदररोग, प्लीहा, गोला, जलंधर इत्यादि सब रोग हरे परन्तु ब्राह्मणको बुलाय प्रायश्चित्त पूजा पाठ जप करावे पीछे भोजन दान दे तो रोग शांति हो और सोनेका कलश व कुबेरकी मूर्ति बनाय पूजा करै तौ पूर्व जन्मका पाप नाश होय रोगी जीवे.

अथ उदररोगका इलाज.

वाईका फिसाद और कच्चा भोजन करनेसे उदरमें पीडा होतीहै (दवा) पानी गर्म कर नोन मिलाय पिलावै तथा उलटी करावै और जवतक भूख न लगे तबतक भोजन न देवै जवशरीर और पेट हलका होजाय तब खानेको देवै तो सब दुःख दूर होय. पीडा शांति होय.

अथ उदरका दूसरा इलाज.

सनायकी पत्ती, हड, वहेडा, आंवला, कालानमक

सब बराबर लेकर कूट कपड़छान करके नींबूके रसमें गोली बांध एक गोली शाम और एक सबेरे खाय तो पेटकी पीडा, वात, पित्त, कफ, संग्रहणी, आँवका परना, इत्यादि रोगोंको दूर करै. और आठ दिन सेवन करनेसे मनुष्य निरोग होजाता है भूख बहुत लगतीहै और मन प्रसन्न होजाता है.

तथा.

सोंठिकीकतरी उदर व कलेजेकी पीडा तथाशर्दीको दूर करतीहै अन्नको पचाती है यदि अदरखके रसमें खिलावे तो दस्त बन्द होय कब्ज़ियत दूर होय.

दस्त बन्दकरनेकी दवा.

हींग, जहरमोहरा खताई, मिरची, अफीम ये सब दवा बराबर ले खलमें खल करै फिर चना बराबर गोली बाँधे एक गोली नींबूके रसके साथ खाय तो संग्रहनी वातको शांति करै सब प्रकारके उदररोग दूर होयँ.

तथा.

अफीम साढ़े तीन मासा, अकरकरा सात मासा, झाऊके फूल चौदह मासा सामक चौदह मासा, हुब्बुलास चौदह मासा, लेंके बबूरके गोंदके रसमें दो मासाके बराबर गोली बांधे एक गोली खाय तो दस्त एक घंटामें बन्द होय.

तथा.

पीपर एक तोला, हड एक तोला, पांचोनमक एक एक तोला यह सब दवा जम्हीरी नींबूके रसमें खल कर दो मासाके बराबर गोली बांधै एक गोली खाय तो दस्त बन्द होय, अजीरन दूर होय, वाय, शूल जलंधरादि रोगोंको बहुत गुणदायक है बाईको पचाता है भूखको लगाता है.

अथ पाचककी गोली.

मन्दारके मुँह मुँदे फूल चार तोला, काली मिर्च चार तोला, कालानमक चार तोला, ये सब दवा एकमें मिलाके खल कर बेरके बराबर गोली बांधै एक गोली शामको और एक सवेरे खाय तो शूल वायगोला इत्यादिक रोग दूर होयँ.

अथ संग्रहणीकी गोली.

शुद्ध सोहागा शुद्ध सिंगरफ ये दोनों दो दो मासे अफीम चार मासे ले खल करके मिर्च बराबर गोली बाँधै जो रातको दस्त बहुत होता होय तो शहदके साथ एक गोली खिलावै और जो दिनको दस्त होता होय तो एक एक गोली नींबूके रसके साथ खिलावै तो सब तरहकी संग्रहणी वायु दूर होय. दस्तको रोंके

संग्रहणीकी दूसरी गोली.

कफके दस्तको बन्द करै. पाचक है, कालीमिर्च

सोंठि, पीपर, लौंग, अकरकरा सब दवा साढे तीन ३ मासे अफीम सात मासे ले अदरखके रसमें चना बराबर गोली बांधै फिर एक गोली सांझ और एक सबेरे खानेको दे तो कफ दस्तसे उत्पन्न सब रोगोंको दूर करै.

अजीर्णका चूर्ण.

हड, पीपरि, सोंचरनमक, वच, हींग बराबर २ ले कपड छानकरिके दो टंक पानीके साथ खाय तो अजीर्ण जाय.

अजीर्णका दूसरा चूर्ण.

हींग एक टंक, वच २ टंक, बिडनमक ३ टंक सोंठि ४ टंक, जीरा ५ टंक, हड ६ टंक, पोहकर मूल ७ टंक कूट ८ टंक ये सब दवा कपड़छान करिकै सात मासे गर्म पानीके साथ खाय तो अजीर्ण और मूर्छा वायगोला इत्यादिक दूर होयँ.

अजीर्णका चूर्ण (अग्निमुख)

हींग, बच, पीपरि, सोंठि अजवाइन, चित्रक, कूट सब दवा बराबरि ले कपडछान करिके छः मासे गर्म पानीके साथ खाय तो चारप्रकारका अजीर्ण, प्लीहा, कोढ, खाज, खांसी गोला शूल मन्दाग्नि जायँ.

कृमि रोगका चूर्ण.

वायविडंग. सेंधानमक, जवाखार, कसीला, हर्रे सब बराबर ले कपडछान करिकै गायकी छाँछमें दो टंक खाय तो कृमिरोग दूर होय.

पांडु रोगका इलाज.

त्रिकुटा, तज, बेरकी गुठुली, मिर्च, सोनामाखी ये सब दवा बराबरि ले कूट कपड़छान करिके शहदमें ४ टंककी गोली बांधे एक गोली सवेरे छाँछके साथ खाय तो पांडुरोग तथा उदररोग दूर होय.

वातका तीसरा चूर्ण.

त्रिफला, नागरमोथा. अतीस, कोरैयाकी छाल, सेंधानमक, हींग ये सब दवा बराबर लेकर कूट कपड़छान करके छः मासे गरम पानीके साथ खाय तो वातातीसार और पेटकी पीडा दूर होय.

अथ अतीसारकी दवा.

पीपलामूल, गजपीपर, पीपर, बेलगिरी, सोंठि, राल, शिलाजीत, चित्रक, ये सब दवा बराबर ले कूट कपड छानकर दो टंक खाय तो आमातीसर व वातातीसार इत्यादिक दूर होयँ.

पित्तातीसारकी दवा.

इन्द्रयव, बेलगिरी, अतीस और धौंके फूल, रसौत, सोंठि, मुलहठी यह सब दवा पीसकर छानके चूर्ण बनावे जो यह चूर्ण ४ मासे साठीके चावलके साथ खाय तो उदरके सब रोग दूर होयँ.

अथ कफातीसारकी दवा.

कालानोन, सेंधानोन, हींग, हर्रै, बच, अतीस ये सब

दवा बराबर लेकर कूट कपड़छान करके २टंक गर्म पानीके साथ खाय तो सब तरहका उदररोग दूर हो.

अथ चौहारम चूर्ण.

सिहोरके पत्ता एक पैसा भर, बबूरके पत्ता एक पैसा भर, आंवलाके पत्ता एक पैसा भर, तुलसीके दल दो पैसा भर, सबके पत्ता सुखा लेवे फिर जवाखार एक पैसा भर सज्जीखार एक पैसाभर और पांचोंनोन एक २ पैसा भर पीपर डेढ पैसा भर मिर्च डेढ पैसा भर नागरमोथा डेढ पैसा भर ये सब दवा कूट कपड़छान करके छःमासे चूर्ण पानीके साथ खाय तो हड्ज्वरी, वाय पेटका फूलना, शूल दूर होय भूख लगे. सब प्रकारका उदररोग दूर होय.

अथ सुनबहरीकी दवा.

गुडपुराना एक सेर नींबीके पत्ता एक सेर नींबीके फूल एक सेर नींबीकी छाल एक सेर ये सब दवा एक घड़ामें भरके आधामन पानी डालके पन्द्रह दिनके पीछे खानेको दे खुराक एकतोला. खुरासानी अजवाइन के साथ और तिरसठ दिन खाय तो सुनबहरी दूर होय.

अथ सुनबहरीका लेप.

काष्टक एक रत्ती ले पानीमें घोरि लेप करै तो सुन बहरी जाय.

अथ नामर्द अर्थात् वाजीकर्णका वर्णन.

वाजीकर्ण उसको कहतेहैं जो पुरुष देखनेमें मोटा और पुष्ट होय पर नामर्द होय नामर्द सात प्रकारके होतेहैं उनकी उत्पत्ति लक्षण लिखते हैं.

(१) लौंडेबाजी तथा हथरस करना, कडुई वस्तु और अधिक खटाई खाना, गर्म नोन खाना इन सब चीजोंको अधिक खानेसे आदमी नामर्द होजातेहैं शोक और क्रोधके करनेसेभी वीर्यका नाश होताहै स्त्री धन पुत्र आदिके नाश होनेसेभी नपुंसक होतेहैं इन्द्री में नख लगनेसे तथा वात पित्त कफके कोपसे इन्द्रीकी नसें सूख जातीहैं वह पुरुष नपुंसक होजाताहै यदि इसका दिल चला और स्त्रीके पास गया तो काम नहीं होता और बुद्धि नष्ट होजाती है बल जातारहता है तब दशों इन्द्रियोंमें रोग पैदा होताहै इसलिये इसके वास्ते बहुत अच्छी अजमाई हुई दवाई लिखते हैं.

अथ नामर्दकी दवा, सेंक.

हाथी और मछलीके दांत का चूर्ण, चारचारतोले, लवंग ८ मासे; जायफल दो नग, जंगली प्याज एक नग ये सब दवा कूट कपड़ छान करके दो पोटरी बनावें तब भेड़का दूध १० तोले लेकर एक हंडीमें भरै और उसको परईसे ढांक मट्टी से ताय आग पर रक्खे, परईके बीचमें एक छोटा छेद करै,

तब जो वाफ परईके छेद्से निकले उस पर यह पोटरी रक्खै जब पोटरी गर्म होय तो १घंटा जंघा और पेडूतक चार दिन सेंक्रै ऊपर से बँगला पान गर्म करके इन्द्री पर बांधे और पानी से नहाना त्याग करै.

सेंकके पीछे लेप.

सफेद कनेरकी जड, जायफल, अफीम, इलायची गुजराती, सेमरके छिकला ये सब दवा छः २मासेलेकर कूटकर कपड़छान करके तिल्लीके १ तोले तेलमें मिलायं गर्म कर तीन दिन इन्द्रीपर लेप करै तो उसकी इन्द्रीमें जरूर जोर होगा पर परहेज ऐसा करना कि जिस तरह मुर्गी अपने अंडेको ४० दिन प्रमाण सेवतीहै.

लेपके ऊपर खानेकी दवा.

नामर्द होनेसे आदमीकी धातु फट जाती है सुजाक होजाता है पीब बहने लगताहै (दवा)मुसरी स्याह,असगंधनगौरी,गुलधवा, चना भूंजा हुआ,वैदरा सोंठि, उटंगन के बीज, गाजर के बीज, पोस्ताके फल, ताल मखाना ये सब दवा एक एक तोला ले और सब दवाके बराबर मिश्री मिलायके एक तोला सवेरे खाय ऊपरसे आधा सेर दूध पीवै.

इसके खानेके पीछे दूसरी दवा खानेकी.

चिलगोजाके बीज, खसखस, सफेद स्याह मुसरी, [illegible], लवंग फुलवाली, सालममिश्री, जावित्री,

मोगली तालमखाना, छोटा बीजबन्ध, अल्लदंडी, दाल-
चीनी ये सब दवा चार चार तोले ले और कांकज ९
मासे ये सब दवा कूट कपडछानकरके आधा सेर
मधुमें मिलाय दो मासे शाम और दो मासे सबेरे
खाय और परहेजसे रहे तो नामर्दी, नपुंसकी जाती
रहे और अतुल बल होवे.

सेक दूसरा.

वीरवहूटी, केंचुआ सूखा, असगंध नगौरी, जरब
चोप, आंबाहलदी, भूँजा चना ये सब दवा छः २ मासे
ले कूट कपडछान करके गुलरोगन डारके खल
कर दो पोटरी बनावे फिर चूल्हेपर तवा रख मधुरी
आंच से १ घंटा सेकै चार दिन तक सेकै ऊपरसे
बँगला पान गर्म करके बांधे नहाय नहीं.

सेंकके ऊपर लेप.

अकरकरा दक्षिणी, वीरवहूटी दो २ मासे और
लवंग २० नग बकराका गोश्त १० तोले ये सब दवा
खल कर के इन्द्री की मोटाई प्रमाने एक लकडी लेवे
उससें दवा लगावै जितनी बडी इन्द्री हो उतनी लकडी
तक दवा लगावै और उस लकडीको आग पर सेंकै जब
थोड़ा कड़ी होजाय तो लकड़ी परसे ज्योंका त्यों
निकाल कर या आधे आध फारके निकाल कर वैसेही
दवा इन्द्री पर चिपकादेवै और पानीका परहेज रक्खै

घीकुवारि योग लेपके ऊपर.

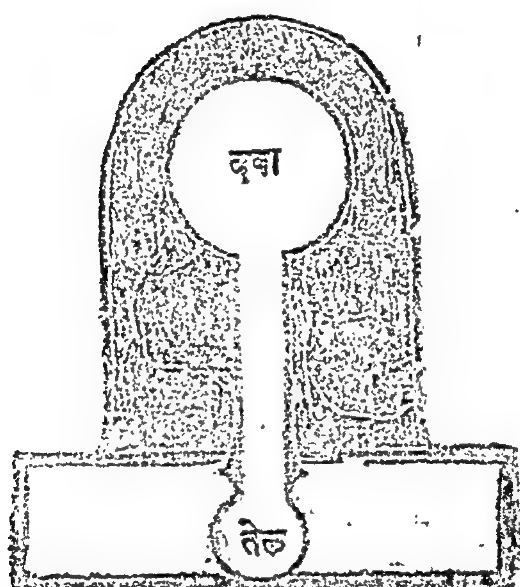
घीकुवारि का गोझा, गेंहूका आटा, कपासके बीज, शक्कर, घी ये सब दवा एक २ सेर लेकर दवा-कूटै फिर शक्करकी चासनी कर उपरोक्त दवा घी में जुदी २ भूंज उसी चासनी में छोडदे पीछे ये दवा और मिलावे गोखुरू ५ तोले, पिस्ता ७ तोले, सफेद खोपड़ा ७ तोले, चिलगोजा ७ तोले, येसब कूटके मिलायके योग तय्यार करै तब पांच तोले सवेरे खाय और पीछे आधा सेर दूध पीवै परहेज खट्टा मीठा बचावै.

अथ नामर्दीके ८१ कारनका तेल.

शेरकी चरबी, मालकांगनी, अकरकरा, बीरबहूटी, सोंठि, जावित्री, जहर कुचिला, दालचीनी, लोहवान कौडिया, लवंग, बच्छनाग, हरताल तबकी, जायफल, जमालगोटा, पारा, हाथी का दांत; गंधक, अँबरासरू, भटकटैया, घूंघची सफेद, केचुआ, सफेद कनैरकी जड़, खुरासानी अजवायन, पियाजका बीज, इसबन्द, शंखिया सफेद, रेंडी का बीज, कालीजीरी ये सबदवा चार २ तोले और पांच मुर्गीके अंडा की सफेदी मिलाय के अग्नि कांच सीसी में भरके पाताळ

यंत्र से तेल निकाल लेय और ६ मासे प्रमाण ४० दिन इन्द्री पर लेप करै पानीसे न न्हाय तो नामर्दी और नपुंसकी दूर होय और स्त्रीभोग की शक्ति होवै.

यह पाताल यंत्र है.



इस यंत्रसे तेल निकाला जाता है

१ अथ इन्द्रियका लेप.

लोहबान अच्छा १० टंक लेकर करौंदाके रससें खल करै फिर चार तोले घीसें खलकर गोला बनाकर पातालयंत्रसे तेल निकालकर पहले इन्द्रियको हरदी

मलै फिर तेलसे मलै तब गरम गरम पानका पत्ता बांधै तो पन्द्रह दिनसें नामर्द मर्द होय.

२ लेप.

समुद्रफेन देवदारु हरदी मुलहठी शहद सब बराबरले गदहाके पेशाबमें घिसि लेप करै तो इन्द्रिय बड़ी होय सही.

इन्द्रियका सेक.

नगौरीअसगंध केंचुवा बीरबहूटी आंबाहरदी भूँफाचना सब बराबर लेकर गुलाबका तेल मिलायके पोटरी बनाकर सेकै तो सब दुःख दूर होय.

१ दवा नामर्दकी.

गोखरू तीन टंक स्याहतिल तीन टंक दूनोंको कूट कपड्छान करके एकसेर दूधमें मिलाकर चुरावै जब खोवा होजावै तब खाय इसी विधिसे इक्कीस तथा बयालीस दिन खाय तो नामर्द मर्द होय.

२ दवा दूसरी.

अकरकरा एक टंक केसरि दो टंक जायफल छ टंक लौंग तीन टंक सिंगरिफ छः टंक अफीम दो टंक ये सब चीजें एकमें मिलाय बराबर खल करके मधुमें गोली बांधै चना बराबर शामको एक गोली खाय और ऊपरसे एकसेर औटाया दूध पीवै तौ बंधेज होय.

बंधेजकी गोली.

केसरि लौंग जायपत्री जायफल खपरिया अजमोदा माजूफल समुद्र शोष मोटकी जड मस्तंगी कुलंजन अफीम सिंगरिफ वत्सनाग कस्तूरी कपूर सब बराबर लेकर कूटि छान मधुमें गोली बांधकर मटर सम छोटी गोली बनावे और एक गोली शामको खाय ऊपरसे एकसेर औटा दूध पीवे तो बंधेज होय.

१ नामर्दकी दवाई.

सफेद घुँघुची खिरनीके बीज लौंग सब पाव २ भर लेकर कूटकर सीसीमें भरके पातालीयंत्रसे इसका तेल निकालके एक सींक निकालके पानमें खाय ऊपर एक छटांक घी खाय और दो सींक खाय तो दो छटांक घी खाय तो नामर्द मर्द होय.

२ तथा.

तालमखाना ४ तोले और नगद बाकची ४ तोले इसबगोल ४ तोले और इमलीका चीया ४ तोले बीजबंध ४ तोले कौंचबीज ४ तोले नागरमोथा ४ तोले बबूलका गोंद४तोलेयेसब चीजें एकमें मिलायके कूट कपडछान करिके घी ३६ तोले लेकर गुड पुराना अच्छा ३६ तोले लेकर एकमें मिलायके तीन दिनपीछे खाय औ परहेजसे रहै तो२१दिनमें पुष्टहोय मर्द होय

छोहारा पाककी विधि.

छोहारा १० टंक पिस्ता ४ टंक जटामासी २५ टंक केवाँचके बीज २५ टंक तेजपत्र २५ टंक नागकेसरि २५ टंक बदाम ४ टंक जायफल २५ टंक दालचीनी २५ टंक केसरि २५ टंक चव २५ टंक सोंठि २५ टंक कमलगट्टा २५ टंक चिरौंजी २५ टंक. जावित्री २५ टंक ये सब दवाले कपडछान करके तब ५ सेर दूधका खोवा करके खोवामें अढाई सेर मिश्री और १६ तोले घी डालके तब सब दवा उसमें डारके अच्छी तरहसे मिलाकर अवरख रस लोहारस बंगरस ये रस एक २ तोले लेकर येभी उसी दवामें मिलावै और लड्डू बाँधिके खाय तो पुष्ट होय सौ स्त्रीसे भोग करै बल न घटै.

सोंठि पाक विधि.

सोंठि पाँच सेर लेकर चूर्ण करके गायका घी ५ सेर डालके भूंजिले फिर २५ सेर दूध औटावै जब आधा रहजाय तो चूर्ण डालके मिलावै जायफल ८ टंक जावित्री ८ टंक लौंग ८ टंक त्रिफला २० टंक जीरा दोनों १६ टंक मिर्च ८ टंक इलायची ८ टंक नागरमोथा ८ टंक भीमसेनी कपूर ४ मासे छोहारा २० टंक बिदारीकंद ८ टंक सतावरी ८ टंक लसोढ़ा

८ टंक केसरि ८ टंक दालचीनी ८ टंक सालम मिश्री ८ टंक मस्तंगी ८ टंक वंशलोचन ८ टंक नारियलकी गरी ८ टंक बदामकी गरी ८ टंक चिलगोजे ८ टंक पाषाणभेद ८ टंक ये सब दवा पीसकर मावामें मिलायके रस डाल अबरख रस बंगरस सोनारस चांदीरस एक २ तोले डालके मिलाकर तीन तोले रोज सबेरे माम खाय तो सुन्दररूप होय शरीर शोभायमान होय और शरीरभरेका रोग दूर होय बल अतुल्य होय वीर्य बढै.

असगंध पाक विधि.

असगंध ४० तोले सोंठि २० तोले पीपरि १० तोले मिर्चे ४ तोले दालचीनी ४ तोले इलायची ४ तोले तमालपत्र ४ तोले लौंग ४ तोले. ये सब दवा कूट कपड़छान करके दूध २०० तोले औटावै जबआधा दूध रहिजाय तो मधु १०० तोले मिश्री १२० तोले गायका घी ५० तोले ले चूर्ण में मिलायके अच्छी तरहसे रक्खै और पीपरी जीरा गिलोय लौंग तगर जायफल बाला काला चन्दन खिर्नी कमलगट्टा धनियां धौकाफूल वंश लोचन अमला कैथ सोंठि कपूर असगंध चीता सतावरी ये सब दवा छः छः मासे लेकर कपड़छान करके मावामें मिलावै और पाक तय्यार करे सोनारस चांदीरस अबरख रस. तांबारस हरताल रस सब

मिलायके खुराक दो तोले या तीन तोले खाय और एक महीना सेवन करै तो खाँसी श्वास दमा बीस परमा अस्सी शूल चौरासी वायु सब रोग हरै. शरीर फूलके समान होय और बल अतुल्य होय. पुष्ट होय. इसका गुण बयान करने योग्य नहीं है.

पुष्टाईका पाक.

बडा गोखरू छोटा गोखरू चिरैया कन्द कामराज मुसरी सफेद मुसरी स्याह सेमरका मुसरा तालमखाना फुलमखाना नागौरीअसगंध बीजबंध गुरुच कासत सफेद तुदरी बडी इलायची मिर्च दालचीनी कवचबीज दो २ तोले ले फिर दवा सफेद बहिमन लाल बहिमन मस्तगी शकाकुल मिश्री सालममिश्री उटंगन सुरियाली तावा खीर तेजबल इमलीका बीज वंसलोचन गुजराती इलायची बेनउरका बीज बिही-दाना सब एक २ तोले ले बबूल गोंद पाव भर गरी १ टंक बदाम एक टंक पिस्ता एक टंक छोहारा एक टंक किसमिस एक टंक घी अढाई पाव मिश्री अढाई सेर के चासनी कर और सब दवा कपडछान करके दवा घीमें भूंजिले तो चासनीमें मिलायके लड्डू बांधै एक एक लड्डू खानेको दे और खट्टा मीठा तीता वर्जित रक्खै परहेजसे रहै तो शरीर पुष्ट होय. शरीरका रोग सब दूर होय. गुण इसका बहुत है,

आंवरा पाककी विधि.

अच्छा आंवरा दो सेर सुखायके चूर्ण करे और फिर दो सेर आंवराका रस निकालके चूर्णमें सुखायके तव एक सेर मधु एक सेर घी और एक सेर मिश्री मिलायके खाय दो तोले रोज तो सब रोग हरै. पुष्टाई होय बल अतुल्य होय सुवर्णके सरीखा शरीरहोय.

नामर्दकी दवाई.

पाराशुद्ध १० मासे चांदीवरक ११ मासे लेकर भंगराजके रसमें दो पहर खल करै तब एक तीतल लियावै एकदिन भूखा रक्खै दूसरे दिन दवामें एकतोले गोहूंकी मैदा डालके तीतलको खिलावै तब दिन दोपीछे तीतलको मारिडालै कलिया वनाइके सिका- रका मसाला डालके और घीमें तलै मधुरी आँचसे चुरावै जब लाल होय जाय तो एक वरतनमेंरखदे और गेहूँकी रोटीके साथ खाय तो तीनदिनमें नामर्द मर्द होय. और सब रोग हरै.

१ वीसपरमेकी दवाई.

अच्छी उरदी दस सेर लेकै वीस सेर दूधमें सुखाय के झुरावै तब पीसके मैदा वनायके पावभर मैदा आधा पाव घीमें भूंजै तव एकसेर दूधमें हलुवा वनाकर मिश्री चारितोले इलायची छःमासे लौंगछःमासे

बंगरस एक रत्ती ये सब दवा डालके एक महीना खाय तौ बीसपरमा और सब रोग हरै.

२ तथा

आंबाहरदी ४ तोले आंवरा ४ तोले सिश्री ४ तोले ये सब दवाकूट कपडछान करके छःमासे खाय तो सब परमारोग दूर होय.

३ अथसफेदपरमाकी दवाई

फिटकरी रस ६ मासे एक पका केलामें खाय बीस दिन तो असाध्यपरमा दूरहोय.

४ अथलालपरमाकी दवाई.

जसवंती और ककही दोनोंकी पाती आधासेर पानीमें मलिके तीनतोले मिश्री डालके पीवे तो लाल परमारोग दूर होय.

५ अथपीलापरमाकी दवाई.

इसबगोल पाव भर सालको भिगाकर सबेरे एक निंबू निचोवे एक तोले छःमासे मिश्री डालके पीवे तो ग्यारह दिनमें परमा दूरहोय

६ अथ मूत्रियापरमाकी दवाई.

सांठीकी जड सतावरी गोखरू खरेटी तालमखाना असगंध सब दस दस टंकले मिश्री और सांठीके

खावलका चूर्ण दस दस टंक और गायके घीके साथ ६ मासे दवाई खाय तो मूत्रपरमा दूर होय.

७ परमाकी दवाई नोनिया क्षारकी.

हरैं १० टंक बहेडा १० टंक आंवरा १० टंक आँवा हरदी १४ टंक माजूफल १० टंक मंजिष्ठ १० टंक ये सब दवा पीस छानकर ४ टंक शहदमें रोज खाय तो नोनियां क्षार परमा दूर होय.

८ घृत परमाकी दवाई.

ग्वार पीस छानकर सात पुट गोखीके रसका देकर चूर्ण करै जितना ग्वारका चूर्ण होय तितनीमिश्री डालके ५ टंक रोज खाय पानीके साथ २१ दिन खाय तो घृतपरमा दूर होय.

९ वीर्य परमाकी दवाई.

लौंग चित्रकूट सफेद चन्दन नागरमोथा खस छोटी इलायची अगर काला वंशलोचन असगंध सतावरि गोखरू जायफल गिलोय निसोत तगर नागकेसरि कमलगट्टा यह सब दवाके बराबर मिश्री मिलाकर तीन टंक सबेरे खाय तो वीर्यपरमा दूर होय.

१० वीर्य परमाकी चंद्रप्रभाकी गोली.

लोहासार तीन टंक जायफल लौंग जावित्री छोटी इलायची अकरकरा दालचीनी त्रिकूट केसरि चित्ता

असगंध नागौरी सतावरि गोखरू यह सब दवा दो२ तोले ले और मिश्री ५० तोले लेकर सब दवा एकमें खल करके दो टंककी गोली बांधकर एक गोली सामको और एक गोली सबेरे खाय तो बीसपरमा दूरहोयँ।

अथ गंधक योग.

शुद्धगंधक १ तोले गुरके साथ खाय ऊपरसे दूध पीवै तो बीस परमा अठारा दिनमें दूर होय.

अथ शिलाजित योग.

शिलाजित मिश्री दूधके साथ खाय तो सब परमा २१ दिनमें दूर होयँ.

अथ अबरख योग.

अबरख रस त्रिफला हरदी एकमें मिलाय शहदके साथ खाय तो १८ दिनमें सब परमा जायँ.

सल्यपाक.

दूधमें संभलकी छाल सोरह तोले चुरावे मधुरी आंचसे इसके पीछे ६४ तोले गुड मिलाकर तब दालचीनी इलायची तालपत्र नागकेसरि लौंग जायफल नागरमोथा. वंसलोचन धनियां सोंठि पीपरि मिर्च असगंध. हरै लोहा भस्म सब दो दो तोले लेकर कूट कपड छान करिके उस दवामें डालके पाक तय्यार करके एक तोला रोजीना खाय तो वीस परमा जायँ

वात दोष. हिक्का. सिररोग वगैरे रोगको दूर करताहै

अथ बवासीरका लक्षण.

वात पित्त कफके कोपसे तीनोंके मिलनेसे एक खूनी एक बादी पानी मांसवाली होती है औरएक सहज अर्थात् जन्मके साथही उत्पन्न होती है ये ६ प्रकार की बवासीर होती है तीनों दोषोंसे त्वचा मांस वा मेदाको दूषित करके गुदा आदि स्थानोंमें मांसके अंकुर उत्पन्न करते हैं वस उन्हीं मांसके अंकुरोंको बवासीर कहते हैं सो गुदही में नहीं कभी २ नाक नेत्र लिंग वा तोंदीमें भी मांसके अंकुर वा मसे होजाते हैं.

अथ बादी बवासीरका लक्षण.

हाथ पैर गुदा मुख वृषण इतनी जगह शूल होय पसली में शूल हो खाजु पीड़ा बहुत होय गुदा भारी बहुत हो तो बवासीर रोग असाध्य है.

अथ खूनी बवासीरका लक्षण.

तृषा यरुचि गुदामें शूल रुधिर चले देह दुर्बल होय अतीसार होय खाजु बहुत होय गुदाके बीच मस्सा होय ये लक्षण खूनीके हैं

अथ बवासीरका इलाज.

फलमी सोरा निसोत दोनों एकमें मिलायके खल

करके चना बराबर गोली बनावै एक सवेरे एक सामको खाय तो सब बवासीरका रोग जाय जो वादी होय तो फोरापर यह गोली घिसिके लगावै तो खूनी वादी दोनों बवासीर दूरहोयँ.

२बवासीरका इलाज.

अच्छी सुर्ती अच्छा चूना अच्छा गुड मिलायकें अग्निपरदवा रखके वादी बवासीरको धूवां दे तो दूरहोय.

अथ खूनीबवासीरका इलाज.

नागकेसरि मिश्री मिलायके बराबर दोनों मक्खन घीके साथ छःमासे साम छमासे सबेरे खाय तो दूर होय.

दवा दूसरी.

माखनके साथ काला तिल सवेरे एकतोले खाय तो बवासीर दूर होय.

अथ बवासीरका इलाज.

सूरनका भरता बनाकर दहीके साथ रोज खाय तो रक्तबवासीर दूर होय.

अथ बवासीरकी गोली.

लहसुन सज्जी हींग नीबोलीकी गिरी बराबरले पाँच२ टंक गुड २० टंक सब दवा एकमें मिलायके तीन

टंककी गोली बांधकर एक सबेरे एक सांझको खाय तो छःप्रकारके बवासीर दूर होवैं.

२ बवासीरकी गोली.

संखिया ६ मासे अँवरासार गन्धक एक तोला हर- ताल १ तोला हरैं १ तोला यह सब दवा एकमें मिला- यके परईमें रखकर दूसरी परईसे ढांपके कपडमिट करके सुखायके चूल्हापर रखकर पन्द्रह मिनिट आंच दे तब उतारकर दो तोले घी तावा पर रखकर दवा डारके घोटै दो पहर तब बाजरा बराबर गोली बांध- कर एक गोली नींबूके रसमें बवासीरके मसापर लगावे तो बवासीरकी जड़ टूटै ६ प्रकारका बवासीर दूर होय इस दवाके माफिक दूसरी दवा नहीं और इस दवासे जड़ टूटती है और भगन्दर दूर होताहै.

अथ भगन्दररोगका बयान.

गुदाके दो अंगुलकी दूरपर बगलमें एक छोटा फोडा होताहै वह पीडा बहुत करताहै उसके फूटजानेसे भगन्दर होजाताहै वह भगन्दर पांच प्रकारका होताहै.

अथ भगन्दरका लक्षण.

कसैली व रूखी वस्तुओंके खानेसे वायु अतिकुपित होकर गुदाके निकट एक छोटीसी फोडिया कर-

ताहैउसकी अपेक्षा करनेसे वह पकती है व दारुण पीडा करती है फूटनेपर लाल फेना बहने लगताहैं और फिर उसमें बहुत घाव होजातेहैं.

अथ भगन्दररोगनाशक लेप.

हरदी, आकका दूध,सेंधानोन, चीता,शरपुंखी, मजीठ, कूडा इन सब दवोंको तेलमें सिद्ध करि भगन्दर पर लगावे तो शीघ्र अच्छा होवे.

पुनःलेप.

कूट, निसोत, तिल, जमालगोटाकी जड़, पीपल, सेंधानोन, शहद, हल्दी, त्रिफला, तूतिया, मिलाय लेप करनेसे भगन्दरको नाशताहै.

भगन्दर नाशक खानेकी दवा.

हरं, बहेड़ा,आँवरा, पीपल,शुद्ध गूगुल ले कूटि कपड़ छानकर २ टंक खानेसे भगन्दर रोग जाय.

पुनःदवा.

नागकेसरि, पोस्ताकी गिरी दोनों दो दो टंक ले काढा करि पीवे तो भगन्दरको शीघ्र नाशै.

अथ आमवातके लक्षण.

अंगटूटै, अरुचि होय, तृषा लगै, शरीर भारी हो

आलस्य आवै, ज्वरहो, अन्न पकै नहीं, अंगोंमें सूजन हो तो आमवात जानिये.

अथ मिश्रित आमवातके लक्षण.

कोपको प्राप्त हुआ जो आमवात वह सब रोगों में कष्टसाध्य होताहै अब उसका दोष लिखते हैं. हाथ, पैर, शिर, गांठ त्रिकस्थान और जांघोंकी संधियों में प्राप्त होकर बिच्छूके डंकके समान पीड़ा करै औ इन्हीं २ स्थानोंमें सोजा हो अग्नि मंद होजावे उत्साह जातारहै, अरुचिहो, शरीर भारी रहै मुखका स्वाद जाता रहै,मूत्र बहुत उतरै,कुक्षिमें कठिन शूल हो नींद नहीं आवै व वमन हो, तृषा अधिकलगै, भ्रम और मूर्छाहो, मल उतरै नहीं, शरीर जड होजाय, आंतें बोला करैं, अफारा हो और वातव्याधिके कहे हुए और भी उपद्रव हों और जिस्में पित्त अधिक हो ऐसे आमवातमें दाह और पीलापन हो और वाताधिक आमवातमें शूल हो कफाधिकमें जडता हो शरीर भारी रहै खरज चलै येलक्षण जानो.

अथ आमवातकी दवा.

रास्ना देवदारु अमलतास सोंठि मिर्च पीपल अरंडजड़ सांटी गिलोय इन्हों के काढ़ामें सोंठिका कल्क मिलाय पीनेसे आमवात जावै.

दूसरा काढ़ा.

शल्मा, गिलोय, सुंठि, अरंडजड़, दारुहरदी, इन्होंका काढ़ा बनाय एरंडका तेल मिलाय पीनेसे आमवात जावै.

अथ अजमोदादि चूर्ण.

अजमोद, वायविडंग, सेंधानोन, देवदारु, चीता, पीपल, पीपलामूल, सौंफ, मिर्च ये सब दवा दश दश मासे, छोटी हर्र ४। तोले, सुंठि ८ तोले, भिदारा ८ तोले सब दवा एकमें मिलाय कूटि चूर्ण करि गरम पानीके संग लेनेसे सूजा हुआ तथा पीड़ा सहित सब तरहका आमवात दूर होय गुड़में गोली बांधिके खाय तो शरीर भरेकी पीडा और सूजन दूर होय

अरंडीका योग

अरंडीके बीजोंका तुष दूर करिके दूधमें खीर बनाय खानेसे आमवात दूर होय.

पुनः हरीतकी योग.

हर्रों के चूर्णमें अरंडीका तेल मिलाय पीने से सब तरहका आमवात नाश होय.

पुनः आमवातका इलाज.

त्रिफला, नागरमोथा, कूट, वायविरंग सब दवा बराबरले कूटके चूर्ण कर गिलोयके रसमें एक २ टंक

की गोली बांधकर एक सबेरे एक शामको खाय तो कमलवाय आमवात दूर होय.

अथ प्लीहा रोगका इलाज.

शुद्ध सिंगिया, शुद्ध सोहागा दोनों अदरखके रस में खल करके बजरीके एक दानाके बराबर खाय तो प्लीहा, वायुगोलादि उदरके सब रोग दूर होयँ.

अथ सर्वउदररोग नाशक चूर्ण.

हर्र, वहेडा, आंवरा, मिर्च, पीपरि सोंठि, दोनों जीरा, पांचो नमक, जवाखार, झाऊके पत्ता, फिटकरी, अजवाइन, चिरैता, लौंग ये सब दवा बराबरले कपड-छान करके नींबूके रसकी एक पुट देकर छःमासे चूर्ण खाय तो सब उदररोग दूर होय.

तथा.

हींग, पीपलामूल, धनियां, चीत, वच, बडा कचूर अमिलतास, पाँचों नमक, सोंठि, मिर्च, पीपरि, सज्जी-खार, जवाखार, अनारकी छाल, जीरा, तुलसी सब बराबर ले कपड़छान करके ६ मासे रोज खाय तो सब प्रकारके उदर रोग दूर होयँ.

अथ स्त्रीरोगका इलाज.

स्त्रीको जो खून परता होय तो जीराशंख शुद्ध लेकर उसमें मिश्री मिलायके छःमासे खाय तो खून बंद होय

वातके प्रदर रोगकी दवा.

सोंचरनोन, जीरा सफेद, जेठी मधु, कमलगट्टा इनका चूर्ण कर शहदके साथ खाय तो प्रदररोग और पित्तको गुण करता है.

सब प्रकारके प्रदररोगका इलाज.

मुलहठी अढाई टंक, चौराईकी जड़ का रस दो टंक दोनोंको शहदमें मिलाइके पीवै तो सब प्रकारका प्रदर रोग दूर होय.

१ स्त्रीधर्म होनेका इलाज.

कालातिल, सोंठि, पीपरि, मिर्च, भारंगी, गुड सब दवा बराबर ले काढा बनाय बीस रोज तक पीवै तो सब रोग दूर होयँ, धर्म होय, पुत्रनिश्चय होय.

२ तथा.

बिजौरा नींबूके बीज पीसकर जिस गऊके बछवा पैदा हुआ होय उसके दूधके साथ पीवै तो पुत्र होय सही।

३ तथा.

नागकेसरि, बछवावाली गायके दूधके साथ पीवै तो बाँझिनीके पुत्र होय.

वेश्यास्त्रीको गर्भ न रहनेका इलाज.

पीपरि, वायविडंग, सोहागा बराबर पीसकर ऋतुके समय स्त्री ६ दिन जलसे पीवे तो कभी गर्भ न रहै.

२ गर्भ न रहनेका इलाज.

पलाशके बीज जरायके राख और हींग दोनोंमिलाय दूधमें पीवे तो गर्भ नरहे.

१ गर्भिनीस्त्रीका यत्न.

मुलहठी, रक्तचंदन, खश, गौरीशर, कमलगट्टे की जड, मिश्री ये दवा बराबर लेकर काढ़ा बनाकर पीवे तो गर्भिनी स्त्रीका ज्वर दूर होय.

२ तथा.

धनियांके कल्कमें मिश्री डालके और पुराने चावलका धोवन मिलायके पीवै तो उलटी दूर होय ज्वर दूर होय.

३ तथा.

कुशकी जड, कांसकी जड, दूबकी जड, तीनोंका काढ़ाकर पीवे तो मूत्र उतरै प्रसूत होय.

गर्भिनीस्त्रीका लक्षण.

गर्भिनी स्त्री सात महीनाके बाद दस्तावर वस्तु नहीं खावै और डरकी बातों से, भयंकर शब्दसे बचीरहै पर दो महीनाके व्यतीत होते ही पुरुषको त्याग करना चाहिये और अधिक खाना खावै नहीं खराब चीजके

बची रहै अजीर्णसे डरती रहै और गर्भिनी स्त्रीको गाली न देवै न मारै और न कोई बातकी त्रास देवै जो देवने दागीना व कपडा घरमें दिया होय उनको देना और जिस देवताका दर्शन चाहै सो कराना मनुष्यको चाहिये कि जिस चीजपर गर्भिनीका दिल चलै वही जहां तक बनपरै देना.

जो लडका जल्दी न होवे उसकी दवाई.

गायका दूध आधा पाव और पानी पावभर मिलायके स्त्रीको पिलावै तो तुरंत लडका पैदाहोवे कष्ट न होवै तथा चक्रव्यूह कागजपर बनाकर दिखाना चाहिये और कोई चीज सुगंधित सोवरमें न जाना चाहिये.

बालककी दवाई.

बालकको कोई रोग होतो खानेकी दवाई एकमासासे ज्यादा न देवै जब बालक चार बरससे ऊपर हो तब दवाई बढ़ाना चाहिये बालक को घी मिश्री शहद मिलाकर पिलावै तो कोई रोग हो दूर हो जो बालक चूंची न पीवै और बारम्बार रोवै तो यह दवा दे सेंधानमक, घी, मिश्री एकमें मिलाकर बालकको देवै तो रोगशांति होवै अथवा पीपल, अतीस, ककडा-सिंगी, नागरमोथा सब समभागले कपडछानकर

मधुके साथ बालकको खानेको देवै तो शरदी, ज्वर, अतीसार, खाँसी सब दूरहों और वंशलोचन शहदके साथ बालकको दे तो खाँसी दूर होय. अथवा मुलहटी, वंशलोचन, धानकी खील, रसवत एकसें मिलाय कूटके कपडछान करके खिलावे तो सब ज्वर दूर होय, और जो दवाई मर्दके हरएक रोगपर दीजातीहैं, वही बालकको देवै (बालकके पलईका लेप) नारियलकी जटा, आंबाहरदी, दोनोंजीरा ये सब जिन्स समभागले कूट कपडछान करके घी और पानीडालके मुरावे फिर पतला लेप करै तुर्त अच्छा होवे.

इति श्री मुन्शी भगवान प्रसाद शिष्य भगत भगवानदास विरचित वैद्यक रसराज महोदधि मध्ये जवारीस, हिन्दी गोली, आनन्द भैरव रस, अजीर्ण कंटक रस, त्रिफलादि क्रिया, राजमृगांक क्रिया, बारहों महीना हर्र खानेकी विधि, सब तरहका मुरब्बा बनाना, जुलाबकी विधि, शिर और कान, आँख, दांत, नाक व खाँसी, दमा, श्वास, उदर रोग, संग्रहनी, अजीर्ण कृमिरोग, पांडुरोग, वातातीसार, सुनबहरी, नामर्दपना, परमा; बवासीर, भगंदर, आमवात, स्त्रीरोग, बालकरोगादि नाशके अनेक प्रकारकी हिकमत व इलाज वर्णनं नाम चौथा खंड समाप्त ॥

अथ पाण्डुरोगका वर्णन.

प्रथम पाण्डुरोग पांच प्रकारका उपजैहै जैसे वातको पित्तको कफको सन्निपातको मिट्टीखानेको और खेद करनेसे खटाई खानेसे दिनके शयन से तीखी वस्तु खानेसे या ये सब वस्तु घनी खानेसे वात पित्त कफके कोपसे मनुष्यका लोहू बिगड़के शरीरकी त्वचाको पीली कर देताहै शरीरमें पीडा और सूजन होय है.

वातपाण्डुका लक्षण.

जिसकी त्वचा,मूत्र, नेत्र रूखे तथा काले वा लाल होयँ और शरीरमें कम्प हो, अफारा हो भ्रमादिक हो; ये लक्षणहों तो वातका पाण्डुरोग जानो.

पित्तके पाण्डुका लक्षण.

जाके मल मूत्र नेत्र पीले हों;शरीरमें दाह हो;तृषा ज्वर हो; और मल पतला होय; शरीर पीला होय ये लक्षण पाण्डुरोगके जानो.

कफपाण्डुका लक्षण.

मुखसे थूक निकले, शरीरमें सूजनहो, तन्द्रा हो, आलस्य आवे, शरीर भारीहो, त्वचा, नेत्र, मूत्र सफेद रंग होय तो कफका पाण्डुरोग जानो.

अथ सन्निपातपाण्डुका लक्षण.

ज्वरहो, अरुचि हो; हिया दूखे; छर्दि होवे; प्यास

होवै; इन्द्रियोंका बल जाता रहै ऐसे त्रिदोषके पांडु रोगीको त्यागना वैद्योंको योग्यहै.

अथ मिट्टी खानेसे उपजे पाण्डुका लक्षण.

वातादिक अलगर कोप करते हैं जैसे कसैली मिट्टीके खानेसे वायुकोप करताहै खारीके खानेसे पित्त;सफेद मिट्टी खानेसे कफ कुपित होताहै फिर वह खाई हुई मिट्टी पेटमें जैसीकी तैसी रहतीहै और कोप करके तमाम शरीरकी इन्द्रियोंको क्लेश देती है पेटमें कृमि पड़ जाते हैं वात पित्त कफके कोपसे पाण्डुरोग बढे है यही लक्षण पांडुका जानो.

अथ वातपांडुकी दवा.

शुद्ध मंडूर २००तोले; लोहेके टुकड़े तिल सरीखे २००तोले; पुराना गुड़ २९२ तोले; जलवेत ८ तोले चीता ८ तोले, पीपल १६ तोले, वायविडंग १६ तोले हड़ ६४ तोले, वहेड़ा ६४ तोले, आमला ६४ तोले, पानी १०२४तोले,इन्होंको वर्त्तनमें घालि १५दिन तक अन्नके कोठामें धरै पीछे रोगीका वल देखि विचारिके देय तो पांडुको नाशै और कृमि, ववासीर, कुष्ठ, कास श्वास व कफके रोगोंको नाशै व पाँचो प्रकारके पांडुरोगको हरै.

अथ पित्त पांडुकी दवा.

आँवराका रस १०२४ तोले मन्द मन्द अग्निसे चुरावै फिर ये दवा डारै पिपली ६४ तोले, मुलहठी ८ तोले, मुनक्का ६४ तोले, सुंठि ८ तोले, वंशलोचन ८ तोले, खाँड़ २०० तोले, शहद ६४ तोले सब मिलाय खानेसे पांडुरोगको नाशै जैसे हाथीको शेर नाशै.

अथ कफपांडुकी दवा.

दशमूल, सुंठ इन्होंका काढ़ा करि पीनेसे पांडुको नाशै ज्वर अतीसार सूजन संग्रहणी कास अरुचि व कंठके रोगोंको किन्तु सब रोगोंको दूरकरै.

पुनः मंडूरलवण.

लोहेके कीटको अग्निसें लाल करिके गोमूत्रसें बीसबार बुझावै फिर सेंधानोन मिलाय खल करै तब बहेड़ाके रसमें पांच दिन घोटै तत्पश्चात् रोगीका बल देखिके तक्रके संग खानेकोदे पांडुरोग दूर होय.

अथ सन्निपातपांडुकी दवा.

हड़ १ भाग, बहेडा १ भाग, आमला १ भाग, सुंठ १ भाग, मिर्च १ भाग, पीपल १ भाग, चीता १ भाग, वायविडंग १ भाग, शिलाजीत ५ भाग, चांदी का भस्म ५ भाग, मंडूर ५ भाग, लोहा भस्म ८ भाग,

सोनामाखी ८ भाग, इन्होंको कूटि चूर्ण करि शहद मिलाय लोहाके बर्त्तनमें घालि धरै पीछे १तोले रोज खावै अग्निका बल देखिकै और परहेजसे रहे तो पांडु रोग, विष, कास, श्वास, क्षयी, राजयक्ष्मा. विषमज्वर, पेटके रोग, प्रमेह, सूजन, अरुचि, मृगीरोग इत्यादि शरीर भरेके रोगोंकोनाशै.

पुनः पांडुकी दवा.

सोंठि, मिर्चे, पिपली, हड़, बहेड़ा, आंवला, नागरमोथा, वायविडंग, चीता ये सब दवा समभाग ले और लोहचूर्ण ८ भागले इन्होंको कूटि चूर्ण करि घृत शहदमें मिलाय खानेसे असाध्य पांडुरोगको नाशै और सब शरीर भरेके रोग दूर होयँ.

पांडुनाशक अमृतहरीतकी.

सतावरि २८ तोले,भृंगराज २८ तोले, सोंठि २८ तोले, कुरंटक २८ तोले, इन्होंको चूर्ण करि ४४८ तोले पानीमें चुरावै जब २८ तोले रहै तब कपड़ामें छानि पीछे हड़ १९४० तोले, दूध१२० तोले मिलाय पकावै पीछे हडौंको चीरिके बीज निकालि दूर करै फिर पारा गन्धकका रस बनाय पीछे गिलोयका चूर्ण २८ तोले शहदमें मिलाय गोली १९६० नग बांधै

पीछे एक एक गोली एक एक इडमें भर सूतसे बांधि शहदमें डारि बर्त्तनमें घालि धरै फिर एक गोली रोज खाय तो पांडुरोग नाश होय और सम्पूर्ण रोगोंको हरै, शरीरकी रक्षा करै. इस दवाका गुण लिखनेयोग्य नहीं.

१ गजकर्णकी दवाई.

फिटकरी, मुर्दाशंख, मैनशिल, माजूफल, पलाश-पापडी येसब दवा समभागले कूट कपड़छान करनींबू के रसमें खल करके गजकर्ण पर लगावै तो अच्छा होय.

२ तथा.

सफेद चन्दनका चूरण एक तोला, आंवलासार गंधक एक तोला,जराया हुआ नीलाथोथा आधा तोला मैनशिल आधा तोला, कलमी सोरा आधा तोला; चौकिया सोहागा एक तोला, बनारसी राई आठ तोला सब कपडछान करके नींबूके रसमें एक दिन खल करै तो दाद,खुजली, गजकर्ण इत्यादि रोग दूर होवैं.

फोरा फोरी नाशक मलहम.

संगजराव दो तोले, सिंदूर दो तोले, मुर्दाशंख चार तोले, रालबोल चार तोले, गूगल दो तोले सब कूटके तिलका तेल दो तोले, घी चार तोले सबएक में मिला-कर अंगारपर रखके मलहम तय्यार करले सब जखमोंको दूर करै.

२ मलहम.

राल दो तोले, कपूर दो तोले, नीलाथोथाकी भस्म एक तोला, मोम दो तोले, सेंदुर एक तोला, कबला एक तोला, सफेदा एकतोला,सब कपडछान करके घीमें मिलाकर मलहम तय्यार करै इससे असाध्य भी जख्म अच्छा होवे और सब तरहका फोरा फोरी अच्छा होवे.

सब दर्दपर लेप.

आंबा हरदी दो तोला, पियाज दो तोला, शहद दो तोला, चूना एक तोला, गुड एक तोला, तीसीकाचूरण दोतोला, सबदवा एकमेंमिलाकर गर्मकरके जहांदर्दहोय तहां लगावै और ऊपरसे रुई लिपटावै सब दर्द दूरहोय.

पेटकी पीड़ाका लेप.

दोनों जीरा, बबूना, आंबाहरदी, रेंडीका तेल, ये सब मिलाकर गेंहूकी रोटी बनायके उसपर दवाई लगाके गर्म करके दर्दपर लगावे तो अच्छा होय.

असाध्य रोगियोंकी छातीपर कफ रहनेका लेप.

बनारसी राई, आंबाहरदी, महुआके फूल सब बराबर लेकर कुराय छाती पर लेप करै.

स्वांसदमा नाशकबटी.

बदामका तेल नवमासे, मधु तीन तोला, तीसीकी आठ तोला ये सब मिलाकर खावे खुराक छःमासे.

कुटकी, दोनों सिरसा, चिंचिरी, रूस, हैंस, जामुन कचनार, कैथा, किरवारा, दूधिया, विधारा, दरिया, निर्गुंडी, जसापुरैया, पुष्करमूल, तज, पीपल गजहर्ण, गूलर, नागफणी, घीकुवारी, चम्बेली, खस, बेरी, कुलथी, केवाँच, मन्दार, गुर्च, सेहुड, केतकी कलियारी, पलास, चितावारि, बड, पाकरि, टेकारि मुसली, हंसपदी, थूहर, धतूर, दात्यून, असगंध ये सब दोदो तोले ले सब चीजसें दो मन पानी छोडकर चुरावे जब एकमन पानी रहजाय तब दूध तेल डारिके सब एकसें चुरावे जब तेल मात्र रहजाय तब सीसीमें उठा- यके रक्खे इस तेलके मालिश से शरीरके सर्व रोग दूर होवँ इसका गुण अपारहै वर्णने योग्य नहीं है.

१ अंडकोषवृद्धिका इलाज.

वायविडंग, कुन्दर, पुरानी ईट, तीन तीन तोले लेकर कपड़छान करके चारमासे घीके साथ खाव जो पहले उलटी हो तो अंड अपनी जगहपर चला जाय.

२ इलाज.

दूध और रेंडीका तेल मिलाके कुछ दिन पिवै तो असाध्य अंडकोष दूर होय. अथवा पलाश व जमी- कन्दका चूर्ण करके इक्कीसदिन खाय तो अंडकोष दूर होय. अथवा आंवाहरदी, रेंडीकी जड, व फल व तेल मेथी, चारों दवा बराबर लेकर गर्म करके लेप करे तो अंडकोष अच्छा होय.

३ इलाज-लेप.

टेसूके फूल, आंबा हरदी, खुरासानी अजवाइन तीनों बराबर ले पीसे फिर गर्मकर लेप करे तो अंडकोष जाय. अथवा असगन्ध, जसवंतीकी पत्ती, रेंडीका मगज तीनों कूट करके गर्मकर लेप करे तो अंडकोष जाय. अब एक तंत्र लिखतेहैं जिससे अंडकोष दूर होय.

अथ अंडकोषनाशक तंत्रकी बिधि.

जिस मनुष्यका अंड बाईं ओरका फूला होय तो दहिनी ओरकी गुद्दीके चार अंगुल नीचे एक रस्सी बांधे, इक्कीस रोजके भीतर पैरमें गुद्दीके नीचे एक नस निकलैगी उस नसको अग्निमुखीके तेलसे दागे दूसरे दिन वह नस सूज आवेगी तब उसपर थोड़ा घी लगा. यदे फिर वहाँसे पानी निकलना आपही आप शुरू होगा. फिर उस नसपर खोपड़ा जरायके लगावै तो अच्छो होय. असाध्य रोग या बीस वर्षसे ऊपरका हो तोभी अच्छा होय पर प्रथम चार मासे बूकके खानेको देवै.

अथ सॉपके काटेकी दवाई.

सफेदमिर्च, सफेद मंदार की भस्म, नीलाथोथा ये तीनों बराबर खल करके मासे२भरकी गोलीबांधे फिर पानी के साथ एक गोली खानेको देवे तो जहरदूर होय.

सांपकाटेका नास.

कच्चा नीलाथोथा. आककी जड दोनों बराबर लेकर

चूर्ण करके नाकमें छः छः मासे और फिर एक फूकनी लेकर फूंके तो तुर्त छींट होय आध घंटेमें वह आदमी अच्छा होय. अथवा जमालगोटा शुद्ध मटर बराबर खिलावे तो जहर दूर होय. अथवा कलौंजीकी जड घीसकर पिलावे और कलौंजीके बीज घिसके आँखोंमें लगावे व पियाज खिलावे तो जहर दूर होय. अथवा एक चूहा मारके उसका पेट फाड जहाँ साँपने काटा होय वहां रखदे तो जहर दूर होय.

बिच्छूके काटनेकी दवाई.

अघझाडाका रस जहां बिच्छू डंक मारे वहां घसिके लगावै फिर उसकी अढाई पत्ती गुरमें मिलायके खाय तो जहर दूर होय. अथवा नौसादर कलीका चूना, सोहागा एकमें मलके सूंघे तो जहर दूर होय. अथवा इन्द्रायनकी जड़, जायफल, हरताल दोनों घसके लगावै तो जहर दूर होय.

अथ बावले कुत्तेके काटनेकी दवाई.

दोनों जीरा, कालीमिर्च पीसके एक महीना तक पिलावै तो सब जहर दूर होय. अथवा पियाज कूटके शहदके साथ लेप करे तो जहर दूर होय. जो अंगपर बडे बडे चट्टा, कोढके समान परजावें तो आंवलासार गंधक छःमासे, जमालगोटा छःमासे, नीलाथोथा छः मासे तीनोंको कूकके लोनी घीमें डालके तांबेके वर्तनमें रक्खै एक दफे पानीसे धोवे तब सब शरीरमें लेप

करके एकप्रहर अग्निमें तापै आंखकान यानी गलेकेऊपर न लगावै और तापनेसे शरीरमें बजरीसे दाने सब जगह पडजायँ तो दूसरे दिन गोबरसे धोय डालै नीरोग्य होय.

अथ नोकरसमाना असाध्यरोगकी दवा.

साम्पुरोमी सात मासे, जीरा करमनी सात मासे, सफेद मिर्च सात मासे, छोटी पिपरी सात मासे, बेरका मगज सातमासे, दालचीनी मोटी साढेतीन मासे, सोंठि चौदह मासे, फरफीऊन चौदह मासे, रूमीमस्तंगी पौनेदो तोले, सुरंजन जंगली जिसको सिवारा भी कहते हैं पांच तोले सबका चूरण करि साम्पुके रसमें गोली बांधे सात मासे जीराके अर्कके साथ खाना बहुत गुणकारकहै.

१ महजूमसर्दकी.

सुरंजन तीनतोले, सनायके पत्ती १७ मासे, तगर सात मासे, सोंठि७ मासे, जीरा करमनी७मासे, पीपरी७ मासे सब दवा कूट कपडछान करके दवाके बराबरमधु लेके एकमें मिला महजूम तय्यार करै खुराक नौ मासे गर्म पानीके साथ खाय तो सबप्रकारका दर्द दूर होय.

२ महजूम.

केसरि, अकरकरा, अजवाइन खुरासानी, फरफिऊन, जुफलिफर्न, इलायची बडी, पीपरी, सब दवाके कपडछान करिके मधुमें मिलाकरके महजूम तय्यार करै खुराक ६मासे मनीको बढातीहै सुस्ती को दूरकरतीहै शरीरको मजबूत करतीहै. सब तरह के मरजको दूर करतीहै.

बंधेजकी दवा.

अफीम, मिश्री, जायफल, लौंग, कस्तूरी, केसरि कालीमिर्च, सूंठ, तज सब दवा कूटि कपड़छान करिके मधुमें खल कर पौने दो मासेकी गोली बाँधे खुराक एक गोली शामको एक सवेरे खाय तो पन्द्रह दिनके पीछे शरीर पुष्ट होय बंधेज होवे सही.

गर्मी-उपदंश तीन दिनमें अच्छी करनेकी दवा.

भंगराज छः तोले मिर्चीं दो तोले मिलाके खलमें एक दिन खल करै फिर जंगली बेर बराबर गोली बांधै एक गोली सांझ और एक गोली सवेरे खाय तो सब तरहकी फिरंगवायु उपदंश गर्मी दूर होय.

तिजारीकी दवा.

नींबीकी अढाई पत्ती गुडके साथ खाय तो ताप नाहरू, तिजारी छाह दूर होय.

सर्व रोगनाशक दवा.

सोंठि, सोहागा, सिंगरफ, सेंधानमक, वायविरंग हरदी, मिर्च, हींग, चित्रक जमालगोटा ये सब दवा सम भागले कूट कपड़छान करिके दो रत्तीके बराबर गोली बांध एक शाम और एक सवेरे ठंढे पानीके साथ खाय तो कफ, खांसी, चौरासी प्रकारकी वायु पन्द्रह दिनमें जाय औ सब रोग दूर होवें

हूकका इलाज.

चनाका खार एक मटर भरि और चार चना भरि गुडले एकमें मिलाके शामको खाय तो सबेरे चंगाहोय.

सब प्रकारका ज्वरनाशक चूर्ण.

नीबीकी जड़, फल, फूल, पत्ती तथा छाल बारह टंक, सोंठि नौटंक, मिर्च तीनटंक, पीपरी तीन टंक, त्रिफला नौटंक, सोचर नमक. तीनटंक, अजवाइन तीन टंक, जवाखार तीन टंक, ये सब दवा कूट कप-डछान करिकै दो टंक गरमपानीके साथ खाय तो शीतज्वर, नित्यज्वर, दाहज्वर, एकान्तरा, बेला, तिजारी, चौथियाज्वर इत्यादि सब प्रकारके ज्वर नाश हों.

तिजारीज्वरनाशक काढ़ा.

छड, नागरमोथा, केसरि, कुटकी, पटोलपत्र, ये सब दवा बराबरले काढ़ा बनायकर पीवै तो ज्वर जाय,

चौथिया ज्वरका काढ़ा

अरूसकी जड, आंवला, सोंठि, देवदारु ये सब दवा सम भागले काढ़ा बनायके पीवै तो चौथिया ज्वर दूर होय.

२ तथा.

लालचंदन, सोंठि, चिरैता, कुटकी, नागरमोथा गिलोय, आंवला सब बराबर लेकर, काढ़ा करके पीवे तो चौथियाज्वर दूर होय.

रोग दोष दूर होनेका उपाय.

आक अरंडी फूल मँगावे । धुनितापर सेंदूर लगावे॥ गूगुल धूप देय अति चावन । मंत्रराज यह करिके गायन ॥ ॐ श्रीं ह्रीं फट् स्वाहा ॥ रोगी के शिरसे उतार करिके बाँयें कोनमें गाडै तो संपूर्ण रोग दोष मिटजावैं.

घावके झारनेका मंत्र.

राम मारे पेदुकी, लछिमन ओढे घाव ॥
फूलै औ न पाके दरै सूखि जाव ॥

अथ मंत्र बेरवा विनहीं जहरबात थन इलगोहिया का इलाज.

चौ०—लंका के दानव पलंकाके पूत अंजनीके पूत नरक हवा झारै अंजनी के पूत बेरवा झारै अंजनीके पूत विनही झारै अंजनीके पूत जहरबात झारै अंजनी के पूत थनइल झारै अंजनीके पूत गोहिया झारै नाचत आवै नाचत जाय खेलत खात पखंड जाय पिंडकी सागनती हंक डंकनी आलीम सालीम दुख स्वाहा हो जाय राम लछिमन तीनो आय बेरवाके पानसें खाय राम लछिमन तीनो आय धूक चं नरक हवा झारै धूक चं जहर वात झारै धूकचं थनइल झारै धूकचं गोहिया झारै हमरे झार लेइ झुरि जाय.

कानका मंत्र.

आसमीन न गोट वन्दी कर्म हीन न जायते दोहाई

महावीरकी जो रहे कान पीरकी अंजनीपुत्र कुमारी बायें पुत्र महाबलको मारि ब्रह्मचारि हनुमंताई नमो नमो दोहाई महावीरकी जो रहै पीर मुंडकी.

प्रेतका मंत्र.

तुमसाया मोहिता सर्वे ब्रह्मा त्रिपुरैकस:तुमजानंगतः देवी प्रचंड त्रिशूलंधारिणी ॥ साकला होमकरै भूतदूरहो.

सनाय खानेकी विधि.

शहदके साथ सनाय जो कोई खावे.
बल होय अतुल्य जो नव मासा पावे.
तक्करके साथ सनाय जो खावे.
छातीको दर्द और सुस्ती मिटावे.
गुलकंदके साथ सनाय जो खावे.
शर्दी सब दूर हो खाना बहुत खावे.
मिश्रीके साथ सनाय जो खावे.
तमाम बदनमें ताकत दिखावे.
गायके घीके साथ सनाय जो खावे.
कोई दर्द नहीं सदा खुश होवे.
दहीके साथ सनाय जो खावे.
जहर खाया होवे सभी दूर होवे.
चोपचीनीके साथ सनाय जो चालिस दिन खावे.
आंखोंकी रोशनी सदा बढावे.
आधा तोला सनाय पानीसे जो खावे.

हमेशातन्दुरुस्त रहै रोग कभीना पावे.
गायके दूधके साथ सनाय जो खावे.
नया खून पैदा करै गलीजको नशावे.
बकरीके दूधके साथ सनाय जो खावे.
तीसदिनामें अतिसुख पावै.
हरिनीके दूधके साथ सनाय जो खावे.
नामर्द मर्द होवे बल अतुल्य होवै.
अगर ऊंटके दूधके साथ सनाय जो खावे.
खुशीरहे हमेशा कलेश ना पावे.
छोहाराके साथ सनाय जो खावे.
मुँह दाँतकी दुर्गंध तुरत हटावे.
अनारके शरबतके साथ सनाय जो खावे.
छातीके रोग दूर और उदरसाफ होवे.
अगर भंगराके रसके साथ सनाय जो खावे.
जवानी रहै सदा बाल सफेद न होवे.
इमलीके रसके साथ सनाय जो खावे.
छातीका कफ और कब्जियत नशावे.
अदरखके रसके साथ सनाय जो खावे.
जीरनज्वर सन्निपातको मिटावे.
गर्म पानीके साथ सनाय जो खावे.
कान शिर और नाकका दर्द तुरत हटावै
ककरीके बीजके रसके साथ सनाय जो खावे.

इन्द्रीकी पथरीको तुरत हटावे.
इसका गुण बहुत कहांतक वरणन कर बतावे.
जो सेवे तो रोग कभी नहिं पावे.
चेला नादान भगवान दास कहावे.
फारसीको उल्थाकर हिन्दी बनावे.

अथ पारेका सिद्ध गुटका.

पारा दोतोले, संखिया चार तोले, नमक दो तोले, जामुनका सिरका तीनसेर यह सब लेकरके पहिले तवापर आधा नमक रक्खे फिर पारा रक्खे फिर पारे को नमकसे ढांप देवे और तवाके नीचे अग्नि जरावे ऊपरसे सिरका छोडै कलछुलीसे चलाता जावे सिरका छोडता जावे जबतक मसका न होवै तब तक अग्नि जराता और सिरका छोडता जावै जब मसका हो जावे तो मोटे कपड़ेमें रखकर पोटरी बांधिके गारै जो कपड़ेमें पारा रहजाय उसको साफ कर ऐसा धोवै कि सूर्यकीसी ज्योति होवै तब गोली बांधिके धतूरेके तेलमें दोदिन रक्खे फिर नींबूके रसमें दोदिन रक्खे फिर पोस्ताके रसमें दोदिन रक्खै फिर निकाल करके जसवंतीके पत्ताके रससे धोकर साफ करले इस गोलीको जो दहिने भुजापर बांधै तो वो मनुष्य देवताओंके सदृश होवै गोली दिवाली या होलीके रोज बनावे अथवा शुद्ध होकर अदृष्ट लग्नपर बनावे.

अथ केशजमनेका इलाज.

खरबूजेके बिया; अंडाकी जर्दी ३० जैतून तेज-पत्ता; मोरद लोहचूर्ण ये सब दवा बराबरले कूटकरके मलहमकी तरह बनाकर लगावे तो जिस जगह केश न होयँ उस जगह १८ रोजमें केश जमैं सही.

चित्रकादि चूर्ण.

चित्ता; पीपलामूल; पीपरि; गजपीपरि ये सब दवा बराबर ले कूट कपडछान करके शहदके साथ छःमासे खाय तो खांसी दूर होय.

हरीतक्यादि चूर्ण.

हर्र,बहेडा,लोहारस.सब दवाबराबरले कूट कपड़ छान करके छःमासाखाय तो सब प्रकारके वात रोग दूर होयँ.

पंचपाटकादि चूर्ण.

पाँचो नमक दो तोले, कलमीसोरा दो तोले, नौसादर दोतोले,पीपरि दो तोले, मिर्च दो तोले,ये सब दवा कूट चूर्ण बनाय छःमाशा खाय तो उदररोग दूर होय.

हिंगाष्टकादि चूर्ण.

सोंठि एक तोला, भुंजा सोहागा एक तोला, बड़ी हर्र एकतोला, सेंधानमक एक तोला, हींग एक तोला, ये सब दवा कूट कपडछान करिके सहिजनेके पत्तोंके रसमें खल करिके जंगली बेरके बराबर गोली बाँधै एक गोली सबेरे एक शामको खाय तो भूख लगै सब प्रकारके उदर रोग दूर होवँ.

तमालपत्र ८ तोला, नागकेसरि ८ तोला, कस्तूरी १ तोला, धत्तूरबीज ४ तोला, सब दवा घडामें डारिके मुँह बंद करिके जमीनमें गाड़दे १५ दिनके पीछे रोगीका बल विचार देखिके खानेको देय तो धातु क्षय पाँच प्रकारके साँस छःप्रकारकी बवासीर ८ प्रकारका उदर रोग, बीस प्रकारका परमा, महाव्याधि, अरुचि पांडु सब प्रकारके वातरोग, शूल, शर्दी, रक्तप्रदर अठारह प्रकारके कुष्ठ रोग, मूत्र शर्करा, मूत्रकृच्छ्र इन सब रोगोंको दूर करताहै और बाँझको पुत्र देताहै. शरीरको पुष्ट और निरोग करताहै.

गूगुल योग.

गिलोय ९६ टंक, गूगुल १२८ टंक, त्रिफला २०० टंक, इस औषधको तिगुना पानी डारिके चुरावे जब तीन भागजरिजाय एक भाग पानी रहिजाय तब छानिले फिर दात्यून, कूट, त्रिफला, वायविडंग तज गिलोय निसोत ये सब दवा ४ चार टंक लेकर चूर्ण करके आगके काढ़ामें मिलादे खुराक तीन टंक तो वातरक्त, दुष्टवर्ण, परमा, भगंदर, आमवात इत्यादि सब रोगदूर होयँ.

अथ गूगुलकिशोर.

शुद्ध भैंसागूगुल एक सेर, एक मन पानीमें चुरावे पीछे हर्रे एक सेर, बहेड़ा एकसेर, आंवला एक सेर गुरुची १६ तोला डारिकेचुरावे जब आधा रहिजाय तब छान पारा अढाई टंक, गंधक अढाई टंक, वायविरंग अढाई

टंक, निसोत अढाई टंक, गुरुच अढाई टंक दात्यूनी अढाई टंक, पहले पारा गंधककी कजरी करै तब दवा कूट कपड छान करिके सब दवा एकमें मिलादे खुराक ८ मासा सवेरे खाय तो आमवात और वातरोग इत्यादि दूरहोयँ.

१ दवा हैजाकी बीमारीको तुर्त शांत करै.

मिर्च एकमासे, अरहरके पत्ता एक तोले लेके खूब घोटै फिर पावभर पानी डालके पिलावे तो तुर्त हैजामिटै.

२ तथा.

आककी जडको अदरखके रसमें खल करै फिर मिर्च बराबर गोली बांध एक गोली पानीके साथ खिलावै तो हैजा जावै.

३ तथा.

बिजौरा नींबूके पंद्रह बीज दोतोला पानीके साथ मिश्री डालके पिलावे तो तुर्त अच्छा होय.

हुचकीकी पहली दवाई.

कलौंजी ३ मासा चूर्ण करके माखनसें खाय तो अच्छा होय.

तथा.

काला उर्द चिलमपर रखके तंबाकूके समान पीवै तो अच्छा होवै.

पीपलका चूर्ण.

एक सेर पीपल, दो सेर दूधमें जुरावै, जब दूध जल जाय तो पीपलको सुखायके चूर्ण करिके चौदह माले

चूर्ण और छः तोला मिश्री डेढ़ पाव दूध डालके दस रोजपीवै तो नामर्दपन मिटै वीर्य बढ़ै.

पीपलकी गोली.

अरपंद, कपूर, बीजाबोल, अजवाइन सब कूटके अदरखके रसमें चना प्रमाण गोली बनावै एक गोली खाकर दूध पीवै तो बहुत जोर होय.

हर्डोंकी जवारिस.

हर्डै बारह तोले, सनाय बारहतोले, हर्डै बीसें कुराम कूट कपडछानकरिके मधुमें मिलायके जवारिस तय्यार करै फिर नव मासे खानेको देवे आंखोंकी गर्मीको दूर करता अन्नको पचाता और सबरोगोंको फायदा देताहै.

मिर्चादि चूर्ण.

मिर्चे सोंठि पांचो नमक मिलाकर कपड़छान करके सबेरे फंकी खावै तो कब्जियत दूर होय. यह बात रोगको बहुत फायदा करती है.

सुंठ्यादि चूर्ण.

सोंठि. मिर्चे, पीपल, तज, तेजपात, इलायची, लवंग, जायफल, बंसलोचन, कपूर, बावची, अनारदाना, सब बराबर लेकर कूट कपड़छान करके सब चूर्णके बराबर लोहरस लेवे और लोहरसके बराबर मिश्री मिलायके छः मासे रोज सबेरे खाव ऊपरसे बकरीका दूध पीवै तो राजरोग, मन्दाग्नि, बीसों परमा दूरहोवैं आयंत पुष्टहोय

इति श्रीमुन्शी भगवान प्रसाद शिष्य भगत भगवानदास विरचित वैद्यक रसराज महोदधि मध्ये गजकर्णकी दवा, मल्हम, लेप, तेल बनानेकी विधि. खाँसी, दमा और अंडकोष सूजनेका इलाज, साँप काटेकी दवा, बिच्छूकी दवा, बावले कुत्ता काटनेकी दवा, सांदेकी दवा, महजूम, बन्धेजकी दवा, गर्मी तिजारीकी दवा, सब रोगोंकी दवा, हुक्की दवा, सर्व ज्वरका चूर्ण और चौथिया तिजारीकी दवा, अति उपयोगी मंत्र यंत्र प्रयोगादि और घावका मंत्र,कानका मंत्र, प्रेतका मंत्र, और नकेहवा वेरवा थिनहीं जहरवात धनइलका एकमंत्र सनाय खानेकी उनइस विधि पारेका सिद्ध गुटिका, चूर्ण, गोली, दशमूल गूगुलयोग, गूगुल किशोर सब रोगोंकी दवाई व सबके बनानेका सहल २ उपाय वर्णनं नामपंचमो खंड सम्पूर्णम् ॥ ५ ॥

अथ कुष्ठ रोग वर्णन.

गुरूकी स्त्रीके संग तथा गौके संग तथा गोत्र की स्त्रीके संग मैथुन करनेसे कुष्ठ होवे अथवा विरुद्ध भोजन करनेसे, अजीर्णमें भोजन करनेसे, पतली चीकनी भारी वस्तुके खानेसे, मल मूत्र रोकनेसे, मछली और दूध के एकही संग खानेसे, शीतल गरम एकही संग खाने से ब्राह्मण गुरू माता पिता इन्होंका आदर न करनेसे कुष्ठ होवे तथा पापकर्म्म करनेसे

प वात पित्त कफके कोप करके त्वचा रक्त मांस लोहूको बिगाड़ कर १८ प्रकार का कुष्ठ उत्पन्न होता है सो इसमें ७ महाकुष्ठ हैं और छोटे छोटे ११ कुष्ठ हैं सब मिलके १८ कुष्ठहैं.

अथ सात महाकुष्ठके लक्षण।

जिस कुष्ठका रंग काला लाल मिला हुआ ताम्रके रंगका हो वा मिट्टीके खपरेके समान रूखा हो, कड़ा पतला चर्म्म होजाय और गूलरके फलके रंग लाल होय और अंगमें पीड़ा सूजन हो रुधिर काला हो हाथ पैरमें कानमें झान्सियहों इनसब उपद्रवोंके शांतिभोजन वास्ते ३ चांद्रायण व्रत करैऔर ब्राह्मणोंको करावै और दान दे तो पापशांति होय और वैद्यकशास्त्र में कही औषधोंका दान करै तो कुष्ठ शांति होय.

अथ कुष्ठकी दवा.

वायविडंग, त्रिकुटा, नागरमोथा, चीता, मीठा तेलिया, वच, गुड़ये समभागले तीनवार लेप करैतो कुष्ठदूरहोय.

पुनःदूसरा लेप.

कलमी सोरा इमलीकी लकड़ीके कोइलापर धरै फिर कोइलामें आग जराय रात्रिभरि आगमें रहने दे सवेरे निकालिके कलीका चूना १ भाग सोराका खार २ भाग मिलाय जहां कुष्ठकी झान्सियां होयँ वहां सँभारिके थोरा लेप करै तो कुष्ठ अच्छा होय.

रके वायुरोग, ४० प्रकारके पित्तरोग, २० प्रकारके कफरोग द्वंद्वज सन्निपात, शालक्यरोग, नेत्ररोग, भृकुटीरोग, कंठरोग, तालुरोग, जीभरोग, उपजीभरोग, कांधा कंठके बीचके रोग, भोजनके ऊपर देनेसे औ पेटके रोगोंमें भोजनके मध्यमें खानेसे सम्पूर्ण रोगोंको नाशै और यह रसायन है.

अथ सफेदकुष्ठको लेप

असगन्ध, वायविडंग, चीता, भिलावाँ, जमालगोटाकी जड, अमलतास, निंबोली इन्होंको कांजीमें पीसि लेप करनेसे सफेद कुष्ठ नाश होवै.

पुनःलेप.

हरताल ४ मासे, बावची १६ मासे, इन्होंका गोमूत्रमें पीसि लेप करनेसे श्वित्र नाश होवै.

अथ घोड़ाचोली लिख्यते.

रस विस गंधक औ हरताल । त्रिकुटा त्रिफला औ भृंगराज ॥ जमाल मिलायके बांधै गोली । कह गोरख यह घोडाचोली ॥ औषध.

पारा, हरताल, गंधक, वच्छनाग, पीपलामूल, मधुपीपरी, सोहागा, हड़, बहेड़ा, आँवरा, सोंठि सफेद निवरसी सब ओषधि सम भाग ले कपड़छान कर भृंगराजके रसमें छः दिन खल करै फिर मिर्च बराबर

गोली बांधे और रोगी का बल विचार के एक गोली शाम एक सबेरे एक महीनाभर खावै तो भूख बहुत लगै जिस स्त्रीके बालक नहीं होता हो तो इस गोली को रजस्वलाके पीछे तीन दिन स्त्री पुरुष दोनों आदमी पानके साथ खावैं तो जरूर बालक होय यह गोली गायके घीके साथ खाय तो अजीर्णज्वर जाय, दही और अनारके दानेके साथ खाय तो संग्रहनी रोग जाय, जिसका पेट पत्थरके सरीखा कठोर होय तो इस गोलीको पानीमें पीस पेट पर लेप करै तो पीड़ा औ कठोरता दूर होय. और जो कोई यह गोली अदरखके रसके साथ खाय तो सब तरहका वात रोग जाय और जिस आदमीको बीछीने डंकमारा होय तो यह गोली सोंठिके साथ घिसि घावपर लेपकरे तोतुर्त बीछीका जहर दूर होय और अरसीके चूर्णकेसाथखाय तो ताप ज्वरजाय, जीरा और शक्करके साथ खाय तो पुराना ज्वर जाय.

सेंदुर एक टंक, घी छः टंकके साथ एक गोली घिसिके लगावे तो मुखकी झाईं दूर होय.

और यह गोली मिर्चमें पीस नास लेवे तो मृगी रोग, नाक रोग दूर होय. और खीराके बीजके साथ गोली खाय तो मूत्र रोग जावै पेशाब होवै, अकरकराके साथ यह गोली खाय तो इन्द्रियकी पथरीको तुर्त निकाले और पानके रसके साथ पंद्रहदिन खाय तो भूख

लागै, मधु पीपरिके साथ खाय तो हडफूटन रोग जाय खसखसके रसके साथ खाय तो वायशूल रोग जाय. कडुआ गुंजा औ अनारके रसके साथ गोली घिस बालपर लगावै तो बाल झरिजायँ और फिर जमिआवैं, पानीके साथ घिसि आँखों में लगावै तो जो आँखें लाल होयँ तो अच्छी होयँ.

लोचरस बदाक्षके साथ उपरोक्त गोली खाय तो खून गिरता बन्द होय, सोंठि औ स्त्रीके दूधके साथ गोलीको घिसि कानमें डारै तो कानकारोग दूर होय और तुलसीके रसके साथ गोली खाय तो तिजारी ज्वर जाय.

कोहरीया धतूरके बीजके साथ यह गोली खाय तो सफेद कुष्ठ दूर होय और भंगराके रसके साथ खाय तो शरीरकी सुस्ती जाय, संभालूके रस के साथ खाय तो प्रमेह रोग जाय.

पीपरि और गुर बेलके साथ यह गोली लेप करै तो सन्निपात दूर होय पुराने गुरके साथ यह गोली खाय तो मुँहका दुर्गंध दूर होय, पाचर रसके साथ यह गोली खाय तो मुँहकी जरदी और सूजन दूर होय ऊँमराके चूरणके साथ गोली खाय तो सब तरहकी गरमी जाय, ऊँवराके चूरणके साथ वर्षदिन खाय तो निरोग होय रोग कभी न पावै, मधुके साथ खाय तो शरीर पुष्ट होय बल अतुल्य होय.

करे शहदके साथ गोली खाय तो वायगोला रोग जाय इमलीके रसके साथ गोली खाय तो पित्तज्वर जाय, तुलसी और अनारके दनाके रसके साथ गोली खाय तो शूल रोग जाय तुलसीके रसके साथ घिसि आंखोंमें लगावै तो रतौंधी जाय.

सफेद गुंजासें घिसि आंखोंमें डारै तो फूली रोग जाय.

अथ दूसरा घोड़ाचोली.

पारा त्रिफला सोंठि जमालगोटा निसोत कुटकी वच्छनाग हरताल हरदी मिर्च सोहागा अफीम लवंग जायफल जावित्री मधु पीपरि वायविडंग ये सब दवा सम भागले कूट कपडछान करिके भंगराके रसमें छःदिन खल कर मिर्च बराबर गोली बांधे और ऊपरकी घोड़ाचोलीके अनोपान मुवाफिक रोगीको देवै ॥ चौ० ॥ भगवानदास धन्वन्तरिको शीशनवावे ॥ घोडा चोली गोली बनावे ॥ जो गुरुका ध्यान लगावे । अरु संतनको शीशनवावे ॥ यहि औषधको करे विचारी इसका गुणहै सबसे न्यारी ॥ संतन वचन ध्यान में लावे । सोई वैद्यक सुख उपजावे ॥ जो परहेजसे गोली खावे । सोनर कभी रोग नहिं पावे ॥

इति घोडाचोली समाप्तम् ।

अथ गोरखमुंडी कल्प प्रारंभः ।

अमावसके रोज जड़समेत मुंडी उपारके छायामें

सुखायके एक तोले गायके दूधके साथ ४० दिन खाय तो शरीर निरोग होय. और इस विधिसे वर्ष-दिन खाय तो महाबली होय आचारसे रहै. फिर वही चूर्ण शामको पानीमें भिगावे और सवेरे बालोंमें मलै तो बाल काले होवँ फिर वही चूरण इकइसदिन खाय और ब्रह्मचर्य्यसे रहे तो अग्निमें मुख न जरै और पानी में डूबै नहीं और जिस मुंडीमें फल फूल नहीं लगा होय तो उसको उपारि लावै और छायामें सुखाय चूरण कर दूधमें पीवै तो ब्रह्मज्ञानी होय आगमजानै महासिद्ध होय फिर उसी चूरणको पानीमें भिगोय आंखमें डारै तो आंख रोग दूर हों और फिर वही चूरण जौके आटामें मिलाय गायकी छाँछ लेकर सानै और रोटी बनाकर गायके घीके साथ खाय तो कायाकल्प होय सुवर्ण जैसा शरीर होय कुछ दिन सेवै तो पूज्यमान होय ब्रह्मचर्य्यसे रहे फिर मुंडी उखाडके रस निकाल शरीरमें मलै तो पीड़ा दूर होय फिर मुंडीका बीज एक तोला रोज खाय वर्षदिन सेवै तो बूढा नहीं होय जो आचारसे रहै.

फिर मुंडीपंचांगले चूरण करके शहदके साथ कुछदिन खाय तो कवि होय और बल बहुत होय.

इति गोरखमुंडी समाप्तम् ।

अथ शुक्रपाक ।

एरंडीका बीज एकसेर, दूध आठसेर, मिश्री चारसेर पहिले एरंडीका छिलका दूर करके पीस दूधसें मिलाय मिश्री डाल मधुरी आंचसे खोवा करै तब सोंठि पीपरि लवंग इलायची दालचीनी साठी हड़ बाला जावित्री जायफल तमालपत्र नागकेसर असगंध रासना खडगंधा पित्तपापड़ा दोदो तोला लेकर कूट कपड़ छान करके खोवासें डाले पीछे अदरखरस एक तोला लोहा भस्म एक तोला सब एकमें मिलाय पाक तैय्यार करै रोगीका बल देखकर सबेरे खानेको देवै कुछ दिन सेवै तो अस्सी प्रकारका वातरोग दूर करै चालिस प्रकारके पित्तरोगको दूर करै आठ प्रकारके उदररोगको हरै बीस प्रकारके प्रमेह रोगको हरै साठि प्रकारके नाड़ीव्रण रोग हरै अठारह प्रकारका कुष्ठरोग हरै सात प्रकारका क्षयरोगहरै पांच प्रकारका पांडुरोग हरै पांचप्रकार कास्वास रोग हरै चार प्रकार संग्रहनी रोग हरै और नेत्र रोग इत्यादिक सब रोग दूर करै पथ्यसे ब्रह्मचर्य्यसे रहै

अथ मेथीपाक प्रारम्भः ।

मेथी बत्तीस तोला सोंठि बत्तीस तोला इन्होंका चूरण करके कपड़छानकर दूध दोसौ छप्पन तोला घृत बत्तीस तोले सब एकमें मिलाय चुरावै जब कड़ा होजाय तब अग्निपरसे उतार लेवै पीछे मिर्च पीपरि सोंठि पीपलामूल चित्ता अजवाइन धनियाँ जीरा

करै मालकांगनी एरंडीके बीज असगन्ध आमाहरदी सब पीसि भेडीके दूधमें मिलाय गरमकर लेप करै तो अच्छा होय सूजन हटै.

अथ अजीर्णका बयान.

पेट भारी रहे शिर भारी रहे आलस रहे देह टूटे मुँहसे पानी छूटे तो जानो कि अजीर्ण हुआ और पेटमें पीडा, जँभाई बहुत आवैं, अजीर्ण में गरम पानी पीना हित है स्नेह जुलाब देना उलटी करना हित है जल्दी से इसकी दवा करै नहीं तो नाना प्रकारका रोग पैदा करता है.

अथ आहारका बयान.

हलकी रोटी तुरत पचजाती है मावेदार रोटी देरमें पचतीहै गरम गरम रोटी भोजन करनेसे उदर की तरीको सोख लेती है ठंढी रोटी उदरको तर करती है और सूखी रोटी भोजन करनेसे रोग पैदा करती है और दालि तरकारी कच्ची न रहै अच्छी तरह से चुराइ लेइ रोटी भी अच्छी तरहसे सिझाइ लेय भोजन से मनुष्य का जीवन आधार है सो मनुष्य को चाहिये कि सँभारि के भोजन करै कच्ची पक्की देखि लेय और गरम शरद देखि लेय और जब तक अच्छी क्षुधा न लगै तब तक भोजन न करै.

अथ मलका बयान.

मनुष्य को चाहिये कि मल को दो दफे

पर एक घंटा मालिश करना फिर गरम पानीका सेंक करना. पानीका भाफ देना जितना पानीके भाफसे सेंक करेगा उतना रोग दूर होगा इसी विधि प्रमाण से पन्द्रह दिन सांझ सवेरे जो करेगा तो शीतपित्तकी जो गाँठि रहती है सो दूर होजायगी रोगी नीरोग हो जायगा सही यह कुछ कड़ी दवा नहीं है.

अथ शीतपित्तके खानेकी दवा.

हसबा मगरबी सात तोले सनाय पत्ती अढ़ाई तोले सौंफ अढ़ाई तोले बिसफैज दो तोले सहदरा दो तोले लालचन्दनका चूर्ण एक तोले मिश्री सात तोले सब दवा मिलायके कूटि कपडछान करिके सात तोले शहद मिलायके रोगीका बल देखिके इकइस दिन तकखानेको देय तो शरीर भरेके खूनको साफ करि देगा खराब खूनको दूर करैगा नवाखून पैदा करैगा, शीत पित्तकी जड़ दूर होगी रोगी निरोग हो जायगा.

अथ शीतपित्तमें पथ्य.

चावल मूंग कुलथी करेला पोईशाक गरम पानी पित्त कफ नाशक औषध ये सब शीतमें पथ्य हैं.

अपथ्य.

स्नान करना घाम खटाई भारी अन्न ये रोगमें अपथ्यहैं शीत में पहिले उलटी जुलाब देना पीछे आगलका दवा करना सेकना.

और अनेक तरहका दुःख उठायाहै हे सज्जन पुरुष ऐसे सब लोगोंको त्याग करौ यह वेदकी रीति है.

नाडीभेद–चौपाई.

वात पित्त कफ ये सुनि लेहू । क्लेश होत इनहींसेदेहू ॥
जो तिहुँते एको बढ़ि जावै ॥ तौ जानैमृत्युनिकटैआवै
जो त्रिदोष येबढ़हिंसमाना ॥ तो नर पहुँचे यमके धामा
रहि रहिधुनि हलकेही हालै ॥ नाड़ीप्राण नाशनीचालै

दोहा.

रहि रहि नाड़ी जो चलै, जो वह प्राण हराय ॥
पुनः क्षीण शीतल चलै, सो यम घर लै जाय ॥

चौपाई ॥

समझ इलाज करै जो कोई।ताको अपयश कबहुँनहोई
भगवान दास है बहुतनदाना।सज्जनपुरुषसुनहु सुजाना
कठिन पारसी भाषाकीन । रोगचिकित्सा और निदान
तनिकलोभ ना कीजे भाई । दयाधर्म करिदेहु दवाई ॥

इति श्री मुन्शी भगवान प्रसादका शिष्य
भगत भगवानदास विरचित वैद्यक रसराज
महोदधि भाषाग्रंथसमाप्तः ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास.
" श्रीवेंकटेश्वर " छापाखाना–मुंबई.